(1100/AK/RPS)

(Q. 341 & 356)

SHRI P. RAVEENDRANATH KUMAR (THENI): Hon. Speaker, Sir, I thank you for the opportunity.

A goods train service was started between Madurai to Bodinayakkanur in 1924 for transportation of various spices from Madurai to Rameshwaram and from there to various parts of the world. This line was later converted into a passenger train service. This historic train service played an important role during the pre-Independence movement. I am happy to quote that the Father of the Nation, Mahatma Gandhi, travelled along with other freedom fighters on this train.

The Government had decided to convert this line from meter gauge to broad gauge at an estimated cost of Rs. 304 crore. Its route crosses six Talukas having a minimum of 25 educational institutions, and it is also adjacent to the proposed AIIMS Hospital for which foundation stone was laid recently by our hon. Prime Minister. Nearly, 10,000 people will be benefitted during a single trip per day with the completion of this gauge conversion project.

Hence, I would like to ask this, through you, from the hon. Minister. What steps have been taken to expedite the early completion of this project?

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, the hon. Member has mentioned that the Father of the Nation, Mahatma Gandhi, had also travelled on this route for the purpose of achieving freedom.

70 ईयर्स के अंदर भी यह काम नहीं हो पाया है। Nearly, 70 km. length of gauge conversion work has already taken place, and 127 km. is left now. This work is under progress, and that also will be completed as early as possible. Thereafter, the hon. Member can see that it will be useful for the people of Tamil Nadu also.

माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी जिस तरीके से जवाब देते हैं, अगर उसी तरीके से शॉर्ट में जवाब मिल जाए तो हम ज्यादा प्रश्न ले सकते हैं।

SHRI P. RAVEENDRANATH KUMAR (THENI): Sir, I thank the hon. Minister for considering allocation of Rs. 100 crore during the current financial year.

I would like to request the hon. Minister to inform the House about this issue. Will the Government come forward to fix a timeframe for the completion of this long-pending project and commencement of rail service on this line as is being expected by the people of my Constituency?

I would also like to show pictures of Mahatma Gandhi. This is a picture of him. …(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: No pictures please.

… (*Interruptions*)

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI : Sir, the hon. Member has become emotional because of Mahatma Gandhi. After that, many *… (Not recorded)* have come, but they have not done anything. But today, …(*Interruptions*)

SHRI GAURAV GOGOI (KALIABOR): Sir, this is unnecessary. …(*Interruptions*) What is this? …(*Interruptions*)

SHRI MANISH TEWARI (ANANDPUR SAHIB): Sir, this should be expunged from the records. …(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: निकाल देंगे। माननीय सदस्य, प्लीज बैठ जाइए। मैंने कर दिया है।

…(व्यवधान)

SHRI GAURAV GOGOI (KALIABOR): Sir, he should at least respect this House. …(*Interruptions*)

SHRI A. RAJA (NILGIRIS): Sir, it should be expunged. …(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष: मैंने व्यवस्था दे दी है। आप बैठ जाइए।

…(व्यवधान)

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI : Sir, the outlay for this year is Rs. 100 crore. The work on the project has already been taken up for the entire line. …(*Interruptions*) This work will be completed as early as possible. The people of Tamil Nadu can enjoy in the coming days. …(*Interruptions*) The progress of the work will be examined, and it will be completed as early as possible.

(1105/RK/RAJ)

SHRI DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL): Thank you, Sir, for allowing me to ask a question. The hon. Prime Minister has announced Swachh Bharat Mission, clean India mission, under which open defecation Is not allowed and toilets are being constructed throughout the country. I would like to request you……(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, जो प्रश्न है, वह स्वच्छता का नहीं है।

SHRI DAYANIDHI MARAN (CHENNAI CENTRAL):*… (Not recorded)* I would like to ask a question. At the Central Chennai railway station, toilet facilities are pathetic or are closed and there is no toilet facility for the passengers at the suburban railway stations, right from Chengalpet to Chennai; Chennai, Chengalpet, Tambaram, and Pallavaram railway stations. When the Prime

Minister is talking about constructing toilets throughout the country, there is no toilet at the Central Chennai railway station. What is the Minister going to do about it? Have you done anything about it so far?

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी, शौचालय साफ करवा दीजिएगा।

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: I appreciate Shri Dayanidhi Maran's concern. In the last 60 years, till the time Shri Narendra Modi assumed the office of Prime Minister, महात्मा गांधी जी को छोड़ कर, स्वच्छता के बारे में क्या किसी ने भी सोचा था? महात्मा गांधी जी के बाद, इस देश में नरेन्द्र मोदी जी ने झाड़ू पकड़ा है, उसके बाद आपने झाड़ू पकड़ा है। इससे आज पूरा पार्लियामेंट भी स्वच्छ हो रहा है।…(व्यवधान) Please hear me.…(*Interruptions*) For all these years, cleanliness in the Indian Railways was a major issue. Shri Narendra Modi has to come to power for making our country clean. He has started an *andolan*, not only to construct toilets but also to clean the whole of India.

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी, कृपया बढ़िया नया बाथरूम बना दीजिएगा, टॉयलेट्स बना दीजिएगा। अब आगे बढ़िए।

श्री सुरेश चन्नबासप्पा अंगड़ी : हम बहुत अच्छा बनाएंगे।

SHRI RAJMOHAN UNNITHAN (KASARAGOD): Sir, in Kasaragod district the Kanjangad-Panathur-Kaniyur railway line was approved in the Budget of 2007 and a survey thereof was completed in 2015. I would like to know the status of the Kanjangad-Panathur-Kaniyur Hill Railway Line along with its estimated cost and actual completion target. I would like to know the steps taken by the Government in this regard.

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: At present, I do not have the details. Gauge conversion is taking place throughout the country. The question pertains to the further development of a specific project. I will submit the detailed information that the hon. Member requires.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, क्या कोई सप्लिमेंट्री प्रश्न है?

SHRI RAJMOHAN UNNITHAN (KASARAGOD): Sir, I have not got a clear answer from the Minister. I would like to know the actual position of Kanjangad-Panathur-Kaniyur railway line.

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: I do not have the details with me. I can get him whatever details he wants, subsequently.

(ends)

(Q.342)

SHRI K. MURALEEDHARAN (VADAKARA): Sir, in my State Kerala, doubling work from Kayamkulam to Ernakulam.

माननीय अध्यक्ष : आप केरल से संबंधित प्रश्न पूछ रहे हैं लेकिन यह प्रश्न पंजाब बठिंडा से संबंधित है।

(1110/PS/IND)

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : यदि पंजाब से संबंधित प्रश्न है, तो मैं माननीय सदस्य को इजाजत देता हूं।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप इस प्रश्न में केरल के संबंध में नहीं पूछ सकते हैं।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य पंजाब का प्रश्न पूछ रहे हैं, आप केरल का प्रश्न पूछना चाहते हैं। माननीय मंत्री जी जवाब देंगे, मैं देख कर बताऊंगा।

जसबीर सिंह जी, आप पंजाब के संबंध में प्रश्न पूछिए।

…(व्यवधान)

श्री जसबीर सिंह (डिम्पा) गिल (खडूर साहिब): अध्यक्ष जी, वर्ष 2014 में पट्टी-फिरोजपुर रेल लिंक बनाने का प्रोविजन किया गया था, जिसमें राज्य सरकार ने जमीन एक्वायर करके देनी थी। हमारी पंजाब सरकार ने 40 करोड़ रुपये जमीन एक्वायर करने के लिए बजट में रखे हैं। क्या माननीय मंत्री जी बताएंगे कि ये जो पट्टी-फिरोजपुर रेल लिंक है, इसे कब तक कम्प्लीट कर दिया जाएगा?

श्री सुरेश चन्नबासप्पा अंगड़ी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य डबलिंग के बारे में पूछ रहे हैं। It depends on the operational viability. यदि ऐसा है, तो हम जरूर करेंगे। Since it is a joint venture project, the Punjab Government has to give land. Then we can proceed further. दो साल बाद भी लैंड का पोजेशन नहीं मिला है। लैंड का पोजेशन लेने के बाद स्टडी करके दूसरे काम भी करवाएंगे।

माननीय अध्यक्ष : श्री मोहम्मद सादिक, आप प्रश्न पूछिए। आप अब तो सीट पर बैठ जाएं।

श्री मोहम्मद सादिक (फरीदकोट): महोदय, मैं देर से आने के लिए माफी चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष : ऐसे पहले स्पीकर होंगे, जिन्होंने इस तरह से प्रश्न पूछना एलाऊ किया होगा।

श्री मोहम्मद सादिक (फरीदकोट): आपकी बहुत-बहुत मेहरबानी और धन्यवाद।

महोदय, मैं आपके माध्यम से रेलवे मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि बठिंडा से फिरोजपुर छावनी तक, जिसका कुल फासला 87 किलोमीटर का है, क्या इस तरफ डबल ट्रैक बनाने की सरकार की कोई योजना है?

श्री सुरेश चन्नबासप्पा अंगड़ी : अध्यक्ष महोदय, अभी डबल ट्रैक बनाने की कोई योजना नहीं है।

The present line is working on 65 per cent. The doubling of tracks depends on the commercial viability and demand from different areas. As of now, it is working on 65 per cent on single line. अभी सरकार के सामने इसकी कोई योजना नहीं है।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, क्या आप सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछना चाहते हैं?

श्री मोहम्मद सादिक (फरीदकोट): जी हाँ, महोदय। मेरा प्रश्न है कि माननीय मंत्री जी बताएं कि यह काम कब शुरू होगा और कब तक पूरा होगा? यदि ऐसी कोई योजना है, तो मैं मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि इस डबल ट्रैक का संबंध सीधे तौर से देश की सुरक्षा के साथ जुड़ा हुआ है। यह डबल ट्रैक पाकिस्तान के बार्डर तक जाता है, वहीं यह देश के महान शहीद सरदार भगत सिंह जी, राजगुरु जी और सुखदेव जी की समाधियों तक भी जाता है। यहां हजारों लोग नतमस्तक होने के लिए आते हैं। मैं मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि यदि यह ट्रैक बन जाता है, तो यह देश की सुरक्षा के लिए भी बहुत लाभदायक होगा और इससे व्यापार पर भी बहुत अच्छा असर पड़ेगा।

महोदय, मेरा दूसरा सवाल यह है।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप पहली बार चुनकर आए हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि सवाल पूछने के लिए सबसे पहले प्रश्न संख्या बोलते हैं। उसके बाद मंत्री जी उस प्रश्न के उत्तर को सभा पटल पर रखते हैं। उसके बाद आप पहला सवाल पूछते हैं और उसके बाद एक सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछते हैं। यदि आप पहले प्रश्न में ही तीन प्रश्न पूछ लें, तो कोई बात नहीं, लेकिन सप्लीमेंटरी प्रश्न सहित केवल दो प्रश्न ही पूछ सकते हैं। ऐसा नियम बना हुआ है।

श्री सुरेश चन्नबासप्पा अंगड़ी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य पहली बार चुनकर आए हैं और मैं उनकी भावना समझ सकता हूं। मैं अर्जुन राम मेघवाल जी, संसदीय कार्य मंत्री के साथ अनूपगढ़ गया था। बठिंडा मैंने देखा है और वर्ष 1927 से कोई भी मंत्री वहां नहीं गया है। मैं परसों गया था और रेल लाइन भी चालू करके आया हूं। मैं माननीय सदस्य का अभिनंदन करता हूं। He is concerned about our Army and Border Security Force. But the double line is not required. Viability is not there. डबल लाइन के बारे में वे पूछ रहे हैं। यदि इंडस्ट्री और दूसरी चीजों के लिए इकोनोमिकली वायबल होगा, तो हम कंसिडर करेंगे।

(इति)

(1115/RC/VB)

(Q.343)

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Sir, it is a comprehensive reply. The zones are further divided into Divisions. To give you an example of my own constituency, Daund is a big block of my constituency which happens to be in our district. Its DRM is of Sholapur District. This is not just my issue but pan India we see divisions like this. Could they be connected to only Collector's jurisdiction? If it is done, its management would become easier. If there are issues related to the Pune district, we have to go to DRM, Sholapur. Then, in that Division, he does not have jurisdiction if he has to ask the Collector. So, it becomes a huge problem. For every little thing, we have to come all the way to Chairman, Railway Board. Could we simplify it? If it is done, the Collector and the Divisional zone could work as a team. Could that be a possibility to make everybody's life simpler?

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, the question of Shrimati Sule is very appropriate, but at present there is no such proposal.

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): This is just about jurisdiction. जो मेरा पुणे डिस्ट्रिक्ट है, उसी को पावर दे दे।

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: I understand your feeling. We were also facing the same problem since long and many times we have also fought for it. At present, there is no such proposal before us. But we appreciate your feelings and we would examine it and in the coming days we would tell you about it.

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Sir, the hon. Cabinet Minister is here. If he could kindly look into this, it will be of help not only to me but also it would simplify everybody's life. I would request him to do it.

रेल मंत्री तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्री (श्री पीयूष गोयल): माननीय अध्यक्ष महोदय, कई माननीय सदस्यों की ओर से यह माँग बार-बार होती है कि किसी एरिया को इस डिविज़न से शिफ्ट किया जाए, थोड़ा ज़ोनल एडजस्टमेंट किया जाए आदि। इससे संबंधित एक निर्धारित प्रक्रिया है। इसके लिए एक कमेटी बैठती है। लेकिन हम लोगों को लगता है कि यह एक छोटी-सी बात है, केवल यहाँ से वहाँ शिफ्ट करने की बात है। रेलवे में कई तकनीकी बातों को देखकर, जैसे कहाँ कंट्रोल रूम है, कहाँ चेंजओवर होगा आदि बातों को देखते हुए, उनको कमेटी के सामने रखकर उचित निर्णय लिया जाएगा।

माननीय अध्यक्ष: डॉ. अमोल कोले।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: क्या आपने सप्लीमेंट्री क्वेश्चन नहीं पूछा था? आपने बीच में खड़े होकर सप्लीमेंट्री क्वेश्चन पूछ लिया था।

श्रीमती सुप्रिया सदानंद सुले (बारामती): नहीं सर, उसका जवाब ही नहीं आया था। कुछ गलतफ़हमी हो रही थी।

माननीय अध्यक्ष: ठीक है, आप पूछिए।

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Suppose there is a service road. If there is a small land issue related to the Railways, it has to come to the Chairman, Railway Board. If there is an issue related to a garden or a school or any public utility, is it possible for you to empower the zonal offices to decide? Even if there is an issue of small 200 metre road, it has to come all the way to the Chairman, Railway Board, which is very time consuming. Can we find some methodology to simplify it and to strengthen the zonal offices?

श्री सुरेश चन्नबासप्पा अंगड़ी: इसके बारे में स्टडी करके जवाब देंगे। But land is a State subject. You know it very well …(*Interruptions*).

माननीय अध्यक्ष: माननीय मंत्री जी, एक मिनट रुकें। मेरा आग्रह है कि या तो कैबिनेट मंत्री या राज्य मंत्री जवाब दें।

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, land is a State subject …(*Interruptions*).

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आप लोगों को जवाब चाहिए। माननीय सदस्य का यह प्रश्न है। आप बीच में खड़े होकर सवाल-जवाब मत पूछें।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: मैं आपसे कह रहा हूँ। आप से नहीं कह रहा, आप न पूछें।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: अगर आपको सप्लीमेंट्री पूछना है, तो आप लिखकर दें, मैं अलाऊ करूँगा।

…(व्यवधान)

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, it may be any land like Army land or Railway land. The land subject is with the State Government. Please understand that the records of rights and other things are with them and the DC or the local Collector has to look into that. If you have any grievance, you can take it up with the local Collector. …(*Interruptions*)

(1120/SRG/PC)

HON. SPEAKER: Dr. Amol Ramsing Kolhe.

…(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, मैंने दो बार आपका नाम बोला था।

…(व्यवधान)

DR. AMOL RAMSING KOLHE (SHIRUR): My supplementary to question No. 343. My Parliamentary constituency Shirur comes under Pune Division of Central Railways. I would like to know whether Central Railways has sent a proposal for development of Hadapsar railway station into a terminal. As far as the Hadapsar project was concerned, a sum of Rs. 20 crore was needed which must have been increased by now. The railway division had floated tenders for work on the signalling system and in hope that money will arrive soon. Firstly, I would like to know from the Railway Minister how much time it will take to develop Hadapsar railway station by releasing the funds because the delay in project is raising the cost day by day and how much preference the Ministry is giving to the recommendation of Railway Zones in implementing it.

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: This question does not pertain to the main question. I will get the information and then I will send it to the hon. Member.

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा) : अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। इस सेशन में मुझे पहली बार सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछने का मौका मिला है, इसके लिए आपका धन्यवाद। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप सब माननीय सदस्य से पूछिए कि वे 15 दिनों में कितनी बार सदन में बोल लिए हैं।

…(व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको उसके लिए धन्यवाद देता हूं।

महोदय, जितने भी राज्य अलग हुए उन राज्यों के प्रश्न के बारे में मंत्री जी ने अभी खुद कहा है कि आंध्र प्रदेश के लिए वे एक ज़ोन दे रहे हैं। रेलवे के तीन ज़ोन्स - ईस्टर्न रेलवे, ईस्ट सेंट्रल रेलवे और साउथ ईस्टर्न रेलवे, इन तीनों ज़ोन्स में जो पैसा आता है, वह मैक्सिमम मेरे राज्य झारखंड से आता है। हमारे यहां तीन डिविज़न्स हैं - रांची, धनबाद और चक्रधरपुर। ये सबसे ज़्यादा पैसा देते हैं। हमारे एमपीज़ और मुख्य मंत्री लगातार डिमांड कर रहे हैं, चूंकि हम सबसे ज़्यादा पैसा देते हैं, इसलिए आप हमें ज़ोन कार्यालय दीजिए।

अध्यक्ष महोदय, आपको आश्चर्य होगा कि मैं जिस संसदीय क्षेत्र गोड्डा का सांसद हूं, वहां आसनसोल, माल्दा और दानापुर, इन तीन डिवीज़न्स में काम होता है। आप यह समझिए कि एक

लोक सभा का एक सांसद तीन डिवीज़न्स को कैसे अटेंड करेगा, तीन डीआरएम्स को कैसे अटेंड करेगा, तीन जीएम्स को कैसे अटेंड करेगा?

अत: मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि झारखंड को विशेष रियायत देते हुए एक ज़ोनल कार्यालय और हमारे जैसे सांसदों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए हमारे यहां एक डिवीज़नल कार्यालय देने की कृपा की जाए।

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Regarding zones and what Nishikant Dubey Ji has asked, there are many applications before the Board. The Board takes appropriate action after studying the requisites of the concerned Members. Many applications are pending. हम इस विषय की स्टडी कर के माननीय मेंबर को बताएंगे।

SHRI KODIKUNNIL SURESH (MAVELIKKARA): Regarding creation of a new Railway zone, the State of Kerala has a long pending demand to create a new zone for Kerala. At present, we have two divisions – Thiruvananthapuram and Palakkad. So, the Southern Railways is neglecting the State of Kerala totally concerning various developments. I would like to request the hon. Minister to consider the creation of a new Railway Zone in Kerala

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, the hon. Member, Shri Suresh Ji comes from my neighbouring State. Yesterday, some Mangalore people also came to me. They are with Southern Railways there. But they were saying that most of the Kerala people have had the facility of the Railways all these days. But still he is saying that they are not getting the benefits. …(*Interruptions*). So, I appreciate your concern. हम इसके बारे में स्टडी कर के, आपको जो चाहिए है, उसके बारे में बाद में आपको बताएंगे।

SHRI KANUMURU RAGHURAMA KRISHNARAJU (NARSAPURAM): After 10 years of fight for Vizag to get a separate railway zone, the Government of India is kind enough to give a zone by the name of Southern Coast Railway. But subsequently what has happened is that the division headquarters, which was there at Vizag, has been shifted to Vijayawada and we got something from one hand and we lost everything on the other hand. The sentiment of the people of Andhra is badly hurt. So, there has been again a re-agitation to give the division back because there were smaller divisions than Vishakhapatnam at Guntur etc. There has been a request to consider the Railway Division at Vizag. I want to request the hon. Minister, through you, to kindly consider the

request and I want to know whether any proposal is pending with them or not. If it is pending, kindly consider it.

(1125/SAN/SPS)

THE MINISTER OF RAILWAYS AND MINISTER OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRI PIYUSH GOYAL): Mr. Speaker, Sir, I think, this issue has been agitated by the concerned Member, his political party and the leaders of Andhra Pradesh for several years. I think, Prime Minister, Shri Narendra Modi, has accepted the sentiment of the people of Andhra Pradesh and the region and we have been able to announce the creation of a zone which is underway. Now, where the divisional headquarter will be, what the operational parameters will be, I think, are the issues best left to the technical people. If at all any political party is trying to fan trouble after the creation of the zone and now going into the nitty-gritty of whether the divisional office is in one place or the other, I think, it is extremely unfair, unfortunate and against national interest.

All Members should accept that already there is a Zone over there. Having a Division Office also there, is not going to make any difference. Once you have a zonal headquarters, if the Division Office goes to another region, I think, it is only very good and the people of Andhra Pradesh should be happy that two places will have an office, rather than hoping that everything comes into one area only.

I would suggest that we move forward and look for the welfare of the people of Andhra Pradesh. Already the people of Andhra Pradesh have given a verdict to the people who had created so much uncertainty and so much disinformation about all the good work that the Government has done in Andhra Pradesh. I think, it is time to move on now.

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने काफी विस्तार से जवाब दिया है। मैं आपके माध्यम से यह जानना चाहता हूं कि जो 17 रेलवे जोन्स हैं, उनमें मंत्री जी ने कहा है कि विभिन्न रेलवे जोन्स का मूल्यांकन करने की कोई पद्धति नहीं है। जोन की ही अपने आप में फ्रेट, पैसेंजर्स, अर्निंग आदि सारे काम की अकाउण्टेबिलिटी है। जब हर चार महीने में मैम्बर्स ऑफ पार्लियामेंट की बैठक होती है तो जो मैम्बर्स ऑफ पार्लियामेंट अपने क्षेत्र की समस्याओं या विकास सम्बन्धी इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए पत्र देते हैं या वहां पर सवाल उठाते हैं तो उसका जवाब नहीं आता है। यह जो बैठक है, वह समय से होनी चाहिए, जबकि वह बैठक समय से नहीं होती है। क्या इतनी अकाउण्टेबिलिटी रेलवे बोर्ड या रेलवे मंत्रालय लेगा कि जो अपने क्षेत्र के चुने हुए मैम्बर्स ऑफ पार्लियामेंट उस कमेटी के सदस्य हैं तथा जी.एम. के लेवल पर जो बैठक

होती है, उसमें जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके? फाइनेंशियल ईयर के प्रारम्भ में सेक्रेटेरियेट, बोर्ड या जोन्स में एम.ओ.यू. साइन होता है। क्यों न रेलवे बोर्ड या मंत्रालय इसके लिए जवाबदेह हो और प्रॉफिट, एफिशियेंसी, दक्षता का एक सर्टेन पैरामीटर हो?

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, I can reply to the hon. Member, through you. He is one of the seniormost Members.

There are 17 zones in the country and they are accountable on behalf of the Railway Department. There is an MoU between the Railway Board and the General Managers and all these General Managers are responsible for their accountability. Their performance, their efficiency, their targets, everything is fixed in the Zone and they are working accordingly. I appreciate all the Zones in the country which are doing very well after Shri Narendra Modi assumed office. You know very well that we have shown more than 250 per cent efficiency in the country and we see that all the railway stations are neat and clean today.

Regarding what the hon. Member said, whenever the hon. Members go to meet the GMs, they make arrangements for the meeting and address any grievances. I myself have also met the GMs. It is highly appreciable that they are concerned about the hon. Members. They call them and give them all the details. They are working for the country only and hon. Members should also cooperate with them and get the work done, and apprise the GMs of their grievances.

(ends)

(Q. 344)

DR. SUJAY VIKHE PATIL (AHMEDNAGAR): Sir, the demand of coal is higher than the current supply in the country. During the year 2018-19, against the total demand of 969 metric tonnes, approximately 734 metric tonnes was met from the domestic part and import of coal was about 235 metric tonnes. Though the raw coal production in India has increased from 190 metric tonnes in 2016-17 to 235 metric tonnes in 2018-19, the reason for this is blending of low-grade coal with higher variety coal by power plants.

(1130/KDS/SPR)

My question to the hon. Minister, through you, Mr. Speaker, Sir, would be as to what steps have been taken by the Government to work towards enhancing the quality of coal produced and supply of coal to the power plants which are a major factor for increase in the import of coal.

SHRI PRALHAD JOSHI: Hon. Member himself has stated that coal production is increasing. At the same time, demand is also increasing. Compounded annual growth and total growth of economy are also increasing. There is a short supply due to increase in demand. In spite of that, as he himself has stated, including Coal India and the private sector, production has increased to 178 MT last year. Credit goes to Shri Piyush Goyal *ji,* who has put in a lot of efforts.

As far as his question on imports is concerned, I do not want to reply in detail because the question does not relate to that. But there is a certain type of coal which is not available in India. For example, coking coal. There are certain power plants where they need only imported coal. They are not dependant on coal which is available in India. That is why, we import.

As far as improvement of production is concerned, we have undertaken many initiatives including improving the technology. Very shortly, we are going to auction more than 41 new blocks. All such steps are being taken.

Before I come to the next question, I would like to state here that the Ministry of Coal, Government of India, only allocates. It is not the only Ministry which handles it; State Governments are involved; Ministry of Environment & Forests is involved, due to which some delay does take place. The Government of India is working on it by taking up the issues with the State

Governments to expedite it, so that we can improve our production capacity and thus our domestic demand can be met.

DR. SUJAY VIKHE PATIL (AHMEDNAGAR): Transportation of coal is a significant issue as it involves environmental concerns. Coal mines are usually located in far off areas. Innovative steps such as use of conveyor belts or overhead ropeways for transporting coal would eliminate diesel consumption, pollution and cost of transportation. Is the Government thinking of taking any steps in this direction in order to facilitate easier transportation by other modes?

SHRI PRALHAD JOSHI: As far as road transport is concerned, wherever it is inevitable, we are using road transport. Otherwise, maximum transportation of coal is done by the Railways. As far as using conveyor belts and other means of transportation are concerned, we are working out a plan. It is in the pipeline. Very shortly, we would be using conveyor belts for transportation purposes.

Work on 14 Dedicated Corridors of Coal is going on. There is an Inter-Ministerial Committee to look after the progress of these Corridors. Very regularly the Committee is meeting. In 2018-19, more than 50 per cent of the total coal transportation was carried by the Railways.

माननीय अध्यक्ष: श्री उन्मेश पाटिल जी।

श्री उन्मेश भैय्यासाहेब पाटिल (जलगाँव): माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा मंत्री महोदय से एक स्पेसिफिक सवाल है कि अपने जो गवर्नमेंट अन्डरटेकिंग कोल बेस्ड पॉवर प्लांट और प्राइवेट कोल बेस्ड थर्मल प्लांट हैं, उनकी कैपेसिटी को ध्यान में रखते हुए हमारे देश में जो कोयले का उत्पादन हो रहा है, is that sufficient to run the plants for a period of 20-25 years? If not, is the Government thinking of having an energy security policy?

(1135/UB/MM)

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, as far as production of coal and the demand of coal is concerned, as on date, there is a shortage of around 290 million tonnes, that is well agreed to. Out of that, we cannot substitute 140 million tonnes. Regarding the remaining requirement, wherever a coal block is allocated, if single window scheme is implemented, like in other industries, and land issues are resolved, I think we can go ahead with our production. We are planning in a big way. Except the coal, for which there is no substitute to import, we are planning for the rest of the coal in such a way that, by 2025, in the first phase and by 2030, in the second phase, we want to be self-dependent.

SHRI MAHESH SAHOO (DHENKANAL): Sir, question no.s 350 and 351 are in the same category. They are similar questions. Still, I am putting a question through you to the hon. Minister.

As far as transportation of coal is concerned, there is a specific direction by the Pollution Control Boards that when the transportation is done at a distance of 350 km away from the production stage, that should be covered and washed through washery plant. I want to know from the hon. Minister whether that direction is being complied with or whether it is violated.

SHRI PRALHAD JOSHI: Whatever the direction has been given by the various environment boards of the States, that is being duly followed, and as far as conveyer belt and other systems are concerned which involve technology, we are putting our efforts. Wherever the State Pollution Control Board gives some direction, if it is violated, you can bring it to my notice. But as far as I know, as of date, there are no such specific complaints.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं कि सप्लीमेंटरी में कई माननीय सदस्यों को पांच-पांच बार सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछने के चांस मिल चुके हैं। कई मैम्बर्स हैं, 465 मैम्बर्स हैं, जिनको सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछने का चांस नहीं मिला है।

प्रो. सौगत राय (दमदम): अध्यक्ष जी, आप भी अकाउंट रखते हैं, पूरा अकाउंट रखते हैं।

माननीय अध्यक्ष : जी हां। संसद अकाउंट के हिसाब से चलेगी।

कई वरिष्ठ सदस्य हैं जो सदन में अपने-अपने दल के नेता हैं। मैं उनसे आग्रह करूंगा कि आपका यह प्रयास होना चाहिए कि आपके दल के नये सांसदों को सप्लीमेंटरी प्रश्न पूछने का चांस मिलना चाहिए। अगर आपकी इच्छा है कि नहीं, तो सुदीप दादा बोलें।

श्री सुदीप बन्दोपाध्याय (कोलकाता उत्तर): सर, कोल इंडिया कोलकाता शहर में है। Sir, in the Kolkata city, we are directly involved with the Coal India. There is one coal block, Deocha Pachami Harinsingha Dewanganj (DPHD) which is the largest coal mine in India and the second largest in the world. It is situated in the Birbhum District of West Bengal. It has estimated reserves of 2,102 million tonnes of coal. So, the Government of West Bengal applied for this coal mine and in 2018, इस सरकार ने पश्चिम बंगाल सरकार को एलोकेशन दिया था, लेकिन फोर्मली एलोटमेंट नहीं दिया है।

My question is, when you have already issued the Letter of Allocation to handover this coal mine to the Government of West Bengal, why is the Government not issuing a formal allotment to the Government of West Bengal?

Why is the Government depriving the State of West Bengal and every State again and again?

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, once coal block is allocated, there will be so many formalities as the senior member knows that, but I can assure Sudip da, through hon. Speaker, that very shortly, we are going to sign an agreement. I am saying, "very shortly".

श्री बालूभाऊ उर्फ सुरेश नारायण धानोरकर (चन्द्रपुर): अध्यक्ष महोदय, कोल घोटाले में कर्नाटक एमटा और वैस्ट बंगाल एमटा माइंस बंद हो गई हैं। सर, आदरणीय मंत्री महोदय कर्नाटक से आते हैं और मैं चाहता हूं कि वे एक पॉज़िटिव आंसर दें। मेरे निर्वाचन क्षेत्र से आपका नाता जुड़ा है। मैं चन्द्रपुर निर्वाचन क्षेत्र से हूं। वहां कर्नाटक एमटा साढ़े चार साल से बंद है, जबकि between West Bengal Mineral Development & Trading Corporation Ltd. and EMTA, there is a joint venture for opening mines in West Bengal. They have appointed MDO (Mine Operator); till the new MDO is appointed who would be selected through a transparent bidding process. It regularly pays salary to the workers and does CSR activities also.

(1140/MM/KMR)

यह सब महाराष्ट्र में नहीं हो रहा है। क्या आप महाराष्ट्र सरकार को आदेश देंगे कि जिन वर्कर्स को साढ़े चार सालों से पेमेंट नहीं दी जा रही है, उनको पेमेंट दी जानी चाहिए और सीएसआर एक्टिविटी होनी चाहिए। इसके अलावा मैं आपसे प्रश्न पूछना चाहता हूं कि क्या ये माइंस चालू होंगी?

SHRI PRALHAD JOSHI: I did not get exactly which company's CSR activity the hon. Member is referring to. …(*Interruptions*) As regards the blocks allocated and the mine operator issue, I know the situation about Karnataka and about West Bengal I will ascertain the full details and come back. The matter has gone to the court because the appointment of MDO was not transparent. As the process was not transparent, the matter has gone to the court. On the request of Karnataka Government, we have already impleaded in the case. As far as West Bengal is concerned, …(*Interruptions*)

PROF. SOUGATA RAY (DUM DUM): This is in Chandrapur, Maharashtra and not in West Bengal.

SHRI PRALHAD JOSHI: My only request is that you please listen to the reply. The matter is pending in the court. The matter has gone to the court. The issue is about transparency in the appointment of MDO. That issue is pending in the Supreme Court. It is *sub judice.* That is why, at this moment I can only say that

I will get the details and come back to you. Karnataka Government initially was having a different view but now it has a changed view and asked the Government of India to implead in the case. We have impleaded and we are supporting the Government of Karnataka in their favour.

श्री सौमित्र खान (बिशनुपुर): सर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

सर, वैस्ट बंगाल में बंगाल एमटा और वेस्ट बंगाल मिनरल्स लिमिटेड की बात की जा रही है, वह मेरे एरिया बारजोरा में है। इसके साथ-साथ बांकुरा जिले में कालिदासपुर कोलियारी, रानीगंज और आसनसोल में बहुत सारी कोलियारी हैं। बीरभूम के चापड़ा की भी बात की जा रही है। मैं यह जानना चाहता हूं कि वहां बहुत सारी इल्लिगल कोल माइंस हैं। अभी तक वैस्ट बंगाल में हर रोज, मैं गारण्टी के साथ कह रहा हूं कि प्रतिदिन एक हजार ट्रक कोयला चोरी होता है। इसको रोकने के लिए क्या आप कोई उपाय करेंगे? वैस्ट बंगाल में सीआईएसएफ को भेजकर इसको रोका जाना चाहिए क्योंकि यह भारत की सम्पत्ति है। इसमें वैस्ट बंगाल का एक सांसद भी शामिल है, मैं उसका नाम लेना नहीं चाहता हूं। उसके कोल माइंस चल रहे हैं। यह सब बंद होना चाहिए। हर दिन एक हजार ट्रक प्रतिदिन चोरी होता है। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य ने किसी का नाम नहीं लिया है। आप क्यों खड़े हो गए हैं?

…(व्यवधान)

SHRI PRALHAD JOSHI: The hon. Member has not taken any name, do not worry. …(*Interruptions*)

माननीय अध्यक्ष : आप इल्लिगल माइनिंग को क्यों सपोर्ट कर रहे हैं? माननीय सदस्य ने किसी का नाम नहीं लिया है। मंत्री जी जवाब दे रहे हैं।

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, as far as illegal mining is concerned, the State Government has to take action. Once a block is allocated either through auction or through direct allotment to the PSU, it comes to the Government of India for legal mining. Till then it is the State Government which has to look into it. There are some complaints in the Ministry about the State. If the hon. Member gives specific information about things that are happening in West Bengal, we will send a note to the West Bengal Government.

(ends)

(1145/SJN/SNT)

(प्रश्न 345)

श्री एस. मुनिस्वामी (कोलार) : माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपकी तरफ से हमारे रेल मिनिस्टर जी से एक सवाल पूछना चाहता हूं। इस नए बजट में हमारे कर्नाटक में नई रेलवे लाइन को किससे जोड़ा है और क्या उससे कोलार में नई रेलवे लाइन को जोड़ा है? क्या उसमें आरओबी/आरयूबी को दिया है? अगर नहीं दिया है, तो यूपीए की सरकार ने वर्ष 2011-12 में व्हाईटफील्ड-कोलार कडपा, बेंगलुरू की पूजा करके छोड़ दिया था। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आप उसको फिर से शुरू करना चाहते हैं?

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, the hon. Member comes from the State of Karnataka. The 53 k.m. Whitefield-Kolar railway line project was sanctioned in 2011-12 in which the State Government of Karnataka was to bear the full cost of land plus 50 per cent cost of the railway construction. Land acquisition has not been done by the State Government. Though we want progress there, villagers are not allowing us to survey the land there. Even policemen are deployed there but villagers are not allowing us. If the Government of Karnataka provides the land for the 53 k.m. project, it will be taken up by the Railways.

Regarding overbridges, if the hon. Member can give specific information where he is having problems, that can be examined.

श्री एस. मुनिस्वामी (कोलार) : अध्यक्ष जी, राज्य सरकार की नेग्लीजेन्सी के चलते ऐसा हुआ है। अब हम सभी चुनकर आए हैं। हम सभी रेल मिनिस्टर के साथ में रहते हैं। व्हाईटफील्ड-कोलार और बेंगलुरू-कडपा में नई लाइन बनाने के लिए लैंड का क्या इशू है? हम भी साथ में रहकर उस समस्या का समाधान करेंगे। रेल मिनिस्टर साहब एक बार वहां पर जाएं और वहां का स्पॉट इन्सपेक्शन करें और उसको शुरू करने की कृपा करें, मैं यह पूछना चाहता हूं।

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, I will consider the hon. Member's request. I will go there and examine it. I will sit with the Karnataka Government. If there is any problem, it will be solved. We are here for the people of Karnataka. आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी, कर्नाटक के बारे में विशेष सोच रखते हैं। हमारे मेंबर नए-नए चुनकर आए हैं। उनकी फीलिंग्स बहुत है। हम वहां के कामों को जल्दी से जल्दी करने के लिए एग्जामिन करेंगे।

SHRI DEEPAK (DEV) ADHIKARI (GHATAL): Sir, I have a request to the hon. Minister. In my Ghatal constituency, there is a place called Panskura. One of the busiest railway lines is situated in Panskura. I would like to request the hon. Minister to construct a railway overbridge there. We have been requesting

for the overbridge for the past few years. Nothing has been done yet. It is my personal request. There are lakhs of people who cross the railway line and as a result so many accidents happen there. So, our request to you is to take this as an urgent matter and construct a railway overbridge there.

SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI: Sir, I understand the hon. Member's feeling. All the requests for ROBs and RUBs have been taken by this Government. When hon. Narendra Modi ji assumed the office, he has given specific instructions to the Railways regarding this. Late Shri Atal Bihari Vajpayee changed the situation of the roads in the country. Now, hon. Narendra Modi holds a vision that the Railways should be connected with each and every person without any difficulty. If the hon. Member gives details of it to our concerned officers, then that can be examined.

(ends)

(प्रश्न 346)

श्रीमती मीनाक्षी लेखी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष जी, मेरा जो प्रश्न है, वह अवैध खनन से संबंधित है, जिसका मंत्री जी ने जवाब एक प्रश्न के उत्तर में पार्शयली रूप से दिया है। लेकिन उसी से जुड़ा हुआ एक दूसरा सवाल यह है कि अधिकतर जो माइन्स हैं, वे एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स में हैं। लेकिन जो एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स हैं, वे खुद गरीब हैं और अवैध माइनिंग की वजह से उनके ऊपर बहुत निगेटिव इम्पैक्ट पड़ता है। इसलिए, क्या सरकार ऐसा कोई कार्यक्रम कर रही है, जिसकी वजह से हम एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स को ऊपर उठा सकें और साथ ही साथ अवैध माइनिंग को रोकने के लिए राज्य सरकारों के साथ मिलकर कुछ काम कर सकें? मेरा कोलार माइनिंग से रिलेटेड एक और प्रश्न है कि क्या आपका कोलार माइनिंग को फिर से शुरू करने का कुछ इरादा है?

(1150/GG/GM)

श्री प्रहलाद जोशी: सर, मैं हिंदी में रिप्लाई देने की कोशिश करता हूँ। जहां तक माइनिंग का सवाल है, अदर दैन कोल, यह तो स्टेट सब्जेक्ट में आता है। फिर भी मेजर मिनरल के लिए हमने माइनिंग सर्विलेंस सिस्टम लगाया है। जो 500 मीटर के बियॉन्ड होता है, बाहर अगर माइनिंग होती है तो उसका सर्विलेंस कर के ट्रिगर होता है। वह ट्रिगर कर के हम राज्य सरकार को मार्क कर के भेजते हैं। राज्य सरकार को उसके लिए कार्यवाही करनी चाहिए। ज्यादातर राज्य सरकारों ने कार्यवाही की है। जहां तक अवैध खनन की बात है, उसके बारे में मैं यही बोल सकता हूँ कि मेजर मिनरल के लिए तो हमने किया है। अभी तक फर्स्ट फेज में, मेजर मिनरल में 296 ट्रिगर्स आए थे, उसमें 287 वैरिफिकेशन हुए हैं। 47 केसिज़ अभी होने बाकी हैं, 47 केसिज़ में केस लगा हुआ है।

प्रश्न है कि आप जो अवैध खनन एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स के बारे में बता रहे हैं, उसमें तो माइनर मिनरल्स के लिए राज्य सरकार को एक्शन लेना चाहिए। Minerals come under the purview of the State Government. The Central Government has developed the Mining Surveillance System and we are supplying all the details received through this system to the State Governments. Ultimately, the State Governments have to take action. The Department of Mines of the Government of India has requested all the State Governments to bring all minor minerals also under this ambit.

श्रीमती मीनाक्षी लेखी (नई दिल्ली): अध्यक्ष महोदय, कोल्लार माइंस को दोबारा शुरू करने का कुछ इरादा है?

श्री प्रहलाद जोशी : महोदय, कोल्लार माइंस वैसे तो बहुत दिनों से बंद पड़ी है। आपके सुझाव के बारे में मंत्रालय में चर्चा चल रही है। मैं बाद में आपसे इस संबंध में बातचीत करता हूँ।

(इति)

(प्रश्न 347 और 353)

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): अध्यक्ष महोदय, मैंने माननीय मंत्री जी से जो प्रश्न पूछा था, अपने देश के छोटे व्यापारियों के लिए, जो फुटकर विक्रेता हैं, जो खुदरा बाजार या रिटेल के बारे में है, उस पर सरकार क्या कुछ नीति बनाना चाहती है? उत्तर मिला है कि उस पर राष्ट्रीय खुदरा व्यापार नीति बनाना चाहते हैं। इस पर सरकार शीघ्रता में उसको लाएगी। मैं प्रश्न यह पूछना चाहता हूँ कि छोटे व्यापारियों के लिए हमारी सरकार, हमारे प्रधान मंत्री जी बहुत चिंतित हैं। अभी वे व्यापार कर रहे हैं, तब भी और जब 60 वर्ष की आयु के बाद जब उनसे श्रम नहीं हो पाएगा, वे व्यापार नहीं कर पाएंगे तो उनके लिए भी हमारी सरकार एक योजना ले कर आई है कि 55 से ले कर 300 रुपये प्रति माह यदि जमा करेंगे तो तीन हजार प्रति माह उनको बाद में पेंशन मिलेगी।

मैं यह जानना चाहता हूँ कि रिटेल और मल्टी ब्रांड पर सन् 2012 में यूपीए की सरकार ने 100 प्रतिशत एफडीआई घोषित किया था। सिंगल ब्रांड पर और मल्टी ब्रांड पर किया था। हमारी सरकार ने मल्टी ब्रांड पर उसको रोक लगा दी। अब मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि क्या सरकार इस पर कोई ऐसी ठोस नीति बनाने जा रही है? माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करें कि यह बिल्कुल निश्चित हो जाए कि मल्टी ब्रांड पर कोई भी विदेशी निवेश न आ पाए।

श्री पीयूष गोयल: महोदय, मेरे ख्याल से आज के दिन जो नीति है, उसमें बड़ा ही स्पष्ट रूप से है कि 49 प्रतिशत से ज्यादा एफडीआई अगर किसी कंपनी में है, तो उसके ऊपर मल्टी ब्रांड रीटेल वे नहीं कर सकते हैं। ऐसा आज के दिन लगभग स्पष्टता से यह नीति है। आज के दिन, अभी के समय उसके ऊपर कोई पुनर्विचार करने का सरकार के सामने कोई प्रस्ताव नहीं है।

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूँ कि सैक्टर वाइज जो छोटे खुदरा व्यापारी हैं, जैसे एक सैक्टर है जिसमें हमारे देश में मेक इन इंडिया पर हमारी सरकार बल दे रही है। मेक इन इंडिया के आधार पर हमारे देश में बनने वाली कुछ ऐसी चीजें – जैसे खिलौने बनते हैं, कुछ शो-पीस हैं, दीपावली की सजावट की सामग्री है, यहां तक कि पटाखे हैं, ये सभी चीजें हमारे देश में बनती थीं, आज उस पर मेक इन इंडिया के लिए हमारी सरकार चिंतित है। आज-कल ये सारी चीजें चाइना से यहां पर इंपोर्ट की जा रही हैं। ज्यादातर वहां से आ रही हैं। क्या ऐसी कोई नीति बनाई जाएगी कि हमारे देश के जो फुटकर व्यापारी हैं, जो छोटे व्यापारी हैं, जो गांवों में, गलियों में, चौराहों पर छोटे कस्बों में काम करते हैं? उनके पास रहने की जगह भी नहीं है, खुद के लिए कोई दुकान भी नहीं है।

(1155/KN/RK)

खुद की कोई दुकान भी नहीं है। वे फुटपाथ पर दुकान लगाते हैं। उनको आये दिन वहाँ की नगरपालिकाएँ और वहाँ का प्रशासन हटाने का प्रयास करता रहता है। उनको और उनके परिवार को हमेशा तकलीफ रहती है कि हमारा भविष्य कहीं अधर में न हो।...(व्यवधान) माननीय मंत्री जी कोई ऐसी नीति बनाने का कष्ट करेंगे कि जिससे उनके हित की चिन्ता हो सके?

श्री पीयूष गोयल : अध्यक्ष महोदय, यह वास्तव में जो शहर की लोकल बॉडी होती है, वह निर्णय करती है कि कौन कहाँ पर व्यापार कर सकता है। स्टेट के अंदर जो खुदरा व्यापार होता है, वह स्टेट सब्जेक्ट है। उसमें केन्द्र सरकार कोई नीति नहीं बना पाएगी।

माननीय अध्यक्ष : डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे – उपस्थित नहीं।

क्वेश्चन नम्बर 353 को भी क्लब किया जाता है। श्री गणेश सिंह।

श्री गणेश सिंह (सतना): अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले अपने लोक सभा क्षेत्र और औद्योगिक शहर सतना के सभी दुकानदारों, खुदरा व्यापारियों और स्वरोज़गार करने वाले लोगों की तरफ से प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ। उन्होंने दुकानदारों, खुदरा व्यापारियों और स्वरोज़गार करने वाले लोगों को पेंशन देने की ज़रूरत को महसूस किया और तीन हजार रुपये की न्यूनतम मासिक पेंशन देना सुनिश्चित किया। अध्यक्ष महोदय, इस पेंशन स्कीम के तहत केवल 18 से 40 वर्ष की उम्र के लोग ही नामांकन करा सकते हैं, जबकि उनको पेंशन 60 साल के बाद मिलेगी। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ कि देश में अधिकांश व्यापारी 50 से 60 वर्ष की उम्र सीमा के हैं, जिन्हें इस स्कीम से नहीं जोड़ा गया है। इसको लेकर हमारे लोक सभा क्षेत्र और औद्योगिक शहर सतना के दुकानदारों, खुदरा व्यापारियों और स्वरोज़गार करने वाले लोगों में भ्रम की स्थिति बनी हुई है।

श्री पीयूष गोयल : अध्यक्ष महोदय, कोई भी ऐसी स्कीम जब आती है तो कुछ समय तक उसका प्रीमियम जब तक पे नहीं हो तो पूरे जीवन के लिए पेंशन लागू करना या लाना मुश्किल होता है। इसलिए 18 से 40 वर्ष की आयु के बीच के जो खुदरा व्यापार या छोटे व्यापार में लगे हैं, उन सब के लिए तो ज़रूर यह स्कीम आ गई है, लेकिन 50 से 60 वर्ष की उम्र के जो व्यापारी हैं, उनको अपनी कोई एल.आई.सी. या किसी इंश्योरेंस कम्पनी की योजना के साथ जुड़ना पड़ेगा। सरकार की एक लम्बे अर्से तक पेंशन योजना चले और आगे के लिए एक रास्ता निर्धारित हो जाए, उस हिसाब से इस स्कीम को लागू किया है।

श्री गणेश सिंह (सतना): सर, आपके माध्यम से दूसरा प्रश्न है। इस स्कीम में यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि यह पेंशन स्कीम डेढ़ करोड़ रुपये टर्न ओवर तक जी.एस.टी. रजिस्टर्ड कारोबारियों के लिए होगी या गैर रजिस्टर्ड दुकानदारों के लिए? सरकार ने स्कीम के लिए डेढ़ करोड़ की ऊपरी सीमा तो तय कर दी, लेकिन यह साफ नहीं किया कि निचले स्तर पर कैसे तय होगा कि कोई दुकानदार है, क्योंकि उसके लिए सिर्फ एक हलफनामा आधार कार्ड और बैंक एकाउंट की कॉपी माँगी गई है। यह दस्तावेज़ तो कोई भी मुहैया करा सकता है। इसके साथ-साथ मेरे प्रश्न के अंतिम 'घ' प्रश्न में मध्य प्रदेश के सतना जिले में ऐसे कितने व्यापारी हैं, जिनको लाभ मिलने वाला है, उसका उत्तर नहीं मिला है।

श्री पीयूष गोयल : अध्यक्ष महोदय, मध्य प्रदेश के कितने व्यापारी हैं, उसकी जानकारी केन्द्र सरकार नहीं रखती है। उसकी जानकारी आपको वास्तव में लोकल एरिया या लोकल कलेक्टर से ही मिल पाएगी। जहाँ तक नीचे की सीमा की बात है, मैं समझता हूँ कि हमने इसमें सेल्फ डिक्लेरेशन अलाउ किया है। देश का व्यापारी ईमानदार है, ऐसा यह सरकार मानती है। हमारी सरकार हमारे व्यापारियों की ईमानदारी की सराहना करती है, इसलिए हम सेल्फ डिक्लेरेशन पर एक्सेप्ट करते हैं।

(इति)

(प्रश्न 348)

डॉ. भारतीबेन डी. श्याल (भावनगर): अध्यक्ष महोदय, इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वर्ष 2014 के बाद जब मोदी जी की गवर्नमेंट आई तो संचार विभाग और बीएसएनएल में इतना सुधार हुआ है। मैं पहले 55 साल की बात कर रही हूँ। पहले 55 साल में जो नहीं हो पाया, वह पिछले पाँच साल में हो गया है। आपको भी स्वीकार करना पड़ेगा। इन पाँच सालों में जो हुआ है, उसमें अब हम आगे बढ़ रहे हैं। आपने 55 साल में कुछ नहीं किया है, यह तो स्वीकार कीजिए कि पाँच साल में क्या हो गया है। सर, मैं सिर्फ अपने क्षेत्र की बात करूँगी। विकसित देश जो 5जी लॉन्च कर रहे हैं, लेकिन बीएसएनएल और खास कर मेरे क्षेत्र भावनगर में 189 और बोटाड में 37 मोबाइल टावर्स हैं, उनको 4जी में कब तक अपग्रेड करेंगे?

(1200/CS/PS)

सरकार का जो रिवाइवल प्लान है, उसे कब तक पूरा करने की सोच है? कृपया आप इस बारे में मुझे बताइए। जो इंफ्रास्ट्रक्चर है, केबल नहीं मिल रहे हैं, इन सारी चीजों की वजह से हमारे बहुत सारे एक्सचेंज आज बंद हो रहे हैं। आप रिवाइवल प्लान कब तक पूरा करेंगे, आप इस बारे में मुझे बताने की कृपा करें। धन्यवाद।...(व्यवधान)

श्री संजय धोत्रे : महोदय, माननीय सदस्या ने जो प्रश्न पूछा है, 2जी, 3जी और बहुत सारी जगहों पर 4जी के भी बीटीएस लगे हुए हैं। उनके क्षेत्र में जो बीटीएस लगे हैं, उसकी डिटेल उत्तर में दी गई है। कितने बीटीएस लगे हैं और अगले प्लान में कितने बीटीएस लगेंगे, उसकी जानकारी भी उत्तर में दी हुई है। अगर माननीय सदस्य महोदया अलग से कुछ जानकारी चाहती होंगी, तो हम उसकी भी जानकारी उन्हें देंगे।...(व्यवधान)रिवाइवल का जो प्लान है, सभी माननीय सदस्य जानते हैं कि सरकार पूरा प्रयास बीएसएनएल, एमटीएनएल के रिवाइवल के लिए कर रही है और जल्दी ही उसके नतीजे दिखेंगे।...(व्यवधान)

(इति)

प्रश्न काल समाप्त

स्थगन प्रस्ताव की सूचनाओं के बारे में विनिर्णय

1201बजे

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे विभिन्न विषयों पर कुछ सदस्यों से स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं प्राप्त हुई है। यद्यपि ये मामले महत्वपूर्ण हैं तथापि इनके लिए आज की कार्यवाही में व्यवधान डालना आवश्यक नहीं है। मैंने स्थगन प्रस्ताव की किसी भी सूचना के लिए अनुमति प्रदान नहीं की है।

…(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): महोदय, असम के बारे में बोलने का मुझे मौका दीजिए।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैंने बोल दिया है कि मैं आपको बोलने की इजाजत दूँगा।

…(व्यवधान)

सभा पटल पर रखे गए पत्र

1202 बजे

माननीय अध्यक्ष : अब पत्र सभा पटल पर रखे जाएंगे। श्री श्रीपद येसो नाईक।

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF AYURVEDA, YOGA AND NATUROPATHY, UNANI, SIDDHA AND HOMOEOPATHY (AYUSH) AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI SHRIPAD YESSO NAIK): On behalf of Shri Raj Nath Singh, I beg to lay on the Table:-

(1) A copy each of the following papers (Hindi and English versions):-

- (i) Detailed Demands for Grants of the Ministry of Defence for the year 2019-2020.
- (ii) Defence Services Estimates for the year 2019-2020.

(2) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Defence Institute of Advanced Technology, Pune, for the year 2017-2018, alongwith Audited Accounts.

(ii) Statement regarding Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Defence Institute of Advanced Technology, Pune, for the year 2017- 2018.

(3) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (2) above.

विधि और न्याय मंत्री; संचार मंत्री तथा इलेक्ट्रोनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री रवि शंकर प्रसाद): महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा पटल पर रखता हूँ:-

(1) (एक) इंस्टीट्यूट ऑफ कंस्टीट्यूशनल एण्ड पार्लियामेंट्री स्टडीज, नई दिल्ली के वर्ष 2014-2015 और 2015-2016 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) तथा लेखापरीक्षित लेखे।

(दो) इंस्टीट्यूट ऑफ कंस्टीट्यूशनल एण्ड पार्लियामेंट्री स्टडीज, नई दिल्ली के वर्ष 2014-2015 और 2015-2016 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा के बारे में विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(2) उपर्युक्त (1) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलंब के कारण दर्शाने वाले दो विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(3) आईटीआई लिमिटेड तथा दूरसंचार विभाग, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच वर्ष 2019-2020 के लिए हुए समझौता ज्ञापन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(4) वर्ष 2019-2020 के लिए विधि और न्याय मंत्रालय की अनुदानों की विस्तृत मांगों की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(5) नोटरी अधिनियम, 1952 की धारा 15 की उपधारा (3) के अंतर्गत निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)-

(एक) नोटरी (संशोधन) नियम, 2019 जो 11 जनवरी, 2019 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा0का0नि026(अ) में प्रकाशित हुए थे।

(दो) नोटरी (दूसरा संशोधन) नियम, 2019 जो 30 जनवरी, 2019 के भारत के राजपत्र में अधिसूचना संख्या सा0का0नि077(अ) में प्रकाशित हुए थे।

…..

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (DR. SUBRAHMANYAM JAISHANKAR): Hon. Speaker, I beg to lay on the Table a copy of the Detailed Demands for Grants (Hindi and English versions) of the Ministry of External Affairs for the year 2019-2020.

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY WELFARE, MINISTER OF SCIENCE AND TECHNOLOGY AND MINISTER OF EARTH SCIENCES (DR. HARSH VARDHAN): Hon. Speaker, I beg to lay on the Table a copy of the Detailed Demands for Grants (Hindi and English versions) of the Ministry of Science and Technology for the year 2019-2020.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF STEEL (SHRI FAGGANSINGH KULASTE): On behalf of Shri Dharmendra Pradhan, I beg to lay on the Table a copy of the Report (Hindi and English versions) of the Comptroller and Auditor General of India-Union Government (Commercial) (No. 7 of 2019)- Performance Audit on Marine Logistics Operations in Oil and Natural Gas Corporation Limited, Ministry of Petroleum and Natural Gas, under Article 151(1) of the Constitution.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, MINISTER OF COAL AND MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI): I beg to lay on the Table:-

(1) A copy of the Report (Hindi and English versions) of the Comptroller and Auditor General of India-Union Government (Commercial)(No. 6 of 2019)- Performance Audit on Operational Performance and Productivity of the Refinery and Smelter Plants of National Aluminium Company Limited, Ministry of Mines, under Article 151(1) of the Constitution.

(2) A copy of the National Mineral Policy 2019 (Hindi and English versions).

(3) A copy of the Memorandum of Understanding (Hindi and English versions) between the Mineral Exploration Corporation Limited and the Ministry of Mines for the year 2019-2020.

(4) A copy each of the following papers (Hindi and English versions):-

(i) Detailed Demands for Grants of the Ministry of Mines for the year 2019-2020.

(ii) Detailed Demands for Grants of the Ministry of Coal for the year 2019-2020.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF AYURVEDA, YOGA AND NATUROPATHY, UNANI, SIDDHA AND HOMOEOPATHY (AYUSH) AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI SHRIPAD YESSO NAIK): Sir, I beg to lay on the Table a copy of the Memorandum of Understanding (Hindi and English versions) between the Goa Shipyard Limited and the Department of Defence Production, Ministry of Defence, for the year 2019-2020.

उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री; प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री; कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री; परमाणु ऊर्जा विभाग में राज्य मंत्री तथा अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री (डॉ. जितेन्द्र सिंह): महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा पटल पर रखता हूँ:-

1. निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)-
   (एक) वर्ष 2019-2020 के लिए उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय की अनुदानों की विस्तृत मांगें।
   (दो) वर्ष 2019-2020 के लिए कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, केन्द्रीय सतर्कता आयोग और संघ लोक सेवा आयोग की अनुदानों की विस्तृत मांगें।
2. (एक) केन्द्रीय भण्डार, नई दिल्ली के वर्ष 2017-2018 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) तथा लेखापरीक्षित लेखे।
   (दो) केन्द्रीय भण्डार, नई दिल्ली के वर्ष 2017-2018 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा के बारे में विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।
3. उपर्युक्त (2) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।
4. (एक) सिविल सर्विसेज ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के वर्ष 2017-2018 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) तथा लेखापरीक्षित लेखे।
   (दो) सिविल सर्विसेज ऑफिसर्स इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के वर्ष 2017-2018 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा के बारे में विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।
5. उपर्युक्त (4) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।
6. निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-
   (एक) यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच वर्ष 2019-2020 के लिए हुआ समझौता ज्ञापन।
   (दो) इलेक्ट्रोनिक्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच वर्ष 2019-2020 के लिए हुआ समझौता ज्ञापन।
   (तीन) आईआरईएल (इंडिया) लिमिटेड (पूर्व में इंडियन रेयर अर्थस् लिमिटेड) तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच वर्ष 2019-2020 के लिए हुआ समझौता ज्ञापन।
   (चार) न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच वर्ष 2019-2020 के लिए हुआ समझौता ज्ञापन।
   (पांच) भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच वर्ष 2019-2020 के लिए हुआ समझौता ज्ञापन।
7. कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 394 की उप-धारा (1) के अंतर्गत निम्नलिखित पत्रों की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण):-

(एक) नॉर्थ ईस्टर्न हैण्डीक्राफ्ट्स एण्ड हैण्डलूम्स डेवलपमेन्ट कारपोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी के वर्ष 2017-2018 के कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा, लेखापरीक्षित लेखे तथा उन पर नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियां।

(दो) नॉर्थ ईस्टर्न हैण्डीक्राफ्ट्स एण्ड हैण्डलूम्स डेवलपमेन्ट कारपोरेशन लिमिटेड, गुवाहाटी का वर्ष 2017-2018 का वार्षिक प्रतिवेदन, लेखापरीक्षित लेखे तथा उन पर नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियां।

8. उपर्युक्त (7) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलम्ब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

.....

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRI SOM PRAKASH): On behalf of Shri Hardeep Singh Puri, I beg to lay on the Table:-

(1) A copy each of the following papers (Hindi and English versions):-

(i) Memorandum of Understanding between the between the India Trade Promotion Organisation and the Department of Commerce, Ministry of Commerce and Industry, for the year 2019-2020.

(ii) Memorandum of Understanding between the State Trading Corporation of India Limited and the Department of Commerce, Ministry of Commerce and Industry, for the year 2019-2020.

(2) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Noida Special Economic Zone Authority, G. B. Nagar, for the year 2017-2018, alongwith Audited Accounts.

(ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Noida Special Economic Zone Authority, G. B. Nagar, for the year 2017-2018.

(3) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Falta Special Economic Zone Authority, Kolkata, for the year 2017-2018, alongwith Audited Accounts.

(ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Falta Special Economic Zone Authority, Kolkata, for the year 2017-2018.

(4) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Visakhapatnam Special Economic Zone Authority, Visakhapatnam, for the year 2017-2018.

(ii) Statement regarding Review (Hindi and English versions) by the Government of the Visakhapatnam Special Economic Zone Authority, Visakhapatnam, for the year 2017- 2018.

(5) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Cochin Special Economic Zone Authority, Cochin, for the year 2017-2018, alongwith Audited Accounts.

(ii) Statement regarding Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Cochin Special Economic Zone Authority, Cochin, for the year 2017- 2018.

(6) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the SEEPZ SEZ Authority, Mumbai, for the year 2017-2018, alongwith Audited Accounts.

(ii) A copy of the Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the SEEPZ SEZ Authority, Mumbai, for the year 2017-2018.

(7) A copy each of the following Notifications (Hindi and English versions) under sub-section (3) of Section 55 of the Special Economic Zones Act, 2005:-

(i) The Special Economic Zones (Amendment) Rules, 2019 published in Notification No. G.S.R.95(E) in Gazette of India dated 6th February, 2019.

(ii) The Special Economic Zones (2nd Amendment) Rules, 2019 published in Notification No. G.S.R.200(E) in Gazette of India dated 7th March, 2019.

इस्पात मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री फग्गन सिंह कुलस्ते): महोदय, मैं वर्ष 2019-2020 के लिए इस्पात मंत्रालय की अनुदानों की विस्तृत मांगों की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूँ।

.....

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री; संचार मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री संजय धोत्रे): महोदय, मैं निम्नलिखित पत्र सभा पटल रखता हूँ:-

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI SURESH CHANNABASAPPA ANGADI): I beg to lay on the Table a copy of the Kolkata Metro Railway General Rules, 2019 (Hindi and English versions) published in Notification No. G.S.R.465(E) in Gazette of India dated 1st July, 2019 under Section 199 of the Railways Act, 1989.

(1205/RV/RC)

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अर्जुन राम मेघवाल): अध्यक्ष महोदय, मैं वी. मुरलीधरन जी की ओर से निम्नलिखित पत्र सभा पटल पर रखता हूं: -

(1) वर्ष 2011-2012 से 2017-2018 के लिए इंडिया डेवलपमेंट फाउंडेशन ऑफ ओवरसीज इंडियन्स, नई दिल्ली के लेखाओं के संबंध में नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

(2) उपर्युक्त (1) में उल्लिखित पत्रों को सभा पटल पर रखने में हुए विलंब के कारण दर्शाने वाला विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण)।

****

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRI SOM PRAKASH): I beg to lay on the Table:-

1 (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the National Industrial Corridor Development and Implementation Trust (earlier Delhi Mumbai Industrial Corridor Project Implementation Trust Fund), New Delhi, for the year 2017-2018, along with Audited Accounts.
(ii) Statement regarding Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the National Industrial Corridor Development and Implementation Trust (earlier Delhi Mumbai Industrial Corridor Project Implementation Trust Fund), New Delhi, for the year 2017-2018.

2. Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES AND PUBLIC ENTERPRISES (SHRI ARJUN RAM MEGHWAL): I beg to lay on the Table a copy of the Detailed Demands for Grants (Hindi and English versions) of the Ministry of Parliamentary Affairs for the year 2019-2020.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF SHIPPING AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI MANSUKH L. MANDAVIYA): I beg to lay on the Table a copy of the Detailed Demands for Grants (Hindi and English versions) of the Ministry of Shipping for the year 2019-2020.

MESSAGES FROM RAJYA SABHA

SECRETARY GENERAL: Hon. Speaker, Sir, I have to report following messages received from the Secretary General of Rajya Sabha:-

(i) 'I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on Wednesday, the 3rd July, 2019 adopted the following Motion in regard to the Committee on Public Accounts:-

"That this House concurs in the recommendation of the Lok Sabha that the Rajya Sabha do agree to nominate seven Members from Rajya Sabha to associate with the Committee on Public Accounts of the Lok Sabha for the term ending on the 30th April, 2020, and do proceed to elect, in such manner as the Chairman may direct, seven Members from amongst the members of the house to serve on the said Committee."

2. I am further to inform the Lok Sabha that in pursuance of the above motion, the following Members of the Rajya Sabha have been duly elected to the said Committee:

1. Shri Rajeev Chandrasekhar
2. Prof M.V. Rajeev Gowda
3. Shri Naresh Gujral
4. Shri Bhubaneswar Kalita
5. Shri C.M. Ramesh
6. Shri Sukhendu Sekhar Ray
7. Shri Bhupender Yadav.'

(ii) 'I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on Wednesday, the 3rd July, 2019 adopted the following

Motion in regard to the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes:-

"That this House resolves that the Rajya Sabha do join the Committee of both the Houses on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the term ending on the 30th April, 2020, and do proceed to elect, in accordance with the system of proportional representation by means of the single transferable vote, ten Members from amongst the Members of the House to serve on the said Committee."

2. I am further to inform the Lok Sabha that in pursuance of the above Motion, the following Members of the Rajya Sabha have been duly elected to the said Committee:-

1. Shri Abir Ranjan Biswas
2. Shri Shamsher Singh Dullo
3. Dr. Narendra Jadhav
4. Shri Amar Shankar Sable
5. Shri Ram Shakal
6. Shri Veer Singh
7. Shri K. Somaprasad
8. Shrimati Wansuk Syiem
9. Mahant Shambhuprasadji Tundiya
10. Shri Ramkumar Verma.'

(iii) 'I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on Wednesday, the 3rd July, 2019 adopted the following Motion in regard to the Committee on Public Undertakings:-

"That this House concurs in the recommendation of the Lok Sabha that the Rajya Sabha do agree to nominate seven Members from Rajya Sabha to associate with the Committee on Public Undertakings of the Lok Sabha for the term ending on the 30th April, 2020, and do proceed to elect, in such manner as the Chairman may direct, seven Members from amongst the members of the house to serve on the said Committee."

2. I am further to inform the Lok Sabha that in pursuance of the above motion, the following Members of the Rajya Sabha have been duly elected to the said Committee:

1. Shri Prasanna Acharya
2. Dr. Anil Jain
3. Shri Mohd. Ali Khan
4. Shri Om Prakash Mathur
5. Shri Surendra Singh Nagar
6. Shri Mahesh Poddar
7. Shri A.K. Selvaraj'

(iv) 'I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on Wednesday, the 3rd July, 2019 adopted the following Motion in regard to the Committee on Welfare of Other Backward Classes (OBCs):-

"That this House concurs in the recommendation of the Lok Sabha that a Committee of both the Houses to be called the 'Committee on Welfare of Other Backward Classes (OBCs)' be constituted for the purposes set out in the Motion adopted by the Lok Sabha at its sitting held on 24th June, 2019 and communicated to this House, and resolves that this House do join in the said Committee and proceed to elect, in accordance with the system of proportional representation by means of the single transferable vote, ten Members from amongst the Members of this House to serve on the said Committee".

2. I am further to inform the Lok Sabha that in pursuance of the above Motion, the following Members of Rajya Sabha have been duly elected to the said Committee:-

1. Shri Ram Narain Dudi
2. Shri T.K.S. Elangovan
3. Shri B.K. Hariprasad
4. Shri Vishambhar Prasad Nishad

5. Dr. Banda Prakash
6. Shri K.K. Ragesh
7. Smt. Vijila Sathyananth
8. Shri Ram Nath Thakur
9. Shrimati Chhaya Verma
10. Shri Harnath Singh Yadav.'

(v) 'In accordance with the provisions of rule 111 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to enclose a copy of the Airports Economic Regulatory Authority of India (Amendment) Bill, 2019 which has been passed by the Rajya Sabha at its sitting held on the 16th July, 2019.'

(vi) 'In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on the 16th July, 2019 agreed without any amendment to the Central Universities (Amendment) Bill, 2019 which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 12th July, 2019.'

I also lay on the Table the Airports Economic Regulatory Authority of India (Amendment) Bill, 2019, as passed by Rajya Sabha on the 16th July, 2019.

STATEMENT RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS IN 31st REPORT OF STANDING COMMITTEE ON DEFENCE - LAID

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF AYURVEDA, YOGA AND NATUROPATHY, UNANI, SIDDHA AND HOMOEOPATHY (AYUSH) AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF DEFENCE (SHRI SHRIPAD YESSO NAIK): I beg to lay a statement regarding the status of implementation of the recommendations contained in the 31st Report of the Standing Committee on Defence on Demands for Grants (2017-18) on Capital Outlay on Defence Services, Procurement Policy and Defence Planning (Demand No. 21) pertaining to the Ministry of Defence.

STATEMENT RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS IN 218TH REPORT OF STANDING COMMITTEE ON HOME AFFAIRS – LAID

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF DEVELOPMENT OF NORTH EASTERN REGION, MINISTER OF STATE IN THE PRIME MINISTER'S OFFICE, MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES AND PENSIONS, MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY AND MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF SPACE (DR. JITENDRA SINGH): I beg to lay a statement regarding the status of implementation of the recommendations contained in the 218th Report of the Standing Committee on Home Affairs on Action taken by the Government on the recommendations/observations contained in 210th Report of the Committee on Demands for Grants (2018-19) pertaining to the Ministry of Development of North Eastern Region.

STATEMENT RE: STATUS OF IMPLEMENTATION OF RECOMMENDATIONS IN 145TH REPORT OF STANDING COMMITTEE ON COMMERCE - LAID

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRI SOM PRAKASH): I beg to lay a statement regarding the status of implementation of the recommendations contained in the 145th Report of the Standing Committee on Commerce on 'Impact of Chinese Goods on Indian Industry' pertaining to the Department for Promotion of Industry and Internal Trade, Ministry of Commerce and Industry.

समिति के लिए निर्वाचन
नारियल विकास बोर्ड

कृषि और किसान कल्याण मंत्री; ग्रामीण विकास मंत्री तथा पंचायती राज मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर): अध्यक्ष महोदय, मैं निम्नलिखित प्रस्ताव करता हूं: -

> "कि नारियल विकास बोर्ड नियमावली, 1981 के नियम 4 के साथ पठित नारियल विकास बोर्ड अधिनियम, 1979 की धारा 4 की उपधारा 4 के खंड (ङ) के अनुसरण में, इस सभा के सदस्य, ऐसी रीति से जैसा अध्यक्ष निदेश दें, उक्त अधिनियम के अन्य उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अध्यधीन नारियल विकास बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए अपने में से दो सदस्य निर्वाचित करें।"

माननीय अध्यक्ष: प्रश्न यह है:

"कि नारियल विकास बोर्ड नियमावली, 1981 के नियम 4 के साथ पठित नारियल विकास बोर्ड अधिनियम, 1979 की धारा 4 की उपधारा 4 के खंड (ङ) के अनुसरण में, इस सभा के सदस्य, ऐसी रीति से जैसा अध्यक्ष निदेश दें, उक्त अधिनियम के अन्य उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अध्यधीन नारियल विकास बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए अपने में से दो सदस्य निर्वाचित करें।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

MOTION RE: 4TH REPORT OF BUSINESS ADVISORY COMMITTEE

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEAVY INDUSTRIES AND PUBLIC ENTERPRISES (SHRI ARJUN RAM MEGHWAL): I beg to move:

"That this House do agree with the Fourth Report of the Business Advisory Committee presented to the House on 16th July, 2019."

माननीय अध्यक्ष: प्रश्न यह है:

"कि यह सभा 16 जुलाई, 2019 को सभा में प्रस्तुत कार्य मंत्रणा समिति के चौथे प्रतिवेदन से सहमत है।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(1210/MY/SNB)

विशेष उल्लेख

माननीय अध्यक्ष: श्री गौरव गोगोई, आप क्या बोल रहे थे?

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): अध्यक्ष महोदय, अभी असम और बिहार में बाढ़ की जो स्थिति है, वह बहुत ही गंभीर हो चुकी है। असम में अभी 43 लाख लोग अफेक्टेड हैं, 15 लोग मर चुके हैं। वहां बच्चे भूखे हैं, उनका परिवार उजड़ चुका है और किसान सब कुछ खो चुके हैं। आज बहुत से गांव और काजीरंगा नेशनल पार्क डूब चुके हैं। वर्तमान की केन्द्र सरकार से मेरी दरख्वास्त है कि बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा के हिसाब से दर्जा दिया जाए। ब्रह्मपुत्र नदी पर जो रिवर एम्बैंकमेन्ट है, उसके लिए एक स्पेशल पैकेज दिया जाए। सी.ए.जी. की जो रिपोर्ट है, उसमें कहा गया है कि वर्तमान जल शक्ति मंत्रालय को जितनी राशि असम सरकार को देनी थी, वह राशि नहीं दी गई है। सी.ए.जी. रिपोर्ट के अनुसार जो पैसा बनता है, उसे असम सरकार को दे दिया जाए। इसके लिए मैं केन्द्र सरकार से दरख्वास्त करूंगा। हमारे बिहार के भी एक सांसद है, उनको भी इस संबंध में अपनी बात रखनी है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सभी माननीय सदस्यों को क्लब किया जाता है।

...(व्यवधान)

श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर): अध्यक्ष महोदय, मुझे बिहार के बारे में भी बोलने दीजिए। अभी तो मैंने केवल असम के बारे में बोला है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आप एक मिनट के लिए बैठिए।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, आपके यहां से जल शक्ति मंत्रालय के मंत्री जी दौरा करके आए हैं और सरकार भी गंभीर है। इसका संकेत भी आपको नजर आ रहा है।

...(व्यवधान)

डॉ. मोहम्मद जावेद (किशनगंज): सर, बिहार में 33 लोगों के मरने की खबर है। वहां पर कोई भी साधन नहीं दिया जा रहा है। टाइम्स ऑफ इंडिया, चेन्नई में छपा है कि no relief material to the flood victims has reached and they are eating rats in Kathiar in Bihar ...(*Interruptions*) सर, कटिहार में लोग चूहे खाकर जिंदा रह रहे हैं। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय राम कृपाल जी, आप क्या बोलना चाह रहे थे?

...(व्यवधान)

श्री राम कृपाल यादव (पाटलीपुत्र): सर, यह बात सही है कि देश के विभिन्न भागों में बाढ़ आई है। बिहार में भी बाढ़ आई है। यह ट्रैजडी बिहार में नेपाल की तरफ से आती है। इस बार भी बिहार में बाढ़ आई है, मगर राज्य और केन्द्र की सरकार तत्परता के साथ सहयोग कर रही हैं। 261 करोड़ रुपये की राशि आवंटित कर दी गई है। वहां राज्य सरकार हर स्तर पर प्रयास कर रही है। एन.डी.आर.एफ. की टीम वहां भेजी जा रही है। केन्द्र व राज्य सरकार ने पर्याप्त मात्रा में साधन दिये हैं। हमारे विपक्ष के

सदस्य सदन को गलत जानकारी दे रहे हैं। वह सदन को दिग्भ्रमित करने का काम कर रहे हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय अधीर रंजन जी, आप अपने सदस्यों को समझाएं। अगर आपके सदस्य आपको बोलने नहीं देना चाहते हैं, तो मैं फिर सदन की आगे की कार्यवाही चलाऊं?

...(व्यवधान)

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY (BAHARAMPUR): Hon. Speaker, Sir, I would like to draw the attention of this House and the hon. Minister of Defence to a grave situation arising along the Indo-China border. Still today the 73 days stand-off between India and China at Doklam is vivid in our memory which could have got escalated, however fortunately it was defused.

But again, at periodic intervals, China has been making intrusion in our territory. They are pursuing the policy of slicing, they are pursuing a policy of transgression in order to make their entry into our country followed by offensive diplomacy. A few days ago, on 6th of July, in Demchak area near Ladakh, the Chinese army transgressed six kilometres inside the Indian territory where the Indian people were celebrating the 84th birth anniversary of Dalai Lama. They even planted their flag also. So, it is a matter of grave concern. The border with China is still not settled. We are sharing more than 4000 kilometres of border with China. They are not following the Macmohan Line ...(*Interruptions*)

(1215/CP/RU)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, अब आप जवाब भी सुनें। माननीय रक्षा मंत्री जी।

रक्षा मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): अध्यक्ष महोदय, यह सच है कि मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि अधीर रंजन चौधरी जी ने क्यों इस इश्यू को हाउस में उठाने की कोशिश की? जहां तक भारत-चीन की सीमा ही नहीं, मैं देश की सीमा के बारे में कहना चाहता हूं कि सारे देश को देश की सीमाओं की सुरक्षा को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त रहना चाहिए, यह मैं पूरे विश्वास के साथ कहना चाह रहा हूं।

भारत और चीन के बीच सीमा पर प्राय: शांति रही है। लेकिन लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल पर डिफरेंसेज़ इन परसेप्शन के कारण समय-समय पर स्थानीय स्तर पर कभी-कभी कुछ अप्रिय हालात वहां पर पैदा हुए हैं। इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता है। यह पहले से ही है, मतलब सन् 1962 के बाद से यह स्थिति बनी हुई है। इसका मूल कारण यह है कि भारत और चीन के बीच कॉमनली डिलिनीएटेड एलएसी का एक अभाव है।

इस तरह की स्थितियों से निपटने के लिए भारत और चीन के बीच कई मैकेनिज़म्स हैं, जैसे दोनों सेनाओं के स्थानीय कमांडर्स के बीच बार्डर पर्सनल मीटिंग्स, फ्लैग मीटिंग, हॉट लाइन जिससे कि इनकर्सन्स, ट्रांसग्रेशन्स एंड फेस ऑफ जैसी स्थितियों को नियंत्रित किया जा सके। इसके अलावा

दीर्घकालीन विषयों हेतु राजनयिक स्तर पर भी स्पेशल रिप्रज़ेंटेटिव टास्क, जो कि प्राय: एनएसए के स्तर पर होती है और एक वर्किंग मैकेनिज़्म फॉर दि कंसल्टेशन एंड कोआर्डिनेशन, जिसे बोलचाल की भाषा में डब्ल्यूएमसीसी कहते हैं, ज्वाइंट सेक्रेट्री स्तर पर प्राय: यह बात होती रहती है। यदि मैं इंटरवल की बात कहूं, तो प्राय: छ: महीने के इंटरवल पर यह बातचीत का सिलसिला चलता रहता है।

महोदय, अप्रैल, 2018 में वुहान शहर में भारत और चीन के शीर्षस्थ नेताओं के बीच एक अनौपचारिक शिखर वार्ता हुई। सारा देश जानता है कि हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और साथ ही साथ चाइना के राष्ट्रपति जी के बीच यह शिखर वार्ता हुई थी। इस वार्ता में भारत-चीन की सीमा पर पीस एंड ट्रैंक्विलिटी को भी बनाए रखने के लिए विशेष बल दिया गया। इस शिखर वार्ता के बाद दोनों ने अपनी-अपनी सेनाओं को स्ट्रैटिजिक गाइडेंस भी जारी किए हैं, ताकि दोनों देशों की सीमाओं पर बेहतर संवाद और विश्वास कायम हो सके तथा बार्डर अफेयर्स का मैनेजमेंट ज्यादा से ज्यादा बेहतर हो सके।

अध्यक्ष महोदय, भारत सरकार देश की सुरक्षा की आवश्यकताओं के बारे में पूरी तरह से जागरूक है। मैं इस सदन में आश्वस्त करना चाहता हूं तथा समय-समय पर इसकी हम लोग समीक्षा भी करते रहते हैं और उचित निर्णय भी लेते रहते हैं। भारत-चीन सीमा पर इन्फ्रास्ट्रक्चर, जैसे सड़क, टनल, रेलवे लाईन और एयर फील्ड्स को भी डेवलप किया जा रहा है, जिससे कि देश की अखंडता और सुरक्षा को सुनिश्चित रखा जा सके।

डोकलाम की घटना, जिसका ज़िक्र अधीर रंजन जी ने किया है, यह अगस्त, 2017 में हुई और इस विषय पर सदन में विस्तारपूर्वक चर्चा इसके पहले भी हो चुकी है तथा सरकार ने अपना पक्ष भी पूरी तरह से रख दिया है। इस संबंध में आगे मुझे कुछ नहीं कहना है। इस समय डोकलाम में दोनों पक्षों द्वारा पूरी तरह से संयम बरता जा रहा है।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): मैंने डेमचोक की बात की है। डोकलाम नहीं, डेमचोक के बारे में कहा है।...(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह: डेमचोक के बारे में मैंने आपको क्लेरिफाई कर दिया है। भले ही मैंने डेमचोक का नाम न लिया हो। ...(व्यवधान) मैंने पूरे इंडो-चाइना बार्डर की बात कर दी। केवल डेमचोक की ही बात नहीं है, मैंने पूरे इंडो-चाइना बार्डर की बात कर दी है। भारत और चीन, दोनों देशों के द्वारा विद्यमान समझौतों का सम्मान किया जा रहा है, ताकि सीमा पर पीस एंड ट्रैंक्विलिटी पूरी तरह से कायम रहे।

माननीय अध्यक्ष : श्री बी. महताब जी।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ध्यान से सुनिए। ये सदन के वरिष्ठ सदस्य हैं।

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Mr. Speaker Sir, the Chinese President, Xi Jinping and our Prime Minister, Shri Narendra Modi are set to hold their second informal Summit in Varanasi on 12th October to energise ties following their meeting last month in Bishkek, Kyrgyzstan.

(1220/NKL/NK)

Prime Minister Modi will be meeting President Trump in United States in September during his visit to address the General Assembly of United Nations. On the side-lines of G20 Summit at Osaka, the top Advisor Ivanka Trump had stated India as 'critical' trading and security partner, and ally of America. Despite a contentious run-up and forbidding challenges, Indo-US relations post G20 meeting can claim decidedly a positive trajectory. The two Leaders have placed to work despite policy differences, and so is the situation with China. Prime Minister Modi's first major international engagement after his electoral success was attending G20 Summit which revealed geo-political confrontation and competing national agendas. Yet, India's two back- to-back tri-lateral talks one with President Trump and Prime Minister Shinzo Abe, and the other with President Xi Jinping and President Putin, and subsequently, BRICS Summit, have demonstrated a convergence of interest on maintaining an open and multilateral globe trade regime which is very much in favour our interest. We are opposed to protectionism and unilateralism, and support more sovereign control over the digital economy. We look for issue-based coalitions and interest-based partnerships. We have travelled a long way from non-aligned movement. Our foreign policy is in the domain of the executive. Yet, there is unanimity in political sphere.

Therefore, I urge upon this House, through you, to extend full support to our Prime Minister's endeavour in this regard. We should speak in one voice in this difficult time to further our national interest.

माननीय अध्यक्ष: श्री शिवकुमार उदासि, डॉ. किरिट पी. सोलंकी, कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल, डॉ. निशिकांत दुबे, श्री राज बहादुर सिंह और श्री उदय प्रताप सिंह को श्री भर्तृहरि महताब द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

नियम 377 के अधीन मामले – सभा पटल पर रखे गए

1222 बजे

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, नियम 377 के अधीन मामलों को सभा पटल पर रखा जाएगा। जिन सदस्यों को आज नियम 377 के अधीन मामलों को उठाने की अनुमति दी गई है और उसे पटल पर रखने का इच्छुक हैं, वे 20 मिनट के अंदर व्यक्तिगत रूप से सभा पटल पर पर्ची (स्लिप) दे सकते हैं।

केवल वही मामले पटल पर रखे माने जाएंगे, जिनके लिए निर्धारित समय के अंदर सभा-पटल पर पर्ची प्राप्त हो जाती है और बाकी मामलों को व्यपगत माना जाएगा।

माननीय अध्यक्ष: आईटम न. 23

Re: Toll free movement of local vehicles in Porbandar Parliamentary Constituency

श्री रमेशभाई एल. धडुक (पोरबंदर): मेरे संसदीय क्षेत्र पोरबंदर, गुजरात के केशोद-वंथली के अंतर्गत गोदाई टोल नाके पर स्थानीय लोगों के वाहन संचालन के ऊपर भी प्रतिदिन टोल वसूल किया जाता है। जिसे आम जनता में गंभीर रोष है। एवम् कानून व्यवस्था बिगड़ने की आशंका है एवम् हाल ही में प्रचंड जनांदोलन हुए हैं जिसमें एनएचएआई की इस प्रकार की गैर न्यायिक टोल वसूली के ऊपर काफी आक्रोश व्यक्त किया गया है।

अतः मेरी मा0 सड़क परिवहन मंत्री व राजमार्ग मंत्री जी से अनुरोध है कि उपरोक्त परिस्थिति को देखते हुए एनएचएआई के संबंधित अधिकारी को इस गैर न्यायिक टोल वसूली समाप्त करने का तात्कालिक आदेश देने की कृपा करें।

(इति)

Re: Need to increase the MSP for rubber

सुश्री प्रतिमा भौमिक (त्रिपुरा पश्चिम): अध्यक्ष महोदय, त्रिपुरा राज्य के किसान कड़ी मेहनत कर रबर की पैदावार कर रहे हैं परंतु सरकार द्वारा रबर का एम.एस.पी. तय ना होने के कारण किसानों को उनकी पैदावार का सही दाम नहीं मिल पा रहा है।

अध्यक्ष महोदय, वर्तमान की बात करें तो त्रिपुरा देश का दूसरा ऐसा राज्य है जहां रबर की सबसे ज्यादा पैदावार होती है। एक सरकारी आंकड़े के अनुसार वर्तमान में त्रिपुरा में 60 हजार टन रबर की पैदावार हो रही है, परंतु किसान को उसकी फसल का सही दाम ना मिलने के कारण किसानों का रुझान रबर की खेती के प्रति कम होता जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय, मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है। कि रबर का एम.एस.पी. कम से कम 170 रुपए तय किया जाये ताकि किसानों को उनकी मेहनत का पूरा पैसा मिल सकें और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सके। (इति)

Re: Need to provide employment to local people in industrial units in Sidhi & Singrauli districts, Madhya Pradesh

श्रीमती रीती पाठक (सीधी): महोदय, मैं जिस संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हूं, उसमें सीधी और सिंगरौली दो जिले साथ ही शहडोल जिले का एक हिस्सा ब्यौहारी के रूप में है, जिसमें हमारा सिंगरौली जिला उद्योग औरऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में विश्व पटल पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है और यह धानी के रूप में विख्यात है। हमारे सिंगरौली जिले में नॉर्दन कोल्ड फील्ड लिमिटेड, एन. टी.पी.सी. रिलायन्स पॉवर प्लांट शासन, एस्सार पॉवर प्लांट, हिण्डालको एल्युमीनियम एंड पॉवर प्लांट बरिगवां, जे.पी. कोल माइंस मझौली, जे.पी. पॉवर प्लांट निगरी, अल्ट्राटेक पॉवर प्लांट बघवार और कई ओवर बर्डेन कंपनी जैसी महत्वपूर्ण औद्योगिक इकाइयां 'काम कर रही है। यह अवश्य ही हमारे लिए गौरव का विषय है। हमारे देश को प्रकाश और कोयले की खपत का बड़ा हिस्सा हमारा सिंगरौली ही प्रदान करता है किंतु इतनी महत्वपूर्ण औद्योगिक इकाइयों के बाद भी हमारे सीधी और सिंगरौली जिले में बेरोजगार युवक बड़ी संख्या में काम की तलाश में अन्य राज्यों में पलायन कर रहे हैं जबकि विस्थापन नीति और कंपनियों द्वारा सरकार से किये गये अनुबंध में 60 प्रतिशत से अधिक विस्थापितों एवं स्थानीय लोगों को नौकरी देने की प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से उल्लेखित है किंतु औद्योगिक इकाइयों के मनमानेपन के कारण स्थानीय लोगों का रोजगार और मुंह का निवाला छीना जा रहा है।

महोदय, जिन लोगों ने वर्षों से पाली-पोसी, जीती-जागती जमीन औद्योगिक इकाइयों को प्रदान कर दिया, आज वो लोग आश्रय, आशियाने और अपने परिवार का पेट पालने के लिए दर-दर की ठोकर खा रहे हैं। मैं आपके माध्यम से केन्द्रीय उद्योग मंत्री महोदय, केन्द्रीय कोयला मंत्री महोदय और केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री महोदय से आग्रह करती हूं कि हमारे संसदीय क्षेत्र के विस्थापित और स्थानीय बेराजगारों को विस्थापन नीति एवं किये गये अनुबंध के अनुसार सम्पूर्ण सुविधा मुहैया कराते हुए 60 प्रतिशत स्थानीय बेरोजगारों को नौकरी उपलब्ध कराये जाने हेतु सीधी और सिंगरौली के विभिन्न औद्योगिक संस्थानों और जिला प्रशासन को निर्देशित करने का कष्ट करें। औद्योगिक इकायों से उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के घातक प्रदूषण और बीमारियां स्थानीय लोग ही उठाते हैं, तो उन औद्योगिक इकाइयों में उपलब्ध होने वाली नौकरी और रोजगार का लाभ स्थानीय लोगों को मिले, यह औद्योगिक इकाइयों के अनुबंध का पालन भी है और स्थानीय जन के साथ प्राकृतिक न्याय भी है।

(इति)

Re: Need to expedite Maksi-Godhra and Chota Udaipur - Dhar railway line projects

श्री छतरसिंह दरबार (धार): मध्य प्रदेश में मेरे आदिवासी बहुल संसदीय क्षेत्र धार के अंतर्गत मक्सी-गोधरा वाया इंदौर, धार, झाबुआ एवं दाहोद तक 3 16 कि.मी. लंबी रेल लाइन वर्ष 1988-89 में स्वीकृत हुई थी। इंदौर से पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र जो धार जिले में है तथा इस रेल लाइन की दूरी 31. 78 कि.मी. है। इसके लिए धार जिले की सीमा तक जमीन का अधिग्रहण किया जा चुका है तथा इंदौर से टीही ग्राम स्टेशन तक जो कि पीथमपुर से 3 कि.मी. दूर है, तक रेल लाइन डाल दी गई है। धार तथा सरदारपुर तहसीलों में 86.29 कि.मी. भूमि का अधिग्रहण किया जाना है। जिसमें से अभी कुल 26.79 कि.मी. जमीन का अधिग्रहण हुआ है तथा शेष भूमि के लिए जिला प्रशासन को रेलवे से जमीन का रेखांकन प्राप्त नहीं हुआ है। झाबुआ जिले में प्रभावित रेलमार्ग की लम्बाई 60.70 कि.मी. है। इसमें से मात्र 1 1.34 कि.मी. भूमि का अधिग्रहण हो चुका है। छोटा उदयपुर-धार इस क्षेत्र की दूसरी स्वीकृत परियोजना है। इस परियोजना की नींव तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी ने रखी थी। तमाम प्रयासों के बावजूद इस परियोजना के बारे में रेलवे से कोई प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुई है। इन रेल परियोजनाओं के संबंध में सरकार से मेरा आग्रह है कि इन्हें पूरा करने हेतु तत्काल प्रभावी कदम उठाए जाएं जिससे धार-झाबुआ एवं अलिराजपुर जिलों के आदिवासी लोग अपने क्षेत्र में रेल आवागमन देख सकें।

(इति)

Re: Street vendors

श्री रमेश चन्द्र कौशिक (सोनीपत): महोदय, वैश्वीकरण के युग में बढ़ती जनसंख्या में बढ़ोत्तरी का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केन्द्रों में तेजी से बढ़ रहे पलायन के रूप में हुआ है। शहरीकरण की इस तेज गति ने रोजगार की समस्याओं को जन्म दिया है। शहरी श्रम शक्ति अर्थव्यवस्था के शहरी क्षेत्र में उत्पन्न रोजगार की तुलना में तेजी से फैलती है। इसलिए शहरी केंद्र अपनी रोजी-रोटी कमाने के अवसरों की तलाश में, औपचारिक नौकरियों में, सभी कर्मचारियों को रोजगार प्रदान करने में सक्षम नहीं है, इसलिए उन्हें शहरों में अनौपचारिक क्षेत्र में अन्य अवसरों को खोजने के लिए मजबूर किया जाता है। अनौपचारिक क्षेत्र विशेष रूप से विकासशील देशों में कई देशों में अर्थव्यवस्था और श्रम बाजार के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। यह रोजगार सृजन, उत्पादन और आय सृजन में प्रमुख भूमिका निभाता है। कार्यबल के इस अनौपचारिक क्षेत्र के भीतर, स्ट्रीट वेंडर प्रवासियों को रोजगार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शहरी क्षेत्र में वेंडिंग में प्रवेश में आसानी होती है। एक निश्चित स्थान या स्टोर के बिना एक चर रथान में अस्थायी संरचना में किये गये ऑपरेशन के छोटे पैमाने पर वेंडिंग के लिए कोई भी निश्चित समय देखे बिना विक्रेता अपने उत्पादों को असंगठित और प्रतिस्पर्धी बाजार के माहौल में बेचते हैं। अक्सर, वेंडिंग सरकारी नियमों के विपरीत एक अवैध आधार पर होता है। यह अपनी क्रेडिट जरूरतों के लिए औपचारिक वित्तीय संस्थानों पर निर्भर नहीं करता है। दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए शुरूआती निवेश और जोखिम सहयोगी के रूप में कम है, लेकिन इन सड़क विक्रेताओं के कारण बड़ी संख्या में लैंडयूज, सुरक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे से जुड़ी समस्याएं पैदा होती हैं।

(इति)

Re: Need to check release of polluted water into Indira Gandhi Canal

श्री राहुल कस्वां (चुरू): इंदिरा गांधी कैनाल का उदगम पंजाब में से होने के कारण नहर के पानी के अंदर पंजाब राज्य के विभिन्न जिलों से शहर के गंदे नालों का पानी इंदिरा गांधी नहर में छोड़ा जा रहा है जिससे पानी पूरी तरह गंदा होता जा रहा है। राजस्थान के पंजाब से स्पर्श जिले श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू व बीकानेर की जनता न केवल इस पानी को सिंचाई के लिए प्रयोग करती है बल्कि पीने के लिए भी उपयोग भी लेती है। उक्त गंदा पानी पीने से इन जिलों के लोगों को भयंकर बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व चुरू जिले के लोग पिछले कई दिनों से कैंसर जैसी भयंकर बीमारियों से जूझ रहे हैं तथा आये दिन सैंकड़ों केस सामने आ रहे हैं।

अतः मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि उक्त दूषित पानी को गंदा करने से रोकने के लिए पंजाब सरकार को निर्देश दिया जाये

(इति)

Re: Need to establish Santhali medium Eklavya Schools & Jawahar Navodaya Vidyalayas in Jhargram parliamentary constituency, West Bengal

श्री कुनार हेमब्राम (झाड़ग्राम): अध्यक्ष महोदय, मैं अपके माध्यम से मेरे संसदीय क्षेत्र की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। मेरे संसदीय क्षेत्र झाड़ग्राम में एकलव्य तथा नवोदय पैटर्न के संथाली मीडियम स्कूल, खोलने के लिए धनराशि आबंटित किया जाए। नवोदय पैटर्न के संथाली मीडियम स्कूल नहीं होने के कारण वहां के बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं।

अतः आपके माध्यम से इससे संबंधित मंत्रालय को कहना चाहता हूं कि मेरे संसदीय क्षेत्र में एकलव्य तथा नवोदय पैटर्न के संथाली मीडियम स्कूल खोला जाएं जिससे वहां के छात्र छात्राएं संथाली भाषा में पढ़ाई कर सकें।

(इति)

Re: Need to construct overbridges on Banda Manikpur railway route in Uttar Pradesh

श्री आर. के. सिंह पटेल (बांदा): देश में तथा मेरे संसदीय क्षेत्र अन्तर्गत रेलवे द्वारा राजकीय राजमार्गों एवं ग्रामीण मार्गों पर रेल मंत्रालय द्वारा रेलवे क्रासिगों में अन्डर ग्राउंड मार्ग (पाताली पुलों) का निर्माण कराया गया है जिसमें बरसात के समय वर्षा का पानी भर जाने से आवागमन बाधित होता है तथा पानी भरने से वहां दुर्घटनाएं हो रही हैं। मेरे संसदीय क्षेत्र में बांदा से माणिकपुर के बीच रेलवे लाइन पर कई अन्डर पास हैं जहां इस समय बड़ी घटनायें घट रही हैं।

अतः मैं रेल मंत्री जी से मांग करता हूँ कि उपरोक्त रेल खण्ड पर उपरगामी पुल बनाये जाने हेतु आवश्यक निर्देश दें जो जनहित में अति आवश्यक हैं। (इति)

Re: Water problem in Jaipur, Rajasthan

श्री रामचरण बोहरा (जयपुर): मैं मेरे संसदीय क्षेत्र जयपुर में पानी की समस्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। जयपुर शहर को पानी उपलब्ध करवाने का मुख्य जलस्रोत रामगढ़ बॉध, वर्तमान में अपने बुरे दौर से गुजर रहा है जिसके लिए प्रमुखतः जिम्मेदार राज्य सरकार का लगातार अक्रियशील बने रहना है। महोदय, यह वही रामगढ़ बॉध है जहाँ 1982 में नौकायन प्रतियोगता हुई थी, यह वहीं रामगढ़ बॉध है जिससे जयपुर शहर की जलापूर्ति होती थी। महोदय, बॉध की प्रमुख समस्या कैचमेंट ऐरिया का निस्तारण नहीं करना है जबकि माननीय उच्च न्यायालय ने 2017 में कैचमेंट एरिया को साफ करने का निर्देश दिया है। अध्यक्ष महोदय सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बावजूद खाली नहीं करवाया जा सका और बांध में जल भराव के मार्ग के प्रतिरोधों को नहीं हटाया गया। महोदय, इसके अलावा वर्तमान में शहर को पानी उपलब्ध करवाने का एकमात्र स्रोत वीसलपुर बांध है, उसके उपर पूर्णतः निर्भर नहीं रहा। जा सकता। जैसा कि आप जानते हैं मानसून की समस्या से सर्वाधिक त्रस्त राज्य राजस्थान है।

अतः केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि वह राज्य सरकार के साथ मिलकर भावी योजना निर्मित करे ताकि आमजन को गरिमामय, स्वास्थ्य जीवन उपलब्ध करवाकर संवैधानिक व लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनरस्थापना की जा सके और रामगढ़ बांध अपने पुराने गौरव, पुराने वैथव को प्राप्त कर सके वहां जलभराव से जल संकट की समस्या के निराकरण के साथ हजारों लाखों पर्यटकों की आवाजाही बढ़ेगी और पुनः वह अपने वैभव को प्राप्त कर सकेगा।

(इति)

Re: Need to declare Mangarh Dham in Banswara (Rajasthan) a site of national importance

श्री कनकमल कटारा (बांसवाड़ा): मैं सरकार से मानगढ़ धाम बांसवाड़ा (राजस्थान) को राष्ट्रीय दर्जा दिलाने की मांग करता हूँ।

(इति)

Re : Mosques and graveyards being built on government land in Delhi

SHRI PARVESH SAHIB SINGH VERMA (WEST DELHI): For the last 20 years, there has been a trend of rnosques and graveyards being constructed on government land in Delhi. The land belonging to various government departments like DUSIB, Flood Deptt., Gram Sabha, MCD, DDA, and so on have been illegally allotted or acquired to build mosques and graveyards which are otherwise meant for community purposes like parks, public toilets, Dhallaos, community centres, etc. A list of 54 such illegal constructions across Delhi and

other parts of Delhi has been identified and submitted to the Lieutenant Governor of Delhi. Therefore, it is of extreme importance that the Central Government, through the Lieutenant Governor of Delhi form a committee consisting of officials from various government departments under the headship of District Magistrate of the concerned area and prepare a report after detailed enquiry.

(ends)

Re : A dumping ground in Jalpaiguri district, West Bengal

DR. JAYANTA KUMAR ROY (JALPAIGURI): Today while the Government is focusing on a clean and green environment, a massive dumping ground in Jalpaiguri district has been spread over ten acres of land, surrounded by 18 institutions.

The ground water has been contaminated to such an extent that Black grease comes out of the taps in the locality. Further, the dumping ground waste is being burnt on a regular basis which pollutes the environment.

The Fafri Forests and the adjoining river has now been contaminated by the particular dumping ground.

I would like to remind that the particular dumping ground is also a matter of National Security as 3 Gas Pipe Lines pass through the Dumping Ground and often cracks in the pipe line have been detected.

(ends)

Re: Need to run long distance trains via Sikar district in Rajasthan

श्री सुमेधानन्द सरस्वती (सीकर): सीकर जिला धार्मिक आध्यात्मिक, शिक्षा एवं व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिला है। यहां खाटू श्यामजी, सालासर बालाजी, माताजी एवं अन्य कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं। देश-विदेश से इन धार्मिक स्थलों पर लोगों का आना-जाना रहता है। सीकर जिला सैनिकों का जिला है एवं शिक्षा नगरी है। इसलिए सीकर जिले के रींगस एवं सीकर स्टेशनों से होते हुए लंबी दूरी की नई ट्रेने चलवाने की कृपा करें।

(इति)

Re: Construction of roads under Bharat Mala project in Bihar

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद): महोदय, भारतमाला योजना के अंतर्गत बिहार के औरंगाबाद-अरवल–पटना-दरभंगा जयनगर पथ का निर्माण प्रस्तावित है। वर्तमान प्रस्ताव औरंगाबाद-अरवल–जहानाबाद-पटना और आगे है, जो बिल्कुल गलत, ज्यादा समय और ईंधन को बर्बाद करने वाला है। जबकि डोभी-गया-जहानाबाद-पटना चार पथीय सड़क निर्माणाधीन है। वर्तमान प्रस्ताव के अनुसार औरंगाबाद जिले को सड़क का कोई लाभ नहीं मिलेगा। इसलिए कि अरवल से जहानाबाद होकर अधिक दूरी होने के कारण कोई पटना जाना नहीं चाहेगा। औरंगाबाद से पटना के लिए सबसे कम दूरी वाला रास्ता अरवल, महाबलीपुर, रनिया तालाब, बिकम, नौबतपुर, फुलवारीशरीफ होते हुए पटना जाने का है। अतः मैं मांग करता हूं कि भारत माला के तहत औरंगाबाद से दाऊदनगर अरवल, महाबलीपुर, रनिया तालाब, बिकम, नौबतपुर, फुलवारीशरीफ होते हुए ही चार पथीय सड़क का निर्माण कराया जाये, जो सुविधाजनक हो और लोगों का समय और आयातित ईंधन की भी बचत कर सके।

(इति)

Re : Need to decommission more than 60 years old dams in the country

ADV. DEAN KURIAKOSE (IDUKKI): The Tiware Dam in Ratnagiri district had collapsed resulting in deaths of 18 people and several others missing. According to the news, the 19-year-old dam was damaged. The relatives of the grieved families have lost their dearest ones for forever. Based on the above incident, steps should be taken to decommission the existing dams in the country which are more than 60 years old. A dam is situated in Idukki, and the state has no objection to the supply of water to Tamil Nadu, but our concern is to save the lives and property in the five districts of Kerala which are under threat. I would like to point out that, there is no maintenance of the Dam and it is in a critical stage. It is, therefore, urged that Government take immediate steps to decommission the dams which are more than 60 years old in the country.

(ends)

Re : Sabari Railway Line project in Kerala

SHRI ANTO ANTONY (PATHANAMTHITTA): I request the Government to consider the Sabari Railway Line Project in Kerala as a special case and do the needful in realizing the project. The proposed project connects the Sabarimala Pilgrim Centre with the Indian Railways so that the devotees across the country could come here without any difficulties. The Sabari Project started during the 1997-98 period with an outlay of Rs. 550 crore and the estimated expense of the project was increased to Rs. 2815 crore. It should be noted that land acquisition is one of the biggest challenges in Kerala as almost every part of the State is densely populated. The land acquisition is a major issue for implementation of this project. Every year, the Government will earmark one or two crore for this project which, is a waste. As it was declared as a Central Government project, Government should come forward and implement this project soon.

(ends)

Re: Rise in fraudulent and misleading advertisements

SHRI BENNY BEHANAN (CHALAKUDY): The rise in fraudulent and false advertisements on television channels and print media are misleading the general public. It is observed that various television channels and print publications are blatantly violating norms laid down in the Drug and Magic Remedies (Objectionable Ads) Act, 1954, and the Drugs and Cosmetics Act, 1940. I would urge the government to initiate stringent action against such broadcasters and enforce a stricter regulation of visual and print media against promotion of false and misleading advertisements.

(ends)

Re: Six laning of Karur to Coimbatore road

SHRI K. SHANMUGA SUNDARAM (POLLACHI): I would like to draw your kind attention towards building of new six lane road from Karur to Coimbatore on NH 81. We already have four lane road from Karur to Coimbatore. The government decided to widen it into six-lane road.

The widening of the existing Coimbatore- Karur road was dropped because land acquisition was turning out to be more expensive. The farmers, who have lands between Karur and Coimbatore, will be affected because of this new six-lane road. The project will require almost 3,000 acres of land, most of which are fertile agricultural lands and farmers own between two and three acres of land and are dependent on farming for a livelihood.

The existing road can be widened instead of converting into 6 lane with huge investment.

The construction of the Coimbatore- Palakkad NH-67 is going on for the last six to seven years but the work is still uncompleted. I urge the government to allocate required fund immediately to finish the remaining work at the earliest.

(ends)

Re: Opening of Kendriya Vidyalaya at Cuddalore, Tamil Nadu

SHRI T.R.V.S. RAMESH (CUDDALORE): There are six assembly constituencies namely, Tittakudi, Vridhachalam, Neyveli, Cuddalore, Panruti and Kurinjipadi in Cuddalore Lok Sabha Constituency.

There is only one Kendriya Vidyalaya in entire Cuddalore Parliamentary Constituency. Kendriya Vidyalaya is situated in Neyveli Assembly constituency which is at a distance of 45 kms. from Cuddalore town. So, it is difficult for students of Cuddalore town to visit Neyveli daily for study.

I, therefore, request you to grant approval for opening of a new 2nd Kendriya Vidyalaya at Cuddalore town in my constituency so that students residing in and around Cuddalore town could be benefitted.

(ends)

Re: Disinvestment of public sector undertakings

SHRI SUDIP BANDYOPADHYAY (KOLKATA UTTAR): 72 Public Sector Undertakings are going to be disinvested .It includes AIR INDIA also.

AIR INDIA is the most prestigious AIRLINE in the world. Along with this BSNL, CLW(Chittaranjan Locomotive Works, West Bengal), Braithwate, Burn Standard all are proposed to be sold even to the Foreigners.

Loss making PSUs should not be considered as burden to the Govt. These are to be taken care of so that these well reputed organisations could survive and stand on their own feet.

National assets have been proposed in the Budget to bring back one lakh five thousand crores. We vehemently oppose this Budget proposal placed on the floor of the House.

We vehemently oppose the idea of Disinvestment in AIR INDIA and other CPSUs.

(ends)

Re: Need to provide better rail connectivity to Purnia in Bihar

श्री संतोष कुमार (पूर्णिया): बिहार का सीमांचल और कोशी क्षेत्र को पूर्णियॉ केन्द्र बिन्दु है, वहां से एक भी सुपरफास्ट ट्रेन नहीं है। पूर्णिया से दिल्ली के लिए भी कोई गाड़ी नहीं है, मात्र एक ट्रेन 12487/12488 (सीमांचल एक्सप्रेस) चलती है जिसका परिचालन और साफ-सफाई ठीक नहीं है।. सीमांचल और कोशी क्षेत्र में करीब आठ-नौ जिले पड़ते हैं, इस क्षेत्र के लोग अपना रोजगार एवं जीविकोपार्जन हेतु काफी संख्या में दिल्ली रहते हैं।

सीमांचल से पटना की दूरी लगभग 400 कि0मी0 पड़ता है। पटना राजधानी होने के कारण आम जनता को पटना आना-जाना लगा रहता है। सुबह के समय में कोई भी ट्रेन नहीं है जिसके कारण आम जनता को पटना पहुंचने में काफी कठिनाई झेलनी पड़ती है, जबकि एक मात्र सड़क मार्ग ही सहारा है।

अतः मैं सदन के माध्यम से माननीय रेल मंत्री जी से मांग करता हूं कि पूर्णिया से दिल्ली के लिए एक सुपरफास्ट ट्रेन चलाई जाए एवं पूर्णिया से पटना के लिए एक इन्टरसिटी ट्रेन जो कटिहार से चलती है उसका विस्तार पूर्णियां जं. तक किया जाए ताकि आम जनता को सुविधा मुहैया हो सके।

(इति)

Re: Establishment of mega cluster for wood carving industry of Saharanpur, Uttar Pradesh

श्री हाजी फजलुर रहमान (सहारनपुर): लकड़ी पर नक्काशी से विदेशों में अपनी विशेष पहचान बनाने वाले सहारनपुर काष्ठ कला उद्योग से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से 2 लाख लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। इस उद्योग से 1 0 0 0 करोड़ रुपए का निर्यात होता है, जिससे भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और सरकार को राजस्व में बढ़ोतरी होती है।

सहारनपुर का काष्ठ कला उद्योग दुनिया के नक्शे पर हस्तकला के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही हैण्डीक्राफ्ट मेगा कलस्टर योजना के अंतर्गत जैसे उत्तर प्रदेश में संतकबीरनगर, लखनऊ और बरेली में मेगा कलस्टर स्थापित किए गए हैं। इसी तरह सहारनपुर काष्ठ कला उद्योग को वस्त्र मंत्रालय की योजना के अंतर्गत मेगा कलस्टर के रूप में स्थापित किया जाए जिससे काष्ठ कला उद्योग के उत्पादन व निर्यात में वृद्धि होगी तथा लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

(इति)

Re: Setting up of Kendriya Vidyalayas in Nagarkurnool Parliamentary Constituency of Telangana

SHRI RAMULU POTHUGANTI (NAGARKURNOOL): I would like to draw kind attention of the House towards the need to set up new Kendriya Vidyalaya one each in the Districts of Nagarkurnool, Jogulamba, Gadwal and Wanaparthy in my Nagarkurnool Parliamentary Constituency which is having 7 Assembly segments in the state of Telangana.

In this regard, I would like to bring to your kind notice that my Parliamentary Constituency is having 15 Lakh voters and is the most economically backward area in the State. At present, there is no Kendriya Vidyalaya in the said Parliamentary Constituency.

Kendriya Vidyalayas have become symbol of quality education at a very nominal fee which is affordable for the middle class and poor people. In my Parliamentary Constituency, most of the people belong to SC, ST, Minorities and they cannot afford to send their wards to private schools due to heavy fees. My Constituency people have represented me several times in this regard and there is heavy pressure on me for the establishment of Kendriya Vidyalayas.

Hence, I request the Hon'ble Minister of Human Resource Development, to kindly consider for setting up of Kendriya Vidyalaya one each in the Districts of Nagarkurnool, Jogulamba, Gadwal and Wanaparthy in my Nagarkurnool Parliamentary Constituency. (ends)

Re: Setting up of industries in Ramanathapuram parliamentary constituency, Tamil Nadu

SHRI K. NAVASKANI (RAMANATHAPURAM): My constituency, Ramanathapuram is a very backward district. Perhaps, Ramanathapuram may be the only district in the country where there is no major industry. Thousands of youth are unemployed and are finding it very difficult to manage their lives. Two decades back there was a proposal to establish a major industry in each district of the country, but unfortunately Ramanathapuram has been left out. It is understood that preliminary survey was conducted to assess the potential for setting up of a Chemical Industry by the Central Government. But later, it was dropped for reasons not known to anyone. On the one hand, our government says that we are creating employment, but on the other hand no provision or mechanism is made to create employment. The youth have to go to faraway places like Mumbai, Delhi etc. for employment. I urge upon the government to set up a major industry in Ramanathapuram or at least set up a chemical industry, for which a survey has already been made. I also request the government to encourage setting up of industries. Tax Holiday may be given for 10 years, so that scores of industrialists would be motivated to set up industries. Huge land bank is available for setting up of major and large industries in Ramanathapuram district. Taking this into account, I request the Central Government to set up an industry at the earliest in my constituency.

(ends)

Re: Need to provide adequate compensation to farmers in Rajasthan

श्री हनुमान बैनिवाल (नागौर): माननीय अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से राजस्थान के किसानों की एक महत्वपूर्ण मांग की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए अवगत करवाना चाहता हूं कि भारत सरकार के गृह मंत्रालय के पास लंबित प्रस्ताव के संबंध में अवगत कराते हुए यह बताना चाहता हूँ कि राजस्थान में खराब हुई फसल से प्रभावित किसानों की संख्या का आंकलन गिरदावरी रिपोर्ट के बाद किया जाता है परन्तु उच्च स्तरीय समिति द्वारा कृषि अनुदान की राशि वर्ष 2010 में कृषि गणना को आधार मानकर लघु व सीमांत काश्तकारों की संख्या ली जाती है, वर्तमान में बहुत कम है और इसके कारण भारत सरकार के द्वारा कृषि अनुदान मद में राज्य सरकार द्वारा प्रेषित मांग के क्रम में बहुत कम राशि की स्वीकृति की जाती है जिस वजह से कृषि आदान अनुदान वितरण में कठिनाई आती है और किसानों में रोष व्याप्त होता है इसलिए मेरा आपके माध्यम से गृह मंत्री जी से आग्रह है कि आपदा प्रबंधन विभाग को निर्देशित करके राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव द्वारा 11 मई 2016 को भेजे गए प्रस्ताव/पत्र के साथ नवीनतम ऑकड़े मंगवाकर कृषि आदान–अनुदान की राशि को बढ़ाकर स्वीकृत किया जाए ताकि किसानों को राहत मिल सके और फसल खराब होने की स्थिति में किसान को अनुदान मिल सके। (इति)

विशेष उल्लेख जारी

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली): अध्यक्ष महोदय, मेरा जीरो ऑवर चार दिन से लग रहा है, पानी की बहुत गंभीर समस्या है। एक तरफ पानी पीने को नहीं मिल रहा है और दूसरी तरफ बाढ़ आ रही है। दिल्ली की सरकार को पानी देने की जिम्मेवारी है। ...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य जब जल पर चर्चा होगी तब आपको बोलने का मौका दिया जाएगा। ...(व्यवधान)

श्री रमेश बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली): अध्यक्ष महोदय, मैं तीन दिन से जीरो ऑवर लगा रहा हूं, अनऑथराइज्ड कॉलोनी में पानी की व्यवस्था नहीं है। पानी जीवन है। ...(व्यवधान) आर्टिकल 21 के अंदर अगर कोई सरकार पानी नहीं देगी तो उस सरकार को रहने का राइट नहीं है। लोग पानी के बिना मर रहे हैं। ...(व्यवधान)

आप एक ऐसी रूलिंग जल मंत्री या किसी अन्य को दें, दिल्ली देश की राजधानी है, पीने का पानी अगर लोगों को नहीं मिलेगा, माताएं व बहनें एक-एक बजे तक पानी के लिए खड़ी रहती हैं। यही मेरा आपसे निवेदन है।

माननीय अध्यक्ष: मैं माननीय पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर से आग्रह करूंगा कि जब मैंने माननीय मंत्री जी का नाम बुलाया है तो आप अपने सदस्यों को समझाने की कोशिश कीजिए। सदन में यह उचित नहीं है।

माननीय मंत्री महोदय

माननीय सदस्य, माननीय मंत्री जी जवाब दे रहे हैं आपने रात को ग्यारह बजे तक सदन चलाया है। माननीय मंत्री जी जवाब दे रहे हैं तो आप शांति से सुनिए।

सामान्य बजट – अनुदानों की मांगें
ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा पंचायती राज मंत्रालय
कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय – जारी

*SHRI KODIKUNNIL SURESH (MAVELIKKARA):

* Laid on the Table.

*SHRI P. RAVEENDRANATH KUMAR (THENI):

* Laid on the Table.

***डॉ. भारतीबेन डी. श्याल (भावनगर):**

* Laid on the Table.

***श्री बालूभाऊ उर्फ सुरेश नारायण धानोरकर (चन्द्रपुर):**

* Laid on the Table.

*DR. SUBHASH RAMRAO BHAMRE (DHULE):

* Laid on the Table.

***श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल (महाराजगंज):** माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं ग्रामीण विकास तथा कृषि और कल्याण मंत्रालय के अनुदानों की मांगों का समर्थन करते हुए आपके माध्यम से मंत्री का ध्यान अपने लोक सभा क्षेत्र महाराजगंज, बिहार की समस्याओं की तरफ दिलाना चाहता हूं।

1. प्रधान मंत्री ग्रामीण सड़क योजना के माध्यम से बन रहे सड़कों के निर्माण सही तरीके से किया जाए ताकि सड़क बनने के बाद निर्धारित समय तक ठीक-ठाक रह सके। ऐसा देखा जाता है कि समय से पहली सड़क में गड्ढे बन जाता है, जिससे आम जनता को चलने में काफी कठिनाई होती है।
2. मैं अपने लोक सभा क्षेत्र में पीएमजीएसवाई से बने सड़कों का उच्च स्तरीय गठित टीम से जांच कराने की मांग सरकार से करता हूं।
3. जो सड़कें तीन साल पहले बनी है और तीन साल के अंदर ही खराब हो गई। ऐसे संवेदकों एवं अभियंताओं के ऊपर जिनकी मिलीभगत के कारण घटिया निर्माण कार्य हुआ है, वैसे संबंधित लोगों पर जांच के उपरांत कठोर कार्रवाई की जाए।
4. जो सड़क अभी तक नहीं बन पाई है, उसे तुरंत पीएमजीएसवाई के माध्यम से बनवाया जाए।
5. मेरे क्षेत्र के सभी प्रखंडों में किसानों के द्वारा उत्पादित फलों एवं सब्जियों के भंडारण हेतु शीतागारों की स्थापना की जाए।
6. मनरेगा के माध्यम से कराए जा रहे कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए, इसके साथ ही मेरे लोक सभा क्षेत्र के अंतर्गत जलालपुर प्रखंड में इस योजना से कराए गए कार्यों का उच्च स्तरीय जांच कराया जाए और जाचोपरांत घटिया कार्य कराने वाले संबंधित अधिकारियों पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाए।
7. प्रधान मंत्री आवास योजना से बन रहे आवासों की गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आज भी बिचौलियों द्वारा लाभुकों का शोषण किया जा रहा है। उच्च स्तरीय जांच टीम बना कर जांच कराई जाए और दोषियों के ऊपर कानूनी कार्रवाई की जाए।
8. प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत किसानों को मिलने वाले लाभ में हो रही अनियमितता पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इस योजना के तहत निर्धारित मानक के अनुसार किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए चयन में काफी अनियमितता होती है जिस कारण असली लाभुकों का चयन कम हो पाता है। इस योजना में बैंक, ब्लॉक और ब्रोकर की उच्च स्तरीय कमटी बनाकर सांठगांठ की जांच की जाए एवं जांचोपरांत दोषियों के ऊपर कानूनी कार्रवाई की जाए।
9. मेरे संसदीय क्षेत्र के सभी प्रखंडों में एक-एक स्थैतिक मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं की स्थपना की जाए ताकि किसानों को मिट्टी की जांच कराने के बाद उस अनुसार फसल लगाने की सुविधा मिले।

आपसे आग्रह है कि उपरोक्त सभी कार्यों पर शीघ्र आवश्यक कार्रवाई करने का कष्ट करें।

---

* Laid on the Table.

*SHRI G.M. SIDDESHWARA (DAVANAGERE) Hon'ble Speaker Sir,

Mahatma Gandhi ji said the soul of India is in the rural parts of the country. To make the life better for our farmers, the Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi Ji has implemented several programmes. The Union Government has emphasized on private investment in infrastructure for agriculture to achieve the target of doubling the income of farmers by 2022. This budget has given priority to zero budget farming and also to investment in agro-based industries. Besides this, the Government has proposed to provide better marketing avenues, remunerative prices to agriculture produces, setting up of 10 thousand farmer organizations all over the country, all these are welcome steps.

The Union Government has also taken steps to encourage fodder production, preservation and conservation of milk, establishment of e-market, eNAM in the country. Our Hon'ble Prime Minister is taking all these pro-farmer initiatives to strengthen the hands of our *Annadata*, the food provider. As far as social security is concerned our NDA Government under the able leadership of Shri Narendra Modi ji has given a significant priority to farmers by taking measures such as Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana, etc. I appreciate the government for its commitment to extend the social security cover to farmers also.

I would like to mention that our Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modiji introduced various pro-farmer schemes during the last five

years. Achieving self sufficiency in the production of Neem -coated urea is one of them. It has helped to double the yield of agricultural crops.

Our Government has issued crores of soil health cards to farmers to enable them to maintain the fertility of their land at the desired level. Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana has been successfully implemented and more areas have been covered under the irrigation scheme. About dozens of such programs brought new hope in the life of our farmers. I wholeheartedly congratulate our Hon'ble Prime Minister for all these achievements.

---

* Laid on the Table/Original in Kannada.

Respected Speaker Sir, the Government may introduce as many schemes as it can be, but the responsibility of implementation of schemes is lying on the officials of the Departments.

I would like to point out that PMFBY is not effectively implemented in my District, due to negligence on the part of the officials of the Government and also the authorities of insurance companies, which are selected by the State Government. Farmers are deprived of the benefits of the PMFBY in my Davanagere Lok Sabha Constituency. There were 31176 farmers registered under the said Bima Yojana in the year 2016-17. They paid Rs.17.80 crores as premium for their crop insurance policy. The insurance companies were to distribute about Rs.52 crores to the farmers. However, only Rs.48 crores, were distributed to 27557 farmers. 1140 farmers are yet to receive Rs.4.15 crores from the insurance companies.

Similarly during the year 2017-18, about 79711 farmers were registered for Insurance cover and paid Rs.70.72 crores as premium. However, the insurance companies have paid about Rs.12.20 crores insured money to 11185 farmers. However, remaining 68526 farmers were not paid their due amount by the insurance companies. These many farmers were disqualified to receive the insurance amount due to negligence on the part of insurance companies.

For the year 2018-19 about 12285 farmers were registered for insurance cover and paid Rs.10.70 cores as premium. However, till date the insurance money is not sanctioned.

In the current year 2019-20 only 4850 farmers have been registered under PMFBY. The decline in the number shows that the scheme is not implemented successfully due to negligence of the officials of the department and also of the insurance companies.

Hon'ble Speaker, Sir, for the last one and half year farmers have not been paid their due amount. Under these circumstances, how can farmers come forward to continue with the insurance scheme by paying the premium? For the last two years there is severe drought in Davanagere. The Government of Karnataka has officially declared it as a drought-hit district for the two consecutive years. Even though the insurance companies are not paying the beneficiary farmers their legitimate amount covered under the insurance schemes.

Another point I would like to mention that while preparing the list of crop loss at the Gram Panchayat level, the officials concerned are not conducting the survey in an appropriate manner. The wrong entries are made by them. For example in their report the name of 'Paddy' is entered in place 'Jowar'. It is due to such irregularities and wrong entries made by the officials of the department, the poor farmers are deprived of their due benefits under the insurance scheme.

So, I would like to suggest that the Government should consider to entrust the responsibility of crop insurances schemes to government sponsored insurance companies instead of involving the private insurance companies into it.

Hon'ble Speaker, Sir, through you, I would like to request the Union Government to issue necessary directions to the State Governments to ensure proper implementation of the Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana and also to release all the arrears of the farmers under the insurance scheme to protect the interest of the farmers.

Thanking you

(ends)

***श्री सुनील कुमार सिंह (चतरा):**

*Laid on the Table.

*SHRI S.C. UDASI (HAVERI):

* Laid on the Table.

***श्री विष्णु दयाल राम (पलामू):**

* Laid on the Table.

***श्रीमती शारदाबेन अनिलभाई पटेल (महेसाणा):**

* Laid on the Table.

***श्रीमती रक्षा निखिल खडसे (रावेर):**

* Laid on the Table.

***कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर):**

* Laid on the Table.

***श्रीमती वीणा देवी (वैशाली):**

* Laid on the Table.

***श्रीमती गीताबेन वजेसिंहभाई राठवा (छोटा उदयपुर):**

* Laid on the Table.

*DR. HEENA VIJAYKUMAR GAVIT (NANDURBAR):

* Laid on the Table.

***श्री प्रभुभाई नागरभाई वसावा (बारदौली)**

* Laid on the Table.

***श्री अजय टम्टा (अल्मोड़ा):**

* Laid on the Table.

*SHRI RAHUL RAMESH SHEWALE (MUMBAI SOUTH-CENTRAL):

* Laid on the Table.

1223 बजे

कृषि और किसान कल्याण मंत्री; ग्रामीण विकास मंत्री तथा पंचायती राज मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर): माननीय अध्यक्ष महोदय, आज ग्रामीण विकास विभाग और किसान कल्याण मंत्रालय की अनुदान मांग संख्या 1284/85 पर अपनी बात रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। कृषि और ग्रामीण विकास दोनों विषय हम सभी के जीवन से जुड़े हुए हैं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि दोनों विषयों पर सदन के सदस्यों ने बड़ी संख्या में चर्चा करने में रुचि दिखाई। यह चर्चा 9 घंटे से ऊपर चली और लगभग 131 सदस्यों ने इस चर्चा में भाग लिया।

अध्यक्ष महोदय, इतनी बड़ी संख्या में सदस्यों ने चर्चा में भाग लिया, सुझाव दिए और उनके मूल्यवान सुझाव से सरकार अवगत हुई। इसके लिए मैं सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

(1225/SK/SRG)

आम तौर पर अनुदान की मांगों के विषय में सदन की समय सीमा को एक सीमा तक ही बढ़ाए जाने का ही रिकॉर्ड रहा है। आप अध्यक्ष हैं, आप कृषि और ग्रामीण जनजीवन को समझते हैं, नए सदस्यों की भावनाओं को भी समझते हैं, विषय की गंभीरता को भी समझते हैं। इन सबको ध्यान में रखते हुए आपने कल 12 बजे तक सदन को चलाने की सीमा बढ़ाई, आप स्वयं रात में 12 बजे तक उपस्थित रहे और सचिवालय के सभी कर्मचारी इसमें योगदान करते रहे, मैं आपका और सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, चर्चा का प्रारंभ श्री उत्तम कुमार रेड्डी जी ने किया। श्री रमापति राम त्रिपाठी, एस.एस. पलानीमणिक्कम, श्रीमती प्रतिभा मंडल, श्री पोचा ब्रहमानंद रेड्डी, श्री देवेन्द्र सिंह जी भोले, श्रीमती दर्शना जरदोश जी, श्री नरेन्द्र कुमार जी, श्री भागीरथ चौधरी, श्रीमती रंजनबेन जी, श्री के. सुब्बारायण जी, श्री एस. ज्ञानतिरावियम, श्री प्रतापराव जाधव, श्री कौशलेन्द्र कुमार जी, श्रीमती पूनमबेन जी, डॉ. राम शंकर कठेरिया, श्री सुधाकर तुकाराम, श्री विवेक शेजवलकर, अनुराग शर्मा जी, रितेश पाण्डे जी, श्री जगदम्बिका पाल जी, श्री कोथा प्रभाकर रेड्डी, श्री बी.वाई. राघवेन्द्र जी, श्रीमती रेखा वर्मा, श्री तराली रंगैया जी, सप्तगिरी उलाका जी, डॉ. अमोल कोल्हे, श्री मितेश रमेशभाई जी, श्री राजु बिष्ट, डॉ. अमर सिंह, श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती अपरूपा पोद्दार, श्री हसनैन मसूदी जी, श्री अशोक महादेवराव, डॉ. अरविंद शर्मा जी, श्रीमती शोभा जी, श्री जयदेव गल्ला जी, चंद्र प्रकाश जोशी जी, श्री राकेश सिंह जी, श्री महताब जी, श्री गणेश सिंह जी, श्री तीर्थ सिंह जी, श्री रमेश मांझी जी, संजय काका पाटिल, श्री टी.आर. परिवेन्धर, श्री ई.टी. मोहम्मद बशीर जी, श्री अजय मिश्रा, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, श्री जसवंतसिंह जी, एडवोकेट आरिफ साहब, डॉ. संघमित्रा मौर्या, पी.पी. चौधरी साहब, डॉ. डी. रविकुमार, श्रीमती एस. जोतिमणि, श्रीमती कविता जी, श्रीमती सुप्रिया सूले जी, श्री सुनील कुमार मंडल, संतोख सिंह चौधरी जी, देवजी पटेल साहब, जी.एम. सिद्देश्वरा जी, इम्तियाज़ जलील सईद जी, डॉ. सुजय, विखेपाटिल जी, हनुमान बैनिवाल जी, निशिकान्त जी, श्री खगेन मुर्मु जी, एन.के. प्रेमचन्द्रन जी, नारन भाई काछड़िया, श्रीमती रीति पाठक जी, श्री कास्मे सर्दिन्हा जी, श्री नवनीत रवि राणा जी, श्री मुकेश राजपूत जी, दुष्यंत सिंह जी, श्रीमती चिंता अनुराधा

जी, श्री सुखबीर जौनपुरिया, श्री बैन्नी बेहनन, श्री जुगल किशोर जी, श्री वी. वैथिलिंगम, श्रीमती गीता विश्वनाथ वांगा जी, श्री नलिन कुमार कटील जी, श्री सुनील कुमार सोनी जी, श्री बिद्युत बरण महतो जी, श्रीमती रमा देवी, श्री पी. रविन्द्रनाथ कुमार जी, श्रीमती अन्नपुर्णा देवी, श्री एंटो एन्टोनी, बदरुद्दीन अजमल जी, श्री जनार्दन मिश्रा जी, सुश्री अगाथा संगमा जी, राहुल कस्वां जी, श्री जसबीर गिल, कपिल पाटिल, श्री थोल तिरुमावलवन, देवुसिंह चौहान, रतन मगनसिंह राठौर जी, फजलुर रहमान जी, आर.के. सिंह पटेल साहब, टी.एन. प्रथापन, श्री कुरुवा गोरांतला माधव, श्री पल्लब जी, श्री राजकुमार चाहर जी, श्री अनुमल्ला रेड्डी जी, श्री किरीट सोलंकी जी, श्रीमती रंजीता कोली, डॉ. भारती पवार, सुनील तटकरे जी, भोला सिंह जी, रघुराम कृष्ण राजू, संतोष पाण्डे जी, वी.के. श्रीकंदन जी, सुरेश कश्यप जी, डॉ. ए. चैला कुमार, परबतभाई पटेल, संगीता आज़ाद, राजवीर सिंह राजू भैय्या, रोड़मल नागर जी, गुरजीत सिंह जी, सुकांत सिंह जी, धरमवीर सिंह जी, बसंत कुमार पांडा जी, गुहाराम अजगल्ले जी, श्री राजीव प्रताप रूडी जी, रीता बहुगुणा जोशी जी, एच. वसंतकुमार जी, राम कृपाल यादव जी, अजय भट्ट जी, सुशील कुमार जी, रवनीत सिंह बिट्टु, एस. मुनिस्वामी जी, उन्मेश भैय्यासाहेब पाटिल जी, उमेश जी जाधव और श्री राम शिरोमणि जी।

माननीय अध्यक्ष जी, इन सभी सदस्यों ने इस पर अपने विचार व्यक्त किए। चर्चा बहुत ही गरिमापूर्ण थी। सभी सदस्य यह जानते भी हैं और मानते भी हैं कि ग्रामीण विकास हो या कृषि हो, दोनों विषय हम सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और देश के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। सबने अपने मूल्यवान सुझाव भी दिए। कुछ विषयों पर उनकी कठिनाइयां थीं, उन कठिनाइयों को भी रखा और क्षेत्रीय समस्याओं को भी रखा। जहां टिप्पणी करने की आवश्यकता थी, वहां सदस्यों ने गंभीर टिप्पणी भी की।

(1230/SK/KKD)

माननीय अध्यक्ष जी, हमने सभी सदस्यों के विचारों को लिपिबद्ध किया है। सुझाव बड़ी संख्या में हैं, टिप्पणियां भी हैं, इसलिए मैं आपके माध्यम से सभी सदस्यों को आग्रह करना चाहूंगा कि जो उन्होंने अपनी बातें रखी हैं, मैं सभी सदस्यों को लिखित में उसका जवाब पहुंचाऊं, इस बात का मैं प्रयत्न करूंगा।

निश्चित रूप से कुछ विषय चर्चा में हैं, वे आएंगे। मैं सबसे पहले ग्रामीण विकास से चर्चा आरंभ करना चाहूंगा। कई बार चर्चा में यह बात आती है कि गांव में बजट अपर्याप्त है। कई बार यह बात भी आती है कि जितनी आवश्यकता है, उतना काम नहीं हो रहा है। मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्यों को अवगत कराना चाहता हूं कि ग्रामीण विकास के मामले में हम लोगों की जितनी क्षमता करने की है, उस क्षमता के अनुसार और सरकार द्वारा अपने बजट की स्थिति के अनुसार सर्वाधिक बजट देने की कोशिश लगातार हो रही है। अगर हम वर्ष 2008-09 से वर्ष 2013-14 तक छ: वर्षों का ग्रामीण विकास विभाग का बजट देखें तो पाएंगे कि 3,58,524.13 करोड़ रुपया खर्च हुआ। इसी प्रकार से अगर हम वर्ष 2014-15 से लेकर वर्ष 2019-20 का बजट देखें तो 5,77,790.79 करोड़ रुपया खर्च हुआ। इसके अतिरिक्त गैर-बजटीय संसाधन, जो हम नाबार्ड या अन्य स्रोतों से लेते हैं, इसमें लगभग 44,008.37 करोड़ रुपया है। अगर इस प्रकार से हम देखें तो हमारे ध्यान में आएगा

कि कुल मिलाकर पूर्व के छ: साल और इन सालों में 2,63,275.13 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है जो 74 परसेंट है। इस दृष्टि से ग्रामीण विकास के बजट में किसी भी प्रकार का सरकार को संकोच नहीं है, हर हैड में पर्याप्त पैसा मिल रहा है, हम पर्याप्त काम करने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण विकास मंत्रालय में निश्चित रूप से एक प्रमुख योजना है जिसने गांव के जनजीवन को बदला है। जब माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी इस देश के प्रधान मंत्री थे, उनके मन में यह बात आई कि देश के लाखों गांव संपर्क से छूटे हुए हैं, इसलिए इन्हें प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना से जोड़ना चाहिए।

(1235/MK/RP)

उस समय प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना बनाई गई थी, उस पर काम प्रारंभ हुआ। अटल जी के समय में जो रोडमैप बना था, उसके अनुसार यह काम वर्ष 2008 तक पूरा हो जाना चाहिए था, लेकिन बीच में कुछ शिथिलता रही, इसलिए आज भी यह काम चल रहा है। वाजेपयी जी के समय में जब पहले फेज की कल्पना की गयी थी तो उसमें 1,78000 बसावटें थीं, जिनको सड़क से जोड़ना था। मंत्रालय ने व्यावहारिक रूप से देखा कि उनमें कहां सड़कें बनाई जा सकती हैं तो 1,71000 बसावटें छांटी गयीं और मुझे यह कहते प्रसन्नता है कि वर्ष 2014 में जब प्रधान मंत्री मोदी जी ने काम संभाला था तो उन्होंने कहा था कि पहले फेज को हर हालत में हमें वर्ष 2019 तक पूरा करना चाहिए। हम 1,66000 बसावटों को पहले फेज में जोड़ चुके हैं और ये लगभग 97 परसेंट होता है। बाकी जो 3 परसेंट बची हैं, उनमें काम चल रहा है। कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जहां सड़क बनाना मुमकिन नहीं हो पा रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी तरह प्रधान मंत्री सड़क योजना का सेकेंड फेज था। इसमें 50,000 कि.मी. सड़कें बनाने का लक्ष्य था। 41000 कि.मी. सड़कों की स्वीकृति जारी हो गयी है और मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि 29000 कि.मी. सड़कें बना दी गयी हैं। काफी लंबे समय से बहुत सारे राज्य जो फर्स्ट फेज और सेकेंड फेज को पूरा कर चुके हैं, उन क्षेत्रों के सांसद महोदय मुझे मिलते थे और कहते थे कि हमारे क्षेत्र में ग्रामीण सड़क की दृष्टि से हमें कुछ नहीं मिल रहा है क्योंकि वे फर्स्ट फेज और सेकेंड फेज पूरा चुके थे, इसलिए दूसरा कोई हेड नहीं था, जिसमें से गांव की सड़क उन्हें दी जा सके।

1237 बजे (श्री एन. के. प्रेमचन्द्रन पीठासीन हुए)

तब से लगतार इस बात पर विचार हो रहा था कि प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना का थर्ड फेज लाया जाए और मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि इसी माह में प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना का थर्ड फेज माननीय नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक में स्वीकृत कर दिया गया है। इस थर्ड फेज में हम 1,25000 कि.मी. सड़कें बनाएंगे जिस पर 80,000 करोड़ रुपये का व्यय आएगा। इसके लिए सरकार पूरी तरह से तैयार है। इस काम को हम वर्ष 2024-25 तक पूरा करेंगे, इस लक्ष्य को लेकर हम सब लोग काम कर रहे हैं। सड़क की गुणवत्ता ठीक हो, सड़क के काम में गति आए और ग्रीन टेक्नोलॉजी का उपयोग इन सड़कों के निर्माण में हो, यह भी हम लोगों ने

सुनिश्चित किया है। मुझे कहते हुए यह प्रसन्नता है कि प्लास्टिक के वेस्ट से जो सड़क बनाने की टेक्नोलॉजी है, उससे 27000 कि.मी. सड़कें बनाई हैं।

दूसरा, जो काम की गति है वह हमारे आने से पहले 76 कि.मी. सड़क प्रतिदिन बनती थी आज सरकार ने अपनी गति को बढ़ाया, अमले को बढ़ाया, समय पर पैसा देना प्रारंभ किया और मुझे कहते हुए प्रसन्नता है कि आज 135 कि.मी. सड़क प्रतिदिन के हिसाब बन रही है और हम इस काम को जल्दी से पूरा करेंगे। प्रधान मंत्री ग्राम सड़क के मामले में कुछ मित्रों ने चर्चा की कि किन्हीं-किन्हीं क्षेत्रों में उसकी गुणवत्ता खराब है और कुछ टेंडर आदि प्रक्रिया में राज्य के अधीन कुछ कमियां दिखाई दी हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि सरकार ने एक 'मेरी सड़क' ऐप बनाया है। इस ऐप के माध्यम से आप किसी भी प्रधान मंत्री ग्राम सड़क पर खड़े होकर, अगर उसकी गुणवत्ता खराब है तो उसकी शिकायत कर सकते हैं। इस ऐप का उपयोग लगभग एक लाख से अधिक लोगों ने किया है। हम लगातार शिकायतों को एन्टर्टेन भी करते हैं और उनका निराकरण भी करते हैं।

(1240/YSH/RCP)

जहां तक गुणवत्ता का सवाल है, तो उसके लिए तीन स्तरों पर मॉनिटरिंग की व्यवस्था है। वहां जिले में जी.एम. रहता है साथ ही पूरी टीम और एक लेबोरेट्री रहती है तो वहां इस तरह से मॉनिटरिंग होती है। राज्य सरकारें स्टेट क्वालिटी मॉनिटर भी रखते हैं। अगर कोई शिकायत आती है तो स्टेट क्वालिटी मॉनिटर वहां जाते हैं और उन शिकायतों का निराकरण करते हैं। अगर आवश्यकता होती है, तो उन पर कार्यवाही भी की जाती हैं। इसके ऊपर भी यदि कभी कोई शिकायत आती हैं या माननीय सांसदगण कोई शिकायत देते हैं तो नेशनल क्वालिटी मॉनिटर जो तीसरी व्यवस्था है, अगर सांसद कहते है कि हमारी उपस्थिति में जांच होनी चाहिए तो हम उनकी उपस्थिति में भी जांच कराने का काम करते हैं।

मैं सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना में मानदंड भी ठीक है और पैसा भी सही तरीके से दिया जा रहा है इसलिए इसमें किसी भी प्रकार की गुणवत्ता में कोई खराबी आएगी तो निश्चित रूप से उसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। आप सभी लोग किसी भी शिकायत को मुझ तक पहुंचाने के लिए स्वतंत्र हैं और मैं निश्चित रूप से आपकी समस्या को सुलझाने का काम करूंगा।

माननीय सभापति महोदय, आम तौर पर मनरेगा बड़ी लोकप्रिय योजना है और आप सभी के ध्यान में होगा कि एक समय था, जब मनरेगा की चर्चा या मनरेगा का प्रश्न सदन में आता था तो मनरेगा की खामियां, मनरेगा में अमानत में खयानत और मनरेगा में भ्रष्टाचार की चर्चाएं आम होती थीं, लेकिन मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि कल अधिकांश सदस्यों ने, जिन्होंने मनरेगा पर अपने विचार व्यक्त किए, सभी ने एक ही बात कही कि मनरेगा में पैसे को और बढाया जाना चाहिए। मनरेगा में और काम सम्मिलित किये जाने चाहिए। मनरेगा का जो सदुपयोग हो रहा है, उसकी महत्ता का सभी लोगों ने वर्णन किया। कटौती प्रस्ताव में भी इसका जिक्र किया है। मनरेगा में लगभग 12 करोड़ जॉब कार्ड हरे हैं, 12 करोड़ में से 11 करोड़ के आसपास जॉब कार्डधारियों को आधार से लिंक कर दिया गया है और 7 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनका बैंक अकाउंट भी आधार से लिंक हो गया है। पांच

करोड़ के आस पास ऐसे श्रमिक हैं जो काम पर अदल-बदल कर आते रहते हैं और हमारी कोशिश रहती है कि मनरेगा के माध्यम से निशुद्ध रूप से जो संरचना बने, मनरेगा के माध्यम से जो मानव लेबर सृजित हो, वह जनोपयोगी हो और लंबे समय तक लोगों के उपयोग में आए। इस दिशा में निश्चित रूप से हमने काम किया है। एक तरफ मनरेगा के लिए आवंटन भी निरंतर बढ़ाया जा रहा है। …(व्यवधान) अगर मैं यह कहूं कि अधीर रंजन जी मुझे अच्छे लगते हैं तो आप क्या देने वाले हैं …(व्यवधान) मनरेगा को हम लोगों ने सुधार करके जनोपयोगी बनाया है और यह जनोपयोगी बना है। अगर इसमें पारदर्शिता आई है तो वह प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के सशक्त नेतृत्व के कारण आई है।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूं कि आज मनरेगा के जो मजदूर हैं, उनके अकांउट में हम 99 परसेंट भुगतान करने का काम कर रहे हैं। उस भुगतान में किसी भी प्रकार का बिचौलिया नहीं है, किसी भी प्रकार का दलाल नहीं है। यह हम लोगों ने सुनिश्चित करने का काम किया है। जो संरचनाएं बन रही हैं, उन संरचनाओं को जियो-टैग करने का काम किया है और अभी तक हम 3 करोड़ 62 लाख संरचनाओं की जियो-टैगिंग कर चुके हैं।

(1245/RPS/SMN)

अगर माननीय सदस्यों को कभी देखना हो तो मेरे कार्यालय में आकर वे जियो टैगिंग का काम देख सकते हैं। मनरेगा में इस वर्ष लगभग 268.08 करोड़ मानव दिवस सृजित हुए हैं। काम करने में महिलाओं का प्रतिशत 57 है और जो लोग 100 दिन काम करने आते हैं, ऐसे लोगों का प्रतिशत 52 है। अभी मनरेगा के अंतर्गत लगभग 18 लाख से अधिक कामों को पूरा किया जा चुका है। ऐसी स्थिति है। ये सभी संरचनाएं निश्चित रूप से काम आ रही हैं।

मनरेगा में दो-तीन प्रश्न सभी मेंबर्स उठाते हैं। अगर मैं अपने क्षेत्र को देखता हूं तो मुझे लगता है कि आप सभी लोगों की भावना सही है और मैं उस भावना से सहमत भी हूं। कई बार यह बात आती है कि मनरेगा को कृषि से जोड़ा जाए। मैं आप सभी को यह बताना चाहता हूं कि मनरेगा कृषि कार्यकलापों से जुड़ा हुआ है, लेकिन उसकी अपनी एक सीमा है और उस सीमा के अंतर्गत हम निश्चित रूप से मनरेगा का उपयोग कृषि के क्षेत्र में करते ही हैं। जो मुख्य बात आती है कि सारे खेतों की तार बाउण्ड्री करा दी जाए, क्योंकि जानवरों से खेती को नुकसान हो रहा है।

दूसरी बात आती है कि खेती में काम करने वाले श्रमिकों की पेमेंट मनरेगा से हो जाए। यह बहुत लोकप्रिय बात है और खेतों में काम करने वाले सभी लोगों के लिए अच्छी है, लेकिन मैं समझता हूं कि इसमें थोड़ी सी कठिनाई है, इसलिए मैं अभी इस बारे में कुछ कहने की स्थिति में अपने आपको नहीं पाता हूं। साथ ही साथ, मैं आपसे यह जरूर कहना चाहता हूं कि मनरेगा हमेशा चलता रहे, मैं इसका पक्षधर नहीं हूं, क्योंकि मनरेगा गरीब लोगों के लिए है और हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि गरीबी मुक्त भारत का निर्माण हो। जो गरीब है, धीरे-धीरे वह अति गरीब की श्रेणी से निकलकर गरीब की श्रेणी में आए और गरीब की श्रेणी से निकलकर उसके जीवन का और उत्थान हो, इस दिशा में निश्चित रूप से सरकार काम कर रही है। इसलिए जो संरचनाएं बन रही हैं, वे जन उपयोगी बनें, वे भी लोगों की आय का साधन बनें। जो जल संरचनाएं बन रही हैं, वे सिंचाई का साधन बनें और उन

जल संरचनाओं के माध्यम से खेती का रकबा बढ़े, गरीब लोगों की आय बढ़े। साथ ही साथ, हम लोगों ने यह भी कोशिश की है कि जो मनरेगा के मजदूर हैं, इसी एड में से उनकी ट्रेनिंग कराई जाए।

1247 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

हम उनको बेयर फुट टेक्निशियन के रूप में ट्रेनिंग कराएं, जिससे वे कुशलता प्राप्त कर सकें और कुशल बनकर वे निश्चित रूप से अपने जीवन को और उन्नत बना सकें। हमने ऐसे लगभग 7563 बेयर फुट टेक्निशियन भी इस योजना में बनाए हैं।

अध्यक्ष महोदय, मनरेगा का एक विषय और रह गया है। कुछ मित्रों ने कहा कि मनरेगा का आवंटन घटा दिया गया है। मैं आप सभी को आश्वस्त करना चाहता हूं कि आवंटन को बजट टू बजट देखना चाहिए। ...(व्यवधान) पहले बजट आवंटन 55 हजार करोड़ रुपये था, इस बार इसे 60 हजार करोड़ रुपये किया गया है। स्वाभाविक रूप से जब मनरेगा का दायरा बढ़ता है और काम बढ़ता है तो आवश्यकता पड़ने पर हम पैसे लेते हैं। पिछली बार आवंटन 55 हजार करोड़ रुपये था, हमें आवश्यकता पड़ी तो हमने सप्लीमेंटरी आवंटन के रूप में 6,000 करोड़ रुपये और लिए। इस बार बजट में आवंटन 55 हजार करोड़ रुपये की जगह 60 हजार करोड़ रुपये किया गया है तो इसे कम करने का कोई सवाल नहीं उठता है।

प्रधान मंत्री आवास के बारे में मैं आप सभी को बताना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री आवास योजना का ग्रामीण जनजीवन को बदलने में निश्चित रूप से बहुत लाभ हुआ है। इस दृष्टि से हम देखें तो पिछले दिनों हमने लक्ष्य तय किया था कि एक करोड़ आवास वर्ष 2018-19 तक बनाएंगे, लेकिन एक करोड़ 53 लाख आवास बनाने का काम हुआ। आवास के आकार को भी हमने बढ़ाया है, उसकी धनराशि को भी हमने बढ़ाया और आवास को सर्व-सुविधायुक्त बनाया है। अगर हम गरीबी मुक्त भारत बनाना चाहते हैं तो निश्चित रूप से हमें सारी चीजें गरीब को उपलब्ध करानी पड़ेगी। गरीब के घर में शौचालय होना चाहिए, प्रधान मंत्री आवास में शौचालय है। गरीब के घर में रसोई होनी चाहिए, प्रधान मंत्री आवास में रसोई है।

(1250/RAJ/MMN)

गरीब के घर में गैस का सिलेंडर होना चाहिए, तो 'उज्ज्वला योजना' के अंतर्गत गैस का सिलेंडर है। गरीब के घर में बिजली होनी चाहिए, तो 'सौभाग्य योजना' के अंतर्गत उनको बिजली देने का काम किया जा रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूं कि आने वाले समय में, वर्ष 2021-22 तक हम लोग 1 करोड़ 95 लाख मकान और बनाने वाले हैं, जिनके लिए पर्याप्त मात्रा में धन राशि का इंतजाम है। कई बार यह भी कहा गया कि बजट में कम पैसा दिया गया है, तो ये मकान का लक्ष्य कैसे पूरा होगा? मैं सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम जब भी किसी योजना का सृजन करते हैं, पहले बजट को देखते हैं। जहां बजट की आवश्यकता होती है, वहां बजट से पैसा लेते हैं और जहां अतिरिक्त आवश्यकता होती है, वहां अतिरिक्त पैसा भी लेते हैं। पिछली बार भी जब हम ने एक करोड़ मकान बनाने का लक्ष्य रखा था, तब 60 हजार करोड़ रुपये बजट से

लिये थे और 21 हजार करोड़ रुपये 'नाबार्ड' से लिये थे। 81 हजार करोड़ रुपये की लागत से यह काम किया गया।

इस समय हम लोगों ने ग्रामीण मिस्त्रियों का प्रशिक्षण किया, मूल्यांकन किया और प्रमाणीकरण भी किया। निश्चित रूप से जो कारीगर नीचे प्रशिक्षित हो गए थे, उनकी कुशलता बढ़ गई थी। प्रधान मंत्री आवास बनाने में भी उनकी कुशलता का उपयोग हुआ और एक प्रमाणित कोई भी हमारा कारीगर दूसरी जगह जाएगा और काम करेगा, तो निश्चित रूप से उसको ज्यादा मजदूरी मिलेगी। हम लोगों ने यह भी सुनिश्चित करने का काम किया है।

आप सभी के ध्यान में है कि प्रधान मंत्री जी ने कहा था कि वर्ष 2022 तक हम हर गरीब आदमी को छत प्रदान कर देंगे। मैं समझता हूं कि अब वह लक्ष्य नजदीक है। हम 1 करोड़ 53 लाख घर बना चुके हैं और आने वाले समय में 1 करोड़ 95 लाख की जो सूची है, उसे हम वर्ष 2022 तक बना कर, प्रधान मंत्री मोदी जी के संकल्प को पूरा करने में कामयाबी हासिल करेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्रामीण विकास के अंतर्गत दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना है। इस योजना के अंतर्गत गांवों में जो बच्चे काम करते हैं, उन बच्चों को हम लोग शिक्षण देते हैं और उनकी नौकरी लग जाए, यह सुनिश्चित करने का काम करते हैं। इस योजना के अंतर्गत लगभग 643 जिले और 5,709 ब्लॉक्स आते हैं। इस योजना के माध्यम से हम लोगों ने लगभग 8 लाख लोगों को शिक्षण दिया। जिनमें से 5 लाख लोग अपने रोजगार में लग गए हैं। आप कई बड़े-बड़े होटलों में भी जा कर देखेंगे, तो आपको डीडीयू जीकेवाई का बैच लगे हुए बच्चे अपोलो जैसे अस्पताल में भी मिलेंगे, जो इसी योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित होकर रोजगार प्राप्त किए हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, गांवों में गरीबों को आजीविका मिलना बहुत आवश्यक है, क्योंकि एक तरफ अधोसंरचना हो, दूसरी तरफ मौलिक सुविधाओं का अभाव कम हो और तीसरी तरफ आजीविका भी हो। मुझे यह कहते हुए प्रसन्न्ता है कि 'दीनदयाल अंत्योदय योजना,राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' के माध्यम से देश भर में ग्रामीण विकास मंत्रालय काम कर रहा है और हम सभी के सामने बहुत अच्छे परिणाम आ रहे हैं। इस योजना के अंतर्गत आज 5 लाख से अधिक स्व-सहायता समूह हैं और 5 करोड़ से अधिक बहनें इस कार्यक्रम से जुड़ी हुई हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत ही हम 'महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना' का भी संचालन करते हैं, उसका भी सद्परिणाम अच्छा आया है। इसमें सरकार का नियोजन भी ठीक है और सरकार द्वारा जो निवेश हो रहा है, निश्चित रूप से, वह भी स्व-सहायता समूहों की जिंदगी बदलने में उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

(1255/IND/VR)

साथ ही साथ बैंक से लीकेज की जो बात है, मुझे कहते हुए प्रसन्नता है कि बड़े-बडे उद्यमियों के एनपीए के चर्चे हाउस और हाउस के बाहर भी चलते हैं। आम तौर पर एक समय था, जब गरीब व्यक्ति को बैंक अपनी दहलीज पर इसलिए खड़ा नहीं होने देता था कि यदि इसे पैसा देंगे, तो पैसा डूब जाएगा। मुझे कहते हुए प्रसन्नता है कि विगत वर्षों में सैल्फ हेल्प ग्रुप्स को दो लाख करोड़ रुपये से अधिक पैसा बैंकों के माध्यम से दिया गया और उन्होंने अपना कामकाज प्रारम्भ किया। मैं वर्ष 2016-17 में इस विभाग में आया था, उस समय सैल्फ हेल्प ग्रुप्स का एनपीए 23 परसेंट था। हम

लोगों ने ट्रेडिंग बढ़ाई, बातचीत की, राज्य सरकारों ने प्रयत्न किए और मुझे कहते हुए गर्व होता है कि बड़े लोगों के एनपीए का प्रतिशत सदन के लोग जानते हैं, लेकिन सैल्फ हेल्प ग्रुप्स का एनपीए 2.9 प्रतिशत है।

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): बड़े लोगों का एनपीए राइट ऑफ किया जाता है, लेकिन गरीब लोगों का एनपीए राइट ऑफ नहीं किया जाता है। वे अपनी मेहनत की कमाई से पैसा जमा कराते हैं।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : अध्यक्ष जी, अधीर रंजन जी हमारे सदन के वरिष्ठ सदस्य हैं और हमेशा उनके मन में रहता है कि सारे काम उन्होंने ही प्रारम्भ किए हैं। मुझे यह मानने में संकोच भी नहीं है, लेकिन एक कार्यक्रम जिसमें सिर्फ भ्रष्टाचार की चर्चा होती थी, वह कार्यक्रम पूरी तरह से ट्रांसपेरेंट हो जाए, यह तो प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल में हुआ है, यह तो निश्चित रूप से आपको मानना पड़ेगा।

महोदय, ग्रामीण विकास मंत्रालय के विषय को पूरा करके मैं कृषि के विषय पर आता हूं। निश्चित रूप से कृषि के क्षेत्र में हमारी बहुत सारी उपलब्धियां हैं। कृषि का विषय बहुत महत्वपूर्ण है और हम कृषि प्रधान देश के नागरिक हैं। हमारी मान्यता है कि गांव आगे बढ़ेगा, तो देश आगे बढ़ेगा और किसान यदि समृद्ध होगा, तो ही देश समृद्ध होगा। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए प्रधान मंत्री जी आरम्भ ही से कोशिश में लगे हैं। सारा देश इस बात का साक्षी है कि जब उन्होंने काम संभाला, तो उन्होंने अपने सबसे पहले उद्बोधन में कहा था कि उनकी सरकार गांव, गरीब और किसान के लिए पूरी समर्पित रहेगी। गांव के बारे में मैंने आपको बताया और गरीब के बारे में भी अनेक योजनाएं हैं। उन सारी योजनाओं का जिक्र समय-समय पर होता ही रहता है और किसान की दृष्टि से भी जितने नए आयाम को प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पिरिट प्रदान की है, वह ऐतिहासिक है और इससे निश्चित रूप से पूरे क्षेत्र में आज बदलाव आ रहा है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि कृषि के क्षेत्र में अनेक योजनाएं संचालित होती हैं। कुल 13 योजनाएं हैं और उनकी 18 उपयोजनाएं हैं। उनके माध्यम से पूरा कृषि क्षेत्र संचालित होता है। आईसीएआर में हमारे वैज्ञानिक रिसर्च का काम करते हैं। रिसर्च के लिए भी इस बार 8078 करोड़ रुपये हम लोगों ने रखे हैं, जिसमें 3.57 परसेंट की वृद्धि है। आज खाद्यान्न की दृष्टि से हम समृद्ध हैं और पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं। बागवानी का उत्पाद भी 385 मिलियन टन से ऊपर हो गया है। दूध के उत्पादन में भी हम 187 मिलियन टन से ऊपर हैं। हमारे वैज्ञानिकों ने गत वर्षों में 5958 बीजों की किस्में उत्पन्न की हैं। वर्ष 2018-19 में देखें, तो 372 किस्में उन्नत की हैं और बायोफोर्टिफाइड देखें, तो 35 किस्में उन्नत हैं। हमारे वैज्ञानिकों ने इस दिशा में बहुत अच्छा काम किया है और आईसीएआर 713 कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से पूरे देश में फैला हुआ है।

(1300/VB/SAN)

अगर आज हम खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हैं, तो इसका श्रेय किसे दिया जा सकता है? मैं चाहूँगा कि जिन्होंने खेत में परिश्रम किया, पसीना बहाया, सर्वप्रथम इसका श्रेय उनको दिया जाना चाहिए। आज़ादी के बाद से आज तक की जो लम्बी यात्रा चली है, उसमें निश्चित रूप से हमारे कृषि वैज्ञानिकों ने नये-नये बीजों का उत्पादन किया है, उन्होंने नये-नये बीजों का प्रयोग बढ़ाया है, किसानों की ट्रेनिंग हुई है और नीचे तक इसकी अवेयरनेस हुई है, किसानों ने उनको अपनाना शुरू किया है, उसका ही यह परिणाम है कि हम खेती के क्षेत्र में आगे बढ़े हैं। इसलिए दूसरा श्रेय मैं देश के कृषि वैज्ञानिकों को देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस क्षेत्र में अपना बड़ा योगदान किया है।

लेकिन गत् पाँच वर्षों में खेती के क्षेत्र में सम्मान बढ़ा है, जागरूकता बढ़ी है। एक समय था, जब एक डॉक्टर यह मानता था कि उसके लड़के को डॉक्टर बनना चाहिए, एक इंजीनियर यह मानता था कि उसके लड़के को इंजीनियर बनना चाहिए। लेकिन, कोई किसान यह नहीं मानता था कि उसके लड़के को किसान बनना चाहिए। जब से प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस काम को अपने हाथों में लिया है और एक के बाद एक इनपुट किसानों के लिए बढ़ाने की कोशिश की है, तो इससे निश्चित रूप से किसानों का सम्मान भी बढ़ा है और किसान खेती की ओर आकर्षित हों, यह स्थिति भी आगे बढ़ी है। मुझे लगता है कि पढ़े-लिखे लोग भी अब खेती के क्षेत्र में आगे आ रहे हैं, टेक्नोलॉजी का उपयोग कर रहे हैं और आगे बढ़ने की निरंतर कोशिश कर रहे हैं। निश्चित रूप से इसका श्रेय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को दिया जाना चाहिए। इसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ।

सामान्य तौर पर हम कहते हैं कि किसानों की आमदनी दोगुनी होनी चाहिए। कई मेम्बर्स ने कहा कि यह दोगुनी कैसे हो जाएगी और इसके लिए क्या करना होगा, अभी तक तो कुछ हुआ ही नहीं। मैं समझता हूँ कि उनकी बात में वजन हो सकता है, लेकिन मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि किसानों की आमदनी को पाँच वर्षों में दोगुना करना, इस व्यापक फलक के लक्ष्य को लेना, इसे घोषित करना और उसका रोडमैप बनाकर उस पर काम करने का परिणाम एक दिन में तो नहीं आएगा। मान लीजिए कि मशीन से उत्पादन करने के लिए एक कारखाना लगाया जाता है, 24 घंटे में उत्पादन करने की उसकी सीमा हो सकती है। लेकिन खेत में उत्पादन बढ़ाना, फसलों का विविधीकरण करना, डायवर्सिफिकेशन करना आदि कामों में समय लगता है, लेकिन इस दृष्टि से एक के बाद कार्यक्रम हाथ में लिये गये हैं। जैसे सॉइल हेल्थ कार्ड का विषय है। सामान्य तौर पर यह नया विषय नहीं है। सॉइल हेल्थ कार्ड की टेक्नोलॉजी बहुत पुरानी है। लेकिन, आज नरेन्द्र मोदी जी की दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण, चाहे वह समालोचना की दृष्टि से हो या आलोचना की दृष्टि से हो, सॉइल हेल्थ कार्ड की बात देश के हर किसान की ज़ुबान पर है।

सॉइल हेल्थ कार्ड के लिए जो अभियान चलाये गये, उनमें पहले चरण में 10 करोड़ 73 लाख लोगों को कार्ड वितरित किये गये और दूसरे चरण में 9 करोड़ 82 लाख कार्ड वितरण किये जाने का क्रम चल रहा है। सॉइल हेल्थ कार्ड एक ऐसी चीज है, जिस पर हम लोग और बारीकी से काम करें,

क्योंकि इसका जो अंतिम लक्ष्य है, वह केवल सरकार के सॉइल हेल्थ कार्ड देने से ही पूरा नहीं होगा। किसानों को ही लगना चाहिए कि उसे उसके खेत के सॉइल की जाँच करानी है।

महोदय, अगर मुझको बुखार है, मैं ब्लड टेस्ट कराता हूँ, अगर उसमें मलेरिया होने की बात आती है, तो मैं कुनैन की गोली से ठीक हो जाऊँगा।

(1305/PC/RBN)

अगर मैं बिना ब्लड-टेस्ट कराए छ: दिनों तक बुखार की गोलियां खाता रहूंगा तो शायद मेरा बुखार ठीक न हो। इसी दृष्टि से किसान के मन में भी यह ललक पैदा होनी चाहिए, इसीलिए प्रधान मंत्री जी ने इस काम पर फोकस किया। मुझे प्रसन्नता है कि यह काम नीचे तक चल रहा है। इसके लिए दस हज़ार प्रयोगशालाएं बनाई गई है, चलित प्रयोगशालाएं बनाई गई हैं। हम लोग लगातार केवीके के माध्यम से और आत्मा परियोजना के माध्यम से इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि इसका काम बढ़े।

अध्यक्ष महोदय, सॉइल हैल्थ कार्ड सिर्फ फसल की उत्पादकता ही नहीं बढ़ाएगा, अगर किसान ने सॉइल हैल्थ कार्ड को गंभीरता से लेना प्रारंभ कर दिया तो रासायनिक खाद भी कम लगेगी, फसल में पानी भी कम लगेगा और उसकी उत्पादकता भी बढ़ेगी। स्वाभाविक रूप से आज जल संकट से हम सब गुज़र रहे हैं। इस पर कई बार चर्चा होती है। कल रवनीत सिंह जी चर्चा कर रहे थे कि पंजाब में ज़मीन भी खराब हो गई और पानी का भी अभाव हो गया। हमें पानी बचाना है। पंजाब जैसा प्रांत अगर संकट में फंसेगा तो निश्चित रूप से हम सब लोगों के लिए कठिनाई की स्थिति होगी। इसलिए अगर पानी बचाना है तो भी सॉइल हैल्थ कार्ड ज़रूरी है, उत्पादकता बढ़ानी है तो भी सॉइल हैल्थ कार्ड ज़रूरी है, उत्पादन बढ़ाना है तो भी सॉइल हैल्थ कार्ड ज़रूरी है और रासायनिक उर्वरकों, पेस्टिसाइड्स का कम और निश्चित मात्रा में उपयोग करना है तो इस दृष्टि से भी सॉइल हैल्थ कार्ड का बहुत उपयोग है। इस दिशा में सरकार बहुत तेज़ी के साथ काम कर रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों जल संकट पर काफी बातचीत हुई। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि प्रधान मंत्री जी ने भी इस संकट को बहुत गंभीरता से लिया है। इसके लिए उन्होंने अलग से जल शक्ति मंत्रालय बनाया है। प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना के माध्यम से कृषि विभाग काम करता है। प्रधान मंत्री जी ने पिछले दिनों 'मन की बात' में सारे देश को आवाहन किया। इसका एक व्यापक कार्यक्रम बन रहा है। पूरे देश में जल संरक्षण की दृष्टि से एक अभियान चलाया जा रहा है और मनरेगा की राशि का भी अधिकतम उपयोग हम जल संरक्षण के लिए आने वाले कल में करने वाले हैं, जिससे हम इस संकट से जूझ सकें।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि 'प्रति बूंद अधिक फसल' की दृष्टि से, चाहे स्प्रिंक्लर का मामला हो या सूक्ष्म सिंचाई का मामला हो, वर्ष 2018-19 में लगभग 11 लाख 58 हज़ार हैक्टेयर क्षेत्र को कवर करने का काम किया गया है। रासायनिक उर्वरकों की बहुत बात की जाती है। रासायनिक उर्वरक निश्चित रूप से कम होने चाहिए, इसमें कहीं कोई मतभेद होने का सवाल ही नहीं है, लेकिन इसके साथ ही साथ हमको यह भी देखना पड़ेगा कि अभी तक का हमारा जो उत्पादन है, क्या वह रासायनिक उर्वरक के माध्यम से खड़ा हुआ है। इसलिए, हमें शनै:-शनै: यह कोशिश भी करनी चाहिए

कि हम जैविक खेती की ओर जाएं या ज़ीरो बजट खेती की ओर जाएं। इस दिशा में भारत सरकार जैविक खेती की दृष्टि से बहुत तेजी के साथ काम कर रही है। हमारे पूर्वोत्तर के राज्यों को इसमें प्राथमिकता के साथ लिया गया है। उन राज्यों में ठीक प्रकार से उत्पादकता बढ़ रही है और वे लोग निर्यात की स्थिति में भी आ गए हैं और वे बड़ी मात्रा में फल और बाकी चीज़ों का निर्यात कर रहे हैं। परंपरागत कृषि विकास योजना के माध्यम से हम लोग इस योजना को आगे बढ़ा रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, एक समय था जब हर किसान के सामने यूरिया का संकट हुआ करता था। यूरिया के लिए लाइनें लगती थीं। मैं जिस क्षेत्र से आता हूं, उस क्षेत्र में तो पुलिस लगाकर ही यूरिया बांटा जा सकता था, नहीं तो किसान को यूरिया की उपलब्धता नहीं होती थी, लेकिन आज नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है। नीम कोटेड यूरिया का निर्णय किया गया और नीम कोटेड यूरिया के निर्णय को लागू कर दिया। आज यूरिया की लाइनें पूरी तरह खत्म हो चुकी हैं। हर किसान को पर्याप्त मात्रा में यूरिया मिल रहा है। यूरिया में दलाली समाप्त हो गई है, कालाबाज़ारी समाप्त हो गई है और बिचौलिये समाप्त हो गए।

अध्यक्ष महोदय, कोई भी निर्णय करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति की ज़रूरत होती है। जिस प्रोजेक्ट को आप हाथ में ले रहे हैं, वह प्रोजेक्ट आपकी आत्मा से जुड़ा हुआ होना चाहिए, तब निर्णय हो पाता है। नीम कोटेड यूरिया नई बात नहीं है, यूपीए सरकार के समय में भी यह बात आई थी, लेकिन बिचौलियों ने मनमोहन सिंह जी को इसको लागू नहीं करने दिया। नरेन्द्र मोदी जी का 56 इंच का सीना है, इसलिए इसे लागू करने में उन्होंने सफलता प्राप्त कर ली।

(1310/SPS/SM)

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान को सुरक्षा का कवच मिले, यह भी जरूरी है। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी, जब प्रधान मंत्री बने तो उन्होंने प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना को पुर्नगठित किया। इसमें यह कोशिश की गई कि किसानों को अधिक से अधिक फायदा मिले और किसान को कम से कम प्रीमियम जमा करना पड़े। फसल बीमा योजना पहले भी थी और पहले भी इसमें कमोबेश इंश्योरेंस कंपनियां भाग लेती थीं। लेकिन इसमें अंतर था, क्योंकि आज प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना पर फोकस है। मैं और मेरे प्रधान मंत्री इस फसल बीमा योजना को पूर्ण योजना नहीं मानते हैं। कल कई सांसदों ने प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना की पद्धति पर सवाल उठाए, उसके लाभ और हानि पर सवाल उठाए। निश्चित रूप से उनके सुझाव मूल्यवान हैं और मैं आपके माध्यम से सभी सदस्यों को यह कहना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना की दृष्टि से यदि कोई उपयोगी सुझाव है तो वे मुझे 4-5 दिन में दे दें। हम लोग इस दिशा में विचार कर रहे हैं कि इस फसल बीमा योजना को कैसे और सरल बनाया जाए, कैसे अधिक उपयोगी बनाया जाए, कैसे इसे किसानों के लिए और लाभप्रद बनाया जाए?

माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर हम आंकड़ों की दृष्टि से देखें तो फसल बीमा योजना के अंतर्गत पिछले 5 वर्षों में 8 लाख 954 करोड़ किसानों को 74,894 करोड़ रुपये की सहायता दी गई है। हम अगर वर्ष 2014 से पहले पांच वर्षों का फसल बीमा का आंकड़ा देखें तो 6 लाख 31 करोड़ किसानों को फसल बीमा का लाभ मिला था और वह राशि सिर्फ 26 हजार करोड़ थी। यह 26 हजार

करोड़ से 74 हजार करोड़, इतनी राशि बढ़कर किसानों को प्राप्त हुई है। इसके बावजूद भी मैं यह मानता हूं कि यह किसानों के हित का मामला है, इसलिए इसको परिमार्जित करने के द्वार हमेशा खुले रहने चाहिए। वे द्वार सरकार ने खोल रखे हैं। इस पर आप सबके सुझाव आमंत्रित हैं। उन सुझावों पर सरकार निश्चित रूप से विचार करेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान क्रेडिट कार्ड का ऐतिहासिक फैसला माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी जब प्रधान मंत्री थे और माननीय राजनाथ सिंह जी जब कृषि मंत्री हुआ करते थे, उस दौरान हुआ था। हम सब इस बात को जानते हैं कि गांव का किसान 5 हजार रुपये या 10 हजार रुपये का कर्ज लेने के लिए भी किसी साहूकार के पास जाता है। दो-चार बीघा जमीन का जो किसान है, उसकी जमीन तो ब्याज में ही चली जाती है। वाजपेयी जी के समय राजनाथ सिंह जी के मंत्रित्वकाल में यह निर्णय हुआ कि किसान क्रेडिट कार्ड बनाना चाहिए और तब से वह लगातार चल रहा है। आज भी अगर देखा जाए तो देश में 14.5 करोड़ भू जोत है। इसकी तुलना में अगर देखें तो 6.92 करोड़ लोगों को ही किसान क्रेडिट कार्ड प्राप्त हुआ है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने निर्देश दिया है कि के.सी.सी. के लिए कृषि मंत्रालय को एक अभियान चलाना चाहिए और हर किसान के पास किसान क्रेडिट कार्ड हो, हमको यह सुनिश्चित करना है। इस लक्ष्य को लेकर हम लोग निश्चित रूप से काम कर रहे हैं। कल यह बात भी आई थी कि किसानों को कर्ज ही नहीं मिलता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि किसान को कर्ज देने का जो लक्ष्य था, वह वर्ष 2015-16 में 8 लाख 50 हजार करोड़ रुपये का था। इसके विरुद्ध 9 लाख 15 हजार 509.92 करोड़ रुपये किसानों को ऋण उपलब्ध हुआ। वर्ष 2016-17 में लक्ष्य 9 लाख करोड़ था, उसके अगेंस्ट 10 लाख 65 हजार 755.67 करोड़ रुपये का ऋण प्राप्त हुआ। वर्ष 2017-18 में हमारा लक्ष्य था कि किसानों को कम से कम 10 लाख करोड़ रुपये का प्रवाह कृषि के क्षेत्र में होना चाहिए। अगर उसे हम उपलब्धि के रूप में देखें तो 11 करोड़ 68 लाख 502.84 करोड़ रुपये किसानों को मिले हैं।

(1315/KDS/AK)

वर्ष 2018-19 में हमारा जो लक्ष्य था वह 11 लाख करोड़ रुपये का था और 11 लाख 14 हजार 180.51 करोड़ रुपये किसानों को निश्चित रूप से मिल गए हैं। हम सब इस बात को जानते हैं कि हमारा जो किसान है, वह उत्पादन करने में कहीं भी पीछे नहीं है, लेकिन हम सभी व्यावहारिक रूप से इस बात का अनुभव करते हैं कि किसान को उसके उत्पादन का जो पूरा मूल्य मिलना चाहिए, वह पूरा मूल्य नहीं मिल पाता। इसलिए आपको ध्यान होगा कि स्वामीनाथ साहब की एक कमेटी बनी थी। उस कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट दी। अब लम्बे समय तक स्वामीनाथन जी का नाम तो चलता रहता है, लेकिन स्वामीनाथन जी की जो रिपोर्ट थी, उसको लागू करने का क्रम कब प्रारम्भ हुआ? स्वामीनाथ साहब ने कहा था कि फसल की लागत का डेढ़ गुना समर्थन मूल्य होना चाहिए। अगर डेढ़ गुना समर्थन मूल्य हुआ तो वर्ष 2018-19 में प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी सरकार ने ही तो डेढ़ गुना दिया। आज डेढ़ गुना समर्थन मूल्य मिल रहा है, उस पर डेढ़ गुना एमएसपी घोषित करके दाम घोषित किए जा रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से किसान के सामने जो बात आती है कि समर्थन मूल्य पर खरीद नहीं होती, मैं पूछना चाहता हूं कि वर्ष 2014 से पहले कितने राज्यों में खरीद हो रही थी? 2014 से 2019 तक अगर आप देखेंगे तो सर्वाधिक खरीद करने का काम नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने किया है और पहले गेहूं और चावल, दो ही फसलों की खरीद होती थी, किन्तु इस बार नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने दलहन और तिलहन की खरीद करने की पूरी कोशिश की है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अभी भी समझता हूं कि एमएसपी पर पूरी खरीद नहीं की जा सकती। एमएसपी का अपना एक सिद्धांत है। हम सब इस बात को जानते हैं कि जब यह सिद्धांत आया होगा तो निश्चित रूप से यह बात ध्यान में रही होगी कि जब फसल आती है तो फसल का अम्बार गांवों में लग जाता है। उस समय जब फसल की उपलब्धता ज्यादा है और खपत कम है तो दाम गिर जाते हैं, इसलिए सरकार को बीच में इंटरवीन करना चाहिए और सरकार समर्थन मूल्य घोषित करे, सरकार समर्थन मूल्य पर खरीदे, जिससे कि देश का अनाज सरकार के पास आ जाए और वह सार्वजनिक वितरण प्रणाली के भी काम आए और जब क्षेत्र में अनाज कम बचेगा तो निश्चित रूप से उसके दाम बढ़ जाएंगे। इस सिद्धांत के आधार पर एमएसपी किया गया था, लेकिन इसके बावजूद भी कई बार छोटे किसानों को परेशान होना पड़ता है। इसके लिए मार्केटिंग की व्यवस्था को और मजबूत करने की आवश्यकता है, इसलिए भारत सरकार ने इनाम परियोजना की शुरुआत की। मार्केटिंग का विषय भी स्वामीनाथ साहब ने ही कहा था और मुझे प्रसन्नता है कि मोदी सरकार बनने के बाद स्वामीनाथन साहब ने मोदी सरकार द्वारा कृषि के क्षेत्र में उनकी रिपोर्ट को लागू करने का जो प्रतिशत रहा है, उसकी प्रशंसा सार्वजनिक रूप से अखबार के माध्यम से की है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इनाम परियोजना को हम और मजबूत करना चाहते हैं। अभी तक 585 मंडियां उसमें जुड़ी हुई हैं और पूरे देश भर की मंडियां जुड़ जाएं और मामला ऑनलाइन हो और ऑनलाइन खरीद-फरोख्त अगर होगी तो निश्चित रूप से किसान को उसका लाभ अच्छे से मिल सकेगा। प्रधान मंत्री अन्नदाता आय संरक्षण स्कीम भाव अंतर की तर्ज पर है और इस स्कीम का उपयोग हम किसानों को लाभ देने के लिए निश्चित रूप से करते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले दिनों जब प्रधान मंत्री जी ने पीएम किसान सम्मान योजना की घोषणा की तो सारे देश ने उसका स्वागत किया, क्योंकि अगर 6 हजार रुपये का स्वागत नहीं होता तो 72 हजार रुपये वाले जीतते।

(1320/MM/SPR)

6000 का स्वागत हुआ तो 6000 वाला ही जीतकर आया है। इसलिए सम्पूर्ण देश ने तो निश्चित रूप से इस योजना का स्वागत किया है। लेकिन उसके पीछे जो मंशा है, मैं प्रधान मंत्री जी की उस मंशा को सदन के सामने प्रकट करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 14.5 करोड़ किसान हैं और इनमें से 12.5 करोड़ किसान ऐसे हैं जिनके पास भूमि का रकबा दो एकड़ अथवा दस बीघा से कम है। अब आप सोचिए कि जिसके पास दस बीघा धरती है, उस किसान की क्या हैसियत होगी? वह उत्पादन भी करेगा तो कितना कर लेगा? अगर उसका भरा-पूरा परिवार है और उसका पूरा परिवार खेती में काम करता है, अगर काम

की मजदूरी को वह 365 दिन में बांटता है तो उसे क्या मिलेगा? पहली बार, ऐसा किसान जो अपने उत्पादन को मंडी तक भी नहीं ले जा पाता था, ऐसा किसान जिसको समर्थन मूल्य का भी फायदा नहीं मिलता था, ऐसा किसान जिनको भावांतर योजना का भी फायदा नहीं मिलता है, ऐसे 12.5 करोड़ किसानों की तरफ नरेन्द्र मोदी जी का ध्यान गया और तब उन्होंने पीएम किसान सम्मान योजना का आरम्भ किया। मुझे कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पीएम किसान सम्मान योजना कोई नारा नहीं है। उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग बैठे हुए हैं, अन्य प्रांतों के लोग भी बैठे हुए हैं। जिन प्रांतों ने आगे बढ़कर अपने किसानों की सूची केन्द्र सरकार को सब्मिट कर दी, बिना किसी दलाल और बिचौलिए के किसान के खाते में करोड़ों रुपये जमा कराने का काम नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने किया है। ...(व्यवधान)

श्री गणेश सिंह (सतना): मध्य प्रदेश में यह स्कीम लागू नहीं हुई है। ...(व्यवधान)

श्री दुष्यंत सिंह (झालावाड़-बारां): राजस्थान में भी लागू नहीं हो रही है। ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर : माननीय अध्यक्ष महोदय, गणेश सिंह जी और दुष्यंत सिंह जी ने कहा है कि उनके राज्य में लागू नहीं हो रहा है। मैं आपके माध्यम से उन दोनों राज्यों और देश की सभी राज्य सरकारों से अनुरोध करना चाहुंगा कि भारत सरकार ने पर्याप्त प्रावधान कर रखे हैं, जल्दी से जल्दी किसानों की सूची वे हमें सब्मिट करें, जिससे हम उन किसानों के खाते में भी 6000 रुपये वार्षिक भेजने का काम कर सकें।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस रकम को कम कहा गया। किसी ने इसे ऊंट के मुंह में जीरा कहा। मैं दो चीजें ध्यान दिलाना चाहता हूं। हम मान लेते हैं कि यह 6000 रुपये ऊंट के मुंह में जीरा है तो इतिहास में इससे पहले इन गरीब किसानों के मुंह में जीरा डालने का प्रयास क्या किसी सरकार ने किया? अगर यह अपर्याप्त है तो मैं यह भी पूछना चाहता हूं कि आप से पहले क्या इस देश में कोई ऐसी योजना थी, जिस योजना के माध्यम से किसान को केन्द्र सरकार के बजट से निकालकर 87 हजार करोड़ रुपये एक साल में उसकी जेब में डालने का काम किया गया? यह पहली बार हुआ है और इसका सर्वत्र राजनीति से ऊपर उठकर स्वागत होना चाहिए।

दूसरा, किसान पेंशन योजना का भी ऐतिहासिक निर्णय हुआ। हम सब जानते हैं कि जो लोग किसानी करते हैं या बटाई से कराते हैं या बड़े किसान हैं और ठेके पर खेती कराते हैं, उनको तो वह दर्द महसूस नहीं होता है, लेकिन जो खेत में हल चलाता है और मेहनत करके किसानी करता है, उसकी क्षमता 60 साल के बाद कम हो जाती हैं। ऐसे किसानों को भी सम्मान मिल सके, सामाजिक सुरक्षा मिल सके, इस दिशा में निश्चित रूप से प्रधान मंत्री पेंशन योजना का बहुत बड़ा योगदान है। हम सब इस बात को भी जानते हैं कि वेयरहाउस और कोल्ड स्टोरेज का काफी काम पिछले दिनों में हुआ है और धीरे-धीरे यह और आगे बढ़ रहा है। लेकिन यह जो बड़े वेयरहाउस हैं, इनमें छोटे किसान का उत्पादन नहीं आ पाता है। इसलिए हम एक नई ग्रामीण भंडारण योजना बना रहे हैं। जिसमें गांव के क्षेत्र में ही गोदाम बनाया जाएगा, जिसमें किसान लोग अपनी फसल रख सकते हैं। जैसे ही मूल्य ठीक होगा, वे बेचने का काम कर सकते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्षा आधारित क्षेत्र पर काम करना बहुत आवश्यक है। सरकार इसके लिए बहुत गम्भीर है। पानी का संकट भी है, लेकिन वर्षा आधारित क्षेत्र में भी किसान अच्छा उत्पादन कर सके। अभी भी वर्षा आधारित क्षेत्र हमारे यहां 56 प्रतिशत है।

(1325/SJN/UB)

लेकिन वहां के किसानों का उत्पादन में 44 प्रतिशत योगदान है। यह और बढ़े, इसके लिए सरकार पूरी तरह से गंभीर है। हमने एग्रीकल्चर मेकेनाइजेशन का भी काम किया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां पर हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के सभी जन प्रतिनिधिगण बैठे हुए हैं। पराली जलाने का काम वर्षों से हो रहा है। जब पराली जलाई जाती थी, तो दिल्ली में धुंध छा जाती थी और सात-आठ दिनों तक वातावरण खराब रहता था। हमने इस योजना को हाथ में लिया है और 50 प्रतिशत किसानों को इक्विपटमेंट चेक कराके उनको देने का काम किया है। आपको इस बार पराली के मामले में निश्चित रूप से अंदर दिखाई दे रहा होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जब हमको न्यू इंडिया की ओर बढ़ना है और पांच ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी का हिन्दुस्तान बनाना है, तो उसमें निश्चित रूप से किसान का योगदान बहुत आवश्यक है। इसलिए, इसी लक्ष्य को लेकर हम लोग बहुत तेजी के साथ इस देश में काम कर रहे हैं। कृषि के क्षेत्रों में इनोवेशन हो, इन्वेस्टमेंट हो, इन्सिट्यूशनलाइजेशन हो, इन्फ्रास्ट्रक्चर हो, इन्ट्रीगेटेड एग्रीकल्चर और इन्सेंटिव फॉर एग्रीकल्चर, इन सब सूत्रों के साथ हम कृषि के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। हम खेत को भी स्मार्ट बनाएंगे, हम किसान को भी स्मार्ट बनाएंगे, हम हिन्दुस्तान को भी स्मार्ट बनाएंगे। निश्चित रूप से आने वाले कल में नए भारत के योगदान में भारत के किसानों का महत्वपूर्ण योगदान होगा, मैं ऐसा विश्वासपूर्वक कह सकता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं और इसी के साथ मैं अनुदान मांगों को पारित करने का आग्रह करता हूं।...(व्यवधान)

(इति)

माननीय अध्यक्ष : श्री मुलायम सिंह यादव जी।

…(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी) : अध्यक्ष महोदय, आज भी 65 फीसदी किसान गरीबी की रेखा से नीचे हैं। आप इसको तो भूल गए हैं और जो भी बच गए हैं, वे किसान भी कर्ज़दार हैं। आप आज कह रहे हैं कि किसान मालदार हो गया है। पूरे हाउस में पता नहीं क्या है, जिसे हम लोग सुन रहे हैं। आज भी किसान सबसे ज्यादा गरीब है और वह सबसे ज्यादा मेहनत करता है। अगर उसकी मेहनत को जोड़ दें, उसकी पत्नी की मेहनत को जोड़ दें, उसके लड़के और बच्चे सब काम करते हैं, अगर आप उनकी मेहनत को जोड़ेंगे, तो किसान जितना घाटे में है, उतना और कोई घाटे में नहीं है। सारे धंधे मुनाफे के हैं, लेकिन किसान का काम घाटे का है। इसलिए, मंत्री जी के द्वारा कम से कम सदन के अंदर सच्चाई आनी चाहिए। आप बता दीजिए, उसकी पत्नी, लड़के और बच्चे सब काम करते हैं। उनकी मेहनत उसमें जोड़ दीजिए और बता दीजिए कि किसान को कितना लाभ हुआ है।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, कल रात को भी 12 बजे तक दोनों मंत्रालयों के विषयों पर बड़ी डिटेल में चर्चा हुई थी और आज भी माननीय मंत्री जी ने बड़े डिटेल में जवाब दिया है। अगर कोई स्पेशल स्पष्टीकरण मांगना हो, तो आप मांग लीजिए, लेकिन इस चर्चा को दोबारा मत शुरू कीजिए।

…(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर) : तोमर साहब ने तो सुमेरू से लेकर कुमेरू घूम लिया है, नार्थ पोल से साउथ पोल घूम लिया है, लेकिन इनको यह नहीं दिखाई दिया है कि हिन्दुस्तान में रोजाना 36 किसान खुदकुशी कर रहे हैं। मैं एक और बात कहना चाहता हूं कि मंत्री जी ने कृषि सिंचाई योजना के बारे में कहा था। आप बजट में देखिए कि कृषि सिंचाई योजना में 2015-16, 2016-17, 2017-18 और 2018-19 में शार्टफॉल होते जा रहे हैं। वर्ष 2015-16 में 14 प्रतिशत शार्टफॉल और वर्ष 2018-19 में 26 प्रतिशत शार्टफॉल आपके हिसाब के मुताबिक हुआ है। आप बागवानी की बात करते थे, बागवानी में भी वर्ष 2012-13 से 2017-18 तक शार्टफॉल दिखाई दे रहे हैं। आखिरी शार्टफॉल 12.6 प्रतिशत है। आपने एग्रीकल्चर रिसर्च की बात कही है। एग्रीकल्चर रिसर्च में आपको यह कहना पड़ेगा कि जीडीपी के मुकाबले…(व्यवधान)

महोदय, मैं स्पष्टीकरण मांग रहा हूं। महोदय, एक मिनट और दे दीजिए।…(व्यवधान) यह क्या है, एक मिनट और दे दीजिए।…(व्यवधान) तोमर जी, नार्थ-ईस्टर्न स्टेट में एग्रीकल्चर में जो क्रेडिट देते हैं, it is less than one per cent in the entire North-Eastern States. यह डिस्क्रिमिनेशन कैसे होता है? किरेन रिजीजू साहब आपके पीछे बैठे हैं। Less than one per cent of agricultural credit is being distributed to the entire North-Eastern Region. ईस्टर्न रीज़न में जब यूपीए की सरकार थी, तब दूसरा ग्रीन रेव्युलूशन यानी दूसरी क्रांति करने की बात कही गई थी, क्योंकि पंजाब, हरियाणा…(व्यवधान) हरित क्रांति के लिए ईस्टर्न इंडिया को चुना गया था।…(व्यवधान) मैं उसके बारे में आपसे जानकारी लेना चाहता हूं।…(व्यवधान)

(1330/GG/KMR)

श्री वीरेन्द्र सिंह (बलिया): अध्यक्ष जी, जिस सवाल को अधीर रंजन जी, …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप उनका जवाब मत दें। जवाब मंत्री जी देंगे

…(व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र सिंह (बलिया): अध्यक्ष जी, मैं आपसे ही कह रहा हूँ। आपके माध्यम से ही मैं कह रहा हूँ। कृषि और किसान क्षेत्र की समस्या एक दिन में नहीं खड़ी हुई है और न ही एक ही दिन में समाधान होने वाला है। मैं किसान हूँ इसलिए इस बात को जानता हूँ। लेकिन मैं चुनौती के साथ कहता हूँ, चैलेंज कर के कहता हूँ कि हमारी सरकार, हम उस दल के सांसद हैं, इस कारण से मैं यह नहीं कह रहा हूँ।

मुलायम सिंह जी, आप समाजवादी आंदोलन के कार्यकर्ता हैं। आप बताइए कि यूपीए की सरकार कभी किसानों के हित में फैसला लिया है? …(व्यवधान) अध्यक्ष जी, बजट देख लीजिए कभी भी इस सरकार की तुलना में कोई काम किया हो तो मैं कह सकता हूँ। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप सुबह से ऐसे ही कर रहे हैं, मैं कई बार आपको आग्रह कर चुका हूँ। जब आपके नेता को मैंने स्पष्टीकरण के लिए कह दिया तो मैं सदन में माननीय नेताओं से कहूंगा कि अपने सदस्यों से कहें कि डिसीप्लेन बना कर रखें।

बी. महताब जी बोलिए।

…(व्यवधान)

SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Hon. Speaker, Sir, yesterday the discussion continued till 11:59 in the night. It was a long discussion. There is one issue on which I need clarification from the Government and that is relating to farming being done by women. This has not been discussed in such a long discussion that we have had here.

Oxfam had published a report a decade ago about women doing 80 per cent of India's farm work though only 13 per cent of the land is owned by women. Even today the pronoun used for a farmer in our country is 'he'. It is not gender neutral. It is the male who dominates farm sector policy-making mindset. That is why I put this question to the Union Government. Women account for 33 per cent of farm labour and 48 per cent are self-employed farmers. In Uttar Pradesh, women own under 18 per cent of the agricultural land. In Kerala, which is supposed to be one of the most literate States in the country, the percentage of women owning agricultural land is not more than 14 per cent, as per NSSO survey. What steps is the Government taking – because land reform and land title is also a part of the Union Government's agenda of Rural Development

Ministry – to move away from the entrenched patriarchy which has resulted in women being discriminated against? Is there any move in this regard?

कुंवर दानिश अली (अमरोहा): अध्यक्ष महोदय, मैं एक छोटा सा स्पष्टीकरण आपके माध्यम से सरकार से चाह रहा हूँ। उत्तर प्रदेश के अंदर किसान जो किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से लोन लेते हैं, क्या मंत्री जी यह डायरेक्ट करेंगे कि जो किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से लोन लिया जाता है, उस सारी जमीन को जो मॉर्टगेज कर के प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के तहत जो उनसे प्रीमियम वसूल किया जाता है, उसको वॉलेंट्रीली बनाएंगे? दूसरा, कि यह जो प्रीमियम तो किसान से इंडिविजूअली वसूला जाता है, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना के तहत, लेकिन उनको कंपनसेशन इंडिविजूअली नहीं दिया जाता है। अभी भी कहा जाता है कि यूनिट को कंपनसेशन दिया जाएगा, ब्लॉक को, तहसील को, या कुछ गांव को मिला कर दिया जाएगा। क्या ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि जब किसान इंडिविजूअल प्रीमियम देता है तो उसको मुआवजा भी इंडिविजुअल ही मिलना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष : आप इतना समझाने की कोशिश मत करो। मंत्री जी बहुत अनुभवी हैं। राज्य में भी कृषि, ग्रामीण विकास के मंत्री रहे हैं। आप सिर्फ स्पष्टीकरण पूछिए, जवाब मिल जाएगा।

…(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली (अमरोहा): अध्यक्ष जी, इसीलिए मैं चाहहूंगा कि जवाब मिल जाए।

…(व्यवधान)

SHRI KODIKUNNIL SURESH (MAVELIKKARA): Sir, yesterday also I was here till 12 o'clock. Please allow me.

माननीय अध्यक्ष : आप अपने नेता से कहें कि आपको चांस दे दें, आपको दिला दूंगा। एक पार्टी से एक ही माननीय सदस्य बोलेगा।

…(व्यवधान)

(1335/SNT/KN)

SHRI JAYADEV GALLA (GUNTUR): Sir, regarding PM-KISAN Scheme, I just want a clarification. Is the Scheme meant for farmers who are in distress? Is it meant for making agriculture viable? Is PM-KISAN Scheme a direct cash transfer scheme to improve rural consumption? In other words, is it for improving rural production or is it for improving rural consumption? That is what I would like to know.

माननीय अध्यक्ष : श्री नामा नागेश्वर राव। मैंने सदन में पहली बार परम्परा शुरू की है, इसलिए माननीय सदस्यगण एक लाइन का स्पष्टीकरण पूछिए।

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम): सर, मंत्री साहब ने काफी अच्छी तरह से डिटेल्स के साथ सब कुछ कवर किया है। हम लोगों की क्लेरिफिकेशन यही है कि पीएम आवास योजना से गरीब को घर मिले, यह बहुत ही अच्छी बात है। उसके लिए वर्ष 2022 तक सब गरीब को घर मिलना है। इसमें

हमारी रिक्वेस्ट इतनी है, कल भी हाउस में बात हुई थी कि एक लाख बीस हजार रुपये घर के लिए मिलते हैं। अभी यह एक रूम बनता है, उस एक रूम में माँ-बाप और बाल-बच्चों के साथ रहने में दिक्कत है। उसको डबल रूम दे दें। अभी हमारे तेलंगाना में डबल रूम का दे दिया है, उसमें पाँच लाख रुपये का खर्च है।

दूसरा, किसान को जो छ: हजार रुपये दे रहे हैं, उसको तीन दफा की जगह दो दफा में दे दें। इसके लिए हम लोग तेलंगाना में प्रति एकड़ प्रति किसान के लिए 10,000 रुपये दे रहे हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : श्री हसनैन मसूदी।

श्री हसनैन मसूदी (अनन्तनाग): स्पीकर साहब, छोटा सा स्पष्टीकरण है। जो सम्मान योजना है, क्या यह लैंड के साथ लिंक्ड है? अगर लैंड के साथ लिंक्ड है तो 55 परसेंट एग्रीकल्चरिस्ट्स लैंडलैस हैं तो वे इससे बाहर हो जाते हैं। इसका मतलब है कि 14 करोड़ में से सात करोड़ से ज़्यादा बाहर जाते हैं। अभी तक जो अनुभव है, वह यही है कि लैंड के साथ लिंक्ड है।

दूसरा यह है कि हमारे यहां रूरल डेवलपमेंट की सबसे बड़ी समस्या है। अंडर यूटिलाइजेशन, अनस्पैंट मनी को आप कैसे कॉम्बैट करेंगे। How will you address that problem which is being witnessed around the country? कम पैसा खर्च किया जा रहा है। क्या स्कीम को इम्प्लिमेंट करने के लिए पैसा दिया जा रहा हैं?

माननीय अध्यक्ष : मंत्री जी, क्या आप जवाब देंगे?

कृषि और किसान कल्याण मंत्री; ग्रामीण विकास मंत्री तथा पंचायती राज मंत्री (श्री नरेन्द्र सिंह तोमर): माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुलायम सिंह जी सदन के बहुत ही वरिष्ठ सदस्य हैं। उन्होंने शायद ऐसा व्यक्त किया कि मैंने ऐसा कहा है कि पूरे किसान खुशहाल हो गए हैं। मैंने बिल्कुल भी ऐसा नहीं कहा है। मैं जब अपनी बात रख रहा था, तब मैंने यह बात कही थी कि जो छोटा किसान है, अगर उसके पाँच लोगों के परिवार का आकलन करें, वे पाँचों-पाँचों उस खेत में काम करते हैं। अगर उनकी मजदूरी को 365 दिन में बाँट दिया जाए तो उनकी मजदूरी थोड़ी सी होती है। लेकिन इसको शनै: शनै: बढ़ाने का प्रयास भारत सरकार कर रही है। जो प्रयत्न हो रहे हैं और ये प्रयत्न चौतरफा होने चाहिए। इसलिए चौतरफा प्रयत्न किए जा रहे हैं। सिंचाई की दृष्टि से भी प्रयत्न किया जा रहा है, योजनाओं की दृष्टि से भी प्रयत्न किया जा रहा है, सब्सिडी की दृष्टि से भी प्रयत्न किया जा रहा है, पेंशन की दृष्टि से भी प्रयत्न किया जा रहा है, पीएम किसान योजना के अंतर्गत भी प्रयत्न किया जा रहा है, एमएसपी बढ़ाने की दृष्टि से भी प्रयत्न किया जा रहा है। ऐसे चौतरफा प्रयत्न चल रहे हैं। फसलों का विविधीकरण हो और फसलों का डायवर्सिफिकेशन हो। एक व्यक्ति दस बीघा का किसान है, अगर वह गेहूँ के बजाय फलों पर चला जाए तो शायद उसकी उत्पादकता भी बढ़ जाएगी, उसकी आमदनी भी बढ़ जाएगी। ये प्रयत्न शनै: शनै: चलते हैं। मैंने यह नहीं कहा कि सारे किसान खुशहाल हो गए हैं। मैंने कहा कि किसान के चेहरे पर लाली आए और देश में खुशहाली आए, इसके लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता है। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ।

दूसरा, यह छ: हजार रुपया जब से दिया है, तब से निश्चित रूप से आप इतना तो मान ही सकते हैं कि किसान की आमदनी में वृद्धि हुई है। छ: हजार रुपये की वृद्धि तो हुई है। इसे तो हम जोड़ ही सकते हैं।

दूसरा, जो कहा गया कि पीएम किसान योजना, यह भूमि जोत वाला किसान है, उसी से संबंधित है तो हाँ, यह उसी से संबंधित है और साढ़े 14 करोड़ किसान वे हैं, जिनके नाम पर ऑलरेडी जोत हैं।

(1340/CS/GM)

दूसरी आवास वाली बात भाई साहब ने कही। निश्चित रूप से किसी को बहुत अच्छा आवास मिले, इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है, लेकिन जब एक कमरे के आवास, रसोई, शौचालय की योजना शुरू हुई, तब ही लोगों के दिमाग में यह बात आई कि दो कमरे का मकान होना चाहिए। नहीं तो पहले एक कमरा ही नहीं था, तो लोगों के लिए दो और ढाई कमरे के मकान के बारे में सोचना ही मुश्किल था। अभी तो यह योजना उसी प्रकार की है, लेकिन आगे कभी अवसर आएगा, तो इसे देखेंगे।

दूसरा, खेती की जमीन का अधिकतम उपयोग हो, वह मैंने पहले ही कहा कि बहुत सारा क्षेत्र ऐसा है, जो वर्षा आधारित है और बंजर क्षेत्र है, उसका खेती की दृष्टि से उपयोग नहीं हो पाता। इसलिए वर्षा आधारित क्षेत्र में भी आईसीएआर ने जो काम किया है, उसका बड़ा उपयोग हो रहा है। उनके क्षेत्रों में खेती बढ़ रही है और किसान खेती की तरफ उत्सुक हो रहा है।

दूसरा, जब फाइनेंस मिनिस्टर उस दिन अपनी बात रख रहे थे, तो उन्होंने कहा था कि अन्नदाता को ऊर्जादाता बनाना है। अन्नदाता को ऊर्जादाता बनाना, यह कोई नारा नहीं है, वह अन्नदाता किसान, जिसके पास ऐसी खेती है, जिसमें कोई भी फसल उगायी नहीं जा सकती, तो ऐसा किसान अपनी खेती में सोलर एनर्जी का उत्पादन कर सकता है। वह स्वयं करेगा, तो उससे भारत सरकार बिजली खरीदेगी, अगर किसी डेवलपर के साथ मिलकर करेगा, तो उससे भारत सरकार खरीदेगी। इस दृष्टि से किसान ऊर्जादाता के रूप में भी इस देश का बनेगा, यह हमारी भावी योजना है।

माननीय अध्यक्ष : श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन जी, क्या आप ग्रामीण विकास मंत्रालय पर प्रस्तुत अपने कटौती प्रस्ताव को वापस लेना चाहते हैं?

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Hon. Speaker, Sir, I have already moved 16 Cut Motions to Demands No. 84 and 85 and 17 Cut Motions to Demands No. 1 and 2. I raised the issue of discrimination under Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana as far as the States of Southern India are concerned. The hon. Minister assured me yesterday that a meeting of the concerned Members of Parliament of Kerala will be convened in his chamber next Wednesday. So, I am not moving Cut Motions to Demands No. 84 and 85. I would like to have the attention and the assurance of the hon. Minister and let it be on record also that the hon. Minister has already agreed. It would be a good thing if the hon. Minister can make the assurance in this House also.

I withdraw the Cut Motions to Demands No. 84 and 85.

माननीय अध्यक्ष : क्या सभा की यह इच्छा है कि श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन द्वारा प्रस्तुत किए गए कटौती प्रस्ताव संख्या 3 से 19 को वापस लिया जाए?

कटौती प्रस्ताव सभा की अनुमति से वापस लिए गए।

माननीय अध्यक्ष : अब मैं डॉ. एम.के.विष्णु प्रसाद द्वारा प्रस्तुत कटौती प्रस्ताव संख्या 26 से 29 को सभा के समक्ष मतदान के लिए रखता हूँ।

कटौती प्रस्ताव मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।

...

माननीय अध्यक्ष : कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगों पर श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन तथा डॉ. एम.के.विष्णु प्रसाद द्वारा अनेक कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं। मैं अब सभी कटौती प्रस्ताव सभा के मतदान हेतु रखूँगा।

कटौती प्रस्ताव मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।

...

(1345/RV/RK)

माननीय अध्यक्ष: अब मैं ग्रामीण विकास मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगें सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है:

> "कि अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 2 में ग्रामीण विकास मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 84 और 85 के सामने दर्शाये गए मांग शीर्ष के संबंध में 31 मार्च, 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष में संदाय के दौरान होने वाले खर्चों की अदायगी करने हेतु अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 4 में दर्शायी गयी राजस्व लेखा तथा पूंजी लेखा संबंधी राशियों से अनधिक संबंधित राशियां भारत की संचित निधि में से राष्ट्रपति को दी जाएं।"

<u>प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।</u>

माननीय अध्यक्ष: ग्रामीण विकास मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगें पारित हुईं।

माननीय अध्यक्ष: अब मैं कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगें सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है:

> "कि अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 2 में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 1 और 2 के सामने दर्शाये गए मांग शीर्ष के संबंध में 31 मार्च, 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष में संदाय के दौरान होने वाले खर्चों की अदायगी करने हेतु अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 4 में दर्शायी गयी राजस्व लेखा तथा पूंजी लेखा संबंधी राशियों से अनधिक संबंधित राशियां भारत की संचित निधि में से राष्ट्रपति को दी जाएं।"

<u>प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।</u>

माननीय अध्यक्ष: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगें पारित हुईं।

सामान्य बजट - अनुदानों की मांगें – जारी
युवा मामले और खेल मंत्रालय

1346 बजे

माननीय अध्यक्ष: आइटम नं. 24.

अब सभा में युवा मामले और खेल मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांग संख्या 100 को चर्चा तथा मतदान के लिए लिया जाएगा।

सभा में उपस्थित जिन माननीय सदस्यों के युवा मामले और खेल मंत्रालय से संबंधित अनुदानों की मांगों पर कटौती प्रस्ताव परिचालित किए गए हैं, यदि वे अपने कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहते हैं तो 15 मिनट के भीतर सभा पटल पर पर्चियां भेज दें जिनमें उन कटौती प्रस्तावों की संख्याएं लिखी हों जिन्हें वे प्रस्तुत करना चाहते हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत किए गए कटौती प्रस्तावों की क्रम संख्याओं को दर्शाने वाली सूची कुछ समय पश्चात् सूचना पट्ट पर लगा दी जाएगी। यदि सदस्यों को उस सूची में कोई विसंगति मिले तो वे उसकी सूचना तत्काल सभा पटल पर मौजूद अधिकारी को दे दें।

प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ:

> "कि अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 2 में युवा मामले और खेल मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 100 के सामने दर्शाये गए मांग शीर्ष के संबंध में 31 मार्च, 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष में संदाय के दौरान होने वाले खर्चों की अदायगी करने हेतु अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 4 में दर्शायी गयी राजस्व लेखा तथा पूंजी लेखा संबंधी राशियों से अनधिक संबंधित राशियां भारत की संचित निधि में से राष्ट्रपति को दी जाएं।"

1348 hours

SHRI B. MANICKAM TAGORE (VIRUDHUNAGAR): Thank you, Speaker, Sir. "India is an old country, but a young nation; and like the young, everywhere we are impatient. I am young, and I too have a dream. I dream of a strong India, independent and self-reliant in the front-rank nations of the world in the service of mankind." With this quotation of Shri Rajiv Gandhi, I would like to initiate the discussion on the Demands for Grants under the control of the Ministry of Youth Affairs and Sports.

1349 hours (Shri N.K. Premachandran *in the Chair*)

In this financial year, the hon. Finance Minister has allotted Rs.2,216 crore to the Ministry of Youth Affairs and Sports. I must reiterate the famous proverb: "BJP's New India: A trillion dollar dream but with a million dollar mindset". The hon. Minister is here and I would like to start with his Party's vision document, the Election Manifesto of 2014. At Page No.20, it speaks about the 'youth making India unstoppable'. The Party has also made some promises, for example, Young Leaders Programme, setting up a National Youth Advisory Council, District level Incubation and Accelerator Programme, for encouraging innovation and entrepreneurship, availing students' loan, and setting up of Neighbourhood Youth Parliament across India.

(1350/PS/MY)

A 'Youth for Development' programme has also been promised. But all these promises have been kept as promises only. The target and the Party's policy documents speak about "Where were we; where have we arrived and what more needs to be done." The Party's document is also the Government's document. I presume that this House has, at least, the right to know the deliveries made by the Government on its written promises mentioned in the policy document as well as the document of 2014. It was just a *jhumla* document.

The BJP in 2019 in its 'Sankalp Patra' on page no. 27, speaks about 'Youth in Governance'. It is mentioned that there would be incentives and rewards for the youth who would engage with society. But when I see the Grants under the Nehru Yuva Kendra Sangathan, Rajiv Gandhi National Institute of Youth Development and Young Leaders Programme, I doubt whether the Government truly wants to walk the talk on its election promises or just simply wants to kill the institutions having the names of certain individuals who built this nation.

The Neighbourhood Youth Parliament, Young Leaders Awards and National Youth Advisory Council are programmes to encourage leadership amongst youth. It is something on which the hon. Prime Minister has focussed repeatedly while speaking on 'Mann Ki Baat'. But it has seen zero budget allocation.

The 'Sankalp Patra' also talks about special awareness and treatment of substance abuse. Though this being predominantly a health issue, but it is high time, we see abuses beyond the traditional scope. Substance abuse has become so normal that we have started taking it for granted. For addressing the doping agencies issues, the budgetary allocation for anti-doping agencies is minimal. What we need for this issue is a dedicated awareness campaign. Advertisement and Marketing – which this Government is expert in – is the best alternative to propagate this message against substance abuse amongst youth. But, strikingly, the Budget has minimum allocation for such informative spending, while programmes like 'Beti Bachao, Beti Padhao' have more advertising budget than the scheme itself. But what I want to emphasise is that we do not want to have an 'Udta India' just like 'Udta Punjab', which was created because of the policies of Akali and BJP in Punjab.

Now, I come to youth hostels. It should form the core of Government's strategy to boost its Sadbhavana Scheme for Jammu and Kashmir students. It has hardly seen any capital allocation. At times like these, when the youth, especially from the Scheduled Casts or Scheduled Tribes are travelling across India, it is important that the Government should provide them with suitable accommodation in the hostels. It is very disheartening to see that out of the 80 hostels under Youth Hostels, only 50 are in a functional state. I would like to request the hon. Minister to stay in one of such hostels to see the conditions prevailing there. I hope that his stay will improve the youth hostels. Across India we should have, at least, one youth hostel in each district.

Sports is the primary agenda of the existence of this Ministry. I was stunned by the budgetary allocations made by the Ministry for several federations which are responsible for looking after Sports in India. About Rs. 9 crore has been allocated for Hockey; Rs. 9.6 crore for National Rifle Association; Rs. 1.3 crore to Athletics Federation of India. Is this how we are going to attain our dream to be in the top table of the Olympics? Is this how the daughters of our country, like Hima Das, P.T. Usha and Geeta and thousands of girls inspired by them, come out of their shortcomings and truly shine in front of the world? How long does Modiji will hide behind 'rags to riches stories' of our hardworking sons and daughters? My colleague Shri Rathore is sitting here. Who will take the responsibility for the disaster of Rio Olympics? We

need to have a concrete plan and not tweets and challenge videos to make a difference in the field of sports.

(1355/RC/CP)

I would now like to speak about Nehru Yuva Kendra Sangathan. It is a pan India organisation which has been on the receiving end of this Government's hatred for the Nehruvian Institutions. Beyond the paltry token sum allocation of Rs.257 crore, 39 per cent of the posts in the Organisation are lying vacant. In the NYKS, around 500 officials have retired and are getting their pensionary benefits from NYKS. As an autonomous body, it should have formulated NYKS Pension Trust with a seed money of Rs.25 crore for the benefit of pensions as is being done in other autonomous bodies. Will the Minister take action in this regard?

A demographic dividend of more than 40 per cent of our population inspires India to spend 229 million dollars on sports in 2019-20 while the United Kingdom spent 1.5 billion dollars in 2016. We take pride in taking over them in GDP capitalization yet we fail to overtake sporting ambitions of our colonial rulers. I hope that the Minister will look into it and convince the Finance Minister to allocate more funds to the Ministry of Sports.

It seems that the Government actively wants the Youth side of this Ministry to decay to help the cause of certain right wing organisations which want to occupy that social space. National Service Scheme, Young Leaders Programme, Scouts and Guides were all made to forward the cause of social service amongst our Indian Youth.

I used to be associated with youth club in my school days. Now these clubs are on the verge of disappearance in villages. In my district, there are around 80 youth clubs only. Can our young Minister have a vision for the future of India? In each Panchayat, let us have one youth club which will be funded with an amount of Rs.1 lakh per year. It will have a great impact in rural areas. I would like to suggest that these kinds of steps will have to be taken up in rural areas to engage the youngsters in rural areas. Like this, we can create a new India which we plan to have. Shri Rajiv Gandhi had dreamt of 21st century for youth under NYKS.

I hope the Minister will reply to the points which I have raised.

(ends)

TEXT OF CUT MOTTIONS

1358 बजे

श्री बृजभूषण शरण सिंह (कैसरगंज): महोदय, मैं वर्ष 2019-20 के लिए युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के नियंत्रणाधीन अनुदानों की मांगों के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं अपनी पार्टी को और आपको धन्यवाद देता हूं कि इस महत्वपूर्ण चर्चा में मुझे बोलने का मौका दिया।

सभापति महोदय, छात्र जीवन में एक स्लोगन हम पढ़ते थे कि

"युवा शक्ति के बल पर ही जग की आजादी पलती है,

इतिहास उधर ही चलता है, जिस ओर जवानी चलती है। "

जहां तक वर्तमान सरकार की बात है, हमारे पूर्व के खेल मंत्री भी यहां उपस्थित हैं, हमारे वर्तमान खेल मंत्री भी यहां उपस्थित हैं। मैं प्रधान मंत्री जी के बारे में कहना चाहता हूं। किसी ने कहा कि जहां न जाए रवि, जहां सूर्य की किरण न पहुंचे, वहां जाए कवि, वहां कवि का दिमाग जाता है और पत्रकार का दिमाग जाता है। जिस क्षेत्र में किसी का दिमाग काम न करे, वहां नरेन्द्र मोदी जी का दिमाग जाता है। यह चिंतन से निकलता है। ये नई-नई चीजें, ऐसे ही नहीं निकलती हैं, चिंतन से निकलती हैं।

(1400/NK/SNB)

इस चिंतन का परिणाम है खेलो इंडिया, इसी चिंतन का परिणाम है स्टार्ट अप इंडिया, इसी चिंतन का परिणाम है स्किल इंडिया, इसी चिंतन का परिणाम है मेक इन इंडिया और इसी चिंतन का परिणाम है योगा डे। जब चिंतन बढ़ता है तो बुद्ध पैदा होते हैं, जब चिंतन बढ़ता है तो विवेकानन्द पैदा होते हैं, जब चिंतन बढ़ता है तो गुरू गोविन्द सिंह पैदा होते हैं, चिंतन बढ़ता है तो कबीर पैदा होते हैं। यही जब चिंतन बढ़ता है तो मन की बात जैसे कार्यक्रम पैदा होते हैं। यह ऐसे नहीं होता है, यह चिंतन से होता है। वर्ष 2014 से चाहे खेल के क्षेत्र हो या जितने क्षेत्र भी मैंने गिनाए या नहीं गिनाए। मैं जब प्रधान मंत्री जी के काम को देखता हूं या फिर उनके साथ लगे हुए सहयोगी मंत्रियों को देखता हूं तो मुझे एक कविता याद आती है जो हमारे प्रधान मंत्री जी के जीवन के लिए फिट बैठती है। यह कविता प्रधान मंत्री जी के लिए है:

"दीप सा जला निरंतर जीवन भर
जल कर ढल कर जग का अंधियारा दूर किया
अंगारों पर बैठा मुस्काता रहा सदा
सब दर्द भीतर ही भीतर चूर किया"

किसी ने कहा है:

जाके पांव न फटी बिवाई ता का जाने पीर पराई
सब दर्द दाह भीतर ही भीतर चूर किया
पग-पग पर मजबूरी जंजीर पहनाती थी
पर कभी मुसीबत के आगे सिर झुका नहीं
सौ बार पहाड़ पंथ पर आकर खड़े हुए
फिर भी तूफानी पग रुका नहीं
आंधिया घिरी घन मंडराए ओले बरसे

कोई शैतान कह रहा है कोई मौत का सौगदागर कह रहा है

आंधिया घिरी घन मंडराए ओले बरसे
कांटों ने दामन थाम इन्हें पथ पे रोका
अवरोध किया चट्टानों ने इनके गति का
सौ बार गरजकर सागर ने इनको टोका
जीवन का अंचल किंत नहीं छोड़ा कर
खुद पर अजेय विश्वास लिए मैं बढ़ा चला
सौ बार विफलता की आंधी से टकराया पर
कभी पराजित नहीं हुआ।

मान्यवर, मुझे वह दिन याद है, सन 1984 में इस पार्टी का मजाक उड़ाया गया था। उस समय अटल जी हमारे पार्टी के नेता होते थे। उसी चिंतन का परिणाम है कि आज दो सदस्यीय पार्टी वाले यहां पर बैठे हैं और चिंतन के अभाव में जो यहां पर बैठे थे वे वहां बैठे हैं। आज खेल के विषय में हमारे दोनों मंत्री हैं, यह संयोग है कि वे जो अपना विषय रखेंगे वह ओलम्पिक के पदक विजेता है। ओलम्पिक में हमें अभी गिने-चुने पदक मिले हैं। ऐसी प्रतिभा है जो इस विषय को रखेंगे। मैं कुछ विषय उनके लिए छोड़ूंगा। लेकिन खेल से हमारा नाता आज का नहीं है। अगर हम त्रेता युग में जाते हैं तो महाराजा जनक जो सीता के लिए स्वयंवर की रचना करते हैं उसमें भी खेल को ही प्राथमिकता दिया जाता है। आज हमारे पहलवान हनुमान जी को अपना ईष्ट मानते हैं। आज हनुमान जी के नाम पर, बाली के नाम पर, जामवंत के नाम पर, भीम के नाम पर हमारे कुश्ती के दांवपेंच हैं। मैं बताना चाहता हूं ये खिलाड़ी केवल खिलाड़ी नहीं होते हैं, इनके पास एक्सट्रा दिमाग होता है, ये विशेष होते हैं।

(1405/SK/RU)

हनुमान जी को कहा गया था कि सीता का पता लगाइए। उनको पता लगाने का काम सौंपा गया था लेकिन लंका जलाने का काम वह एक्सट्रा करके आए, यह है खिलाड़ियों की क्षमता। तैराकी का रिकॉर्ड भी उन्हीं के नाम से है।

अब मैं 'खेलो इंडिया' स्कीम पर आता हूं, लेकिन मैं जोड़ना चाहता हूं। आज मैं 'खेलो इंडिया' स्कीम को देखता हूं और जब मैं इतिहास के गर्त में जाता हूं, हस्तिनापुर में एक उत्सव था, उस उत्सव में अचानक कर्ण पहुंच जाते हैं, उससे सवाल पूछा जाता है कि आप किस वंश के हो, किस गोत्र के हो? खेल के प्रशंसक उस समय भी थे। जब कर्ण संकट में पड़ा तो दुर्योधन ने आकर अंग देश का राजा बना दिया। इसे कर्ण की दृष्टि से न देखा जाए, यह खिलाड़ी के सम्मान की दृष्टि से देखा जाए कि उस समय भी खिलाड़ियों का सम्मान था। किसी ने एकलव्य का अंगूठा ले लिया। एकलव्य को शिक्षा-दीक्षा इसलिए नहीं दी गई क्योंकि वह किसी राज परिवार से नहीं था। वह राज परिवार के लिए ऐसी चुनौती बना कि उसे अंगूठा दान में देना पड़ा। यहां माननीय मंत्री जी बैठे हैं। आज कांग्रेस के मित्र अपना काम कर रहे थे, कोई गलत काम नहीं कर रहे थे, अच्छी बात कर रहे थे, लेकिन मैं बताना

चाहता हूं कि आज दुनिया के खिलाड़ी तरसते हैं कि काश हम भारत में पैदा होते, जब वे सुनते हैं कि भारत सरकार अलग से उनको पैसा दे रही है। वे सुनते हैं कि हरियाणा सरकार ओलम्पिक गोल्ड मैडल पर छ: करोड़ रुपया दे रही है। छ: करोड़ रुपये का नाम सुनते ही सारी दुनिया के खिलाड़ियों का मुंह फटा का फटा रह जाता है। आज हमारे देश का इतना सम्मान है।

मैं बहुत ज्यादा टेक्नीकल विषय में नहीं जाऊंगा, मेरे पास बहुत कुछ है, मैं इसे पढ़ भी सकता हूं। मैं अनुभव करता हूं कि परिवर्तन कैसे हुआ। वर्ष 2010 में कॉमन वैल्थ गेम्स हुईं, यह हमारे देश का दुर्भाग्य है। किसी ने कहा है – लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई। इसकी सजा कांग्रेस पार्टी पा रही है। वर्ष 2010 में गलती करके वे लोग चले गए, कॉमनवेल्थ घोटाला। राज्यवर्धन राठौर बहुत सीनियर खिलाड़ी हैं, ओलम्पियन हैं। खेल के लिए मात्र 1600 करोड़ रुपये एलॉट किए गए थे। पूरे खेल के आयोजन में लगभग 800-900 करोड़ रुपये के बीच में लगे थे और 700-800 करोड़ रुपये वापस हुए थे। 1600 करोड़ रुपये एलॉट हुए और 900 करोड़ रुपये खर्च हुए, 700 करोड़ रुपये वापस हुए, वे तो जेल में गए और डेढ़ लाख करोड़ खाने वाले आज भी टहल रहे हैं, इसी दिल्ली में टहल रहे हैं। छोटी मछलियां गईं, बड़ी मछलियां नहीं गईं।

जहां तक कॉमन वैल्थ गेम्स का सवाल है, जिस समय कॉमनवेल्थ गेम्स होने वाले थे, उस समय खेल मंत्री यह बयान दे रहे थे कि हिंदुस्तान में कुछ शैतान इकट्ठा होने वाले हैं।

(1410/MK/NKL)

वे खिलाड़ियो की संज्ञा शैतान से कर रहे थे, शैतान इकट्ठा होने वाले हैं। मौत का सौदागर और शैतान की संज्ञा, यह आपकी परम्परा है। शैतान कहना इनको महंगा पड़ा। वे इन्हीं के पार्टी के सांसद थे। जब एशियन गेम्स के लिए बीड हो रही थी और कॉमनवेल्थ गेम के बारे में जब हो-हल्ला हुआ, मीडियाबाजी हुई पूरी दुनिया में, जिसके कारण हमें एशियन गेम्स नहीं मिला तो उस समय के तत्कालीन मंत्री ने कहा था कि हमें एशियन गेम्स नहीं मिला, इसका मैं स्वागत करता हूं। एक हमारे प्रधान मंत्री जी, खेल मंत्री के नेतृत्व में हर गेम के पहले, कॉमनवेल्थ गेम के पहले, ओलम्पिक गेम के पहले, विदाई समारोह, पीठ थपथपाना, मनोबल बढ़ाना और यहां तक कहना कि टेंशन लेकर मत खेलना, खेल को खेल के तरीके से खेलना और लौटकर आने के बाद उन खिलाड़ियों से मिलना, ये काम आप लोग नहीं कर सके।

आज मैं सिर्फ कुछ बातों की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। हमारे मंत्री जी यहां बैठे हैं। इन्होंने केवल इतना ही गुनाह नहीं किया है, इससे भी बड़ा गुनाह किया है। ये वर्ष 2011 में स्पोर्ट्स बिल लेकर आए। ये स्पोर्ट्स की भलाई के लिए लेकर नहीं आए, आज वे सदन के सदस्य नहीं, लेकिन हमारी पार्टी से जुड़े हुए हैं। खेल में उनका एक रुतबा और पहचान होती थी, उनको रिटायर कैसे किया जाए, इसको ध्यान में रखकर बिल लाया गया। तीन टर्म्स क्या है? मान लीजिए 40 साल की उम्र में कोई अध्यक्ष बन जाता है तो 52 साल की उम्र में वह रिटायर हो जाएगा, यह क्या नियम है, आप इसको क्यों लाए, यह किसकी भलाई के लिए लाए? हमारे ओलम्पियन यहां बैठे हुए हैं, जो मंत्री भी रहे हैं, जानते हैं कि इंटरनेशनल फेडरेशन में जब तक आपकी जान-पहचान नहीं होगी, जब तक आपका अस्तित्व नहीं होगा तब तक आप मेडल, हम यह नहीं कह सकते कि नहीं ला सकते, लेकिन

सहूलियत नहीं होती। अगर कोई एक टर्म जीतता है, दो टर्म जीतता है, जब तक उसकी जान-पहचान बनती है, फिर आप नमस्ते कह देते हैं, अब आप नहीं लड़ सकते। मैं अपने पूर्व खेल मंत्री और वर्तमान खेल मंत्री दोनों से यह कहना चाहता हूं कि इस विषय पर हमें ध्यान देना चाहिए। यह हम अपने लिए नहीं कह रहे हैं। मैंने अनुभव किया है कि आपकी जान-पहचान इंटरनेशल बॉडी में होनी चाहिए और जान-पहचान एक टर्म में नहीं होती है। कम से कम दो टर्म्स, तीन टर्म्स, चार टर्म्स में जब आपकी वहां जान-पहचान होगी, उनके साथ उठेंगे-बैठेंगे, नियम जानेंगे तब आपको लाभ होगा । वैसे लाभ नहीं होगा कि एक टर्म यहां जीते, दूसरा टर्म दूसरी जगह, तीसरे टर्म में खत्म । मैं विशेष जोर देकर कहना चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी को स्पोर्ट्स कोड पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। आप सबको बुला लीजिए, ओपन डिस्कशन करा लीजिए, लेकिन उम्र की सीमा जरूर रखिए। यदि 70 वर्ष रखना है, रखिए कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन टर्म हटाइए। कम से कम चार टर्म्स होना चाहिए। आप उम्र की सीमा 70 या 75 साल रखिए, किसी को आपत्ति नहीं है। इस बारे में कोई नियम नहीं बना है, यह ऐसे ही चल रहा है, मनमानी चल रही है।

ये सब विषय मेरे पास हैं, मेरी बहुत इच्छा है कि इस विषय को हमारे पूर्व मंत्री जो ओलम्पियन भी रहे हैं। ये सारे विषय जो खेलो इंडिया के हैं, ओलम्पिक में जो हमारी स्थिति है, इसको हम चाहते हैं कि आप रखें।

(1415/YSH/KKD)

मैं एक बात और कहना चाहता हूं। खेलो इंडिया का परिणाम बहुत अच्छा आने वाला है, जैसे सरकार की ओपिनियन है कि हमें 25 पदक चाहिए। सर, भारत के अन्दर इतनी क्षमता है। मैं पार्टी के नाते नहीं कह रहा हूं, देश को जो सुविधा भारत सरकार, मंत्रालय, देश के कॉरपोरेट घराने दे रहे है, वह सुविधा दुनिया के किसी भी खिलाड़ी को नहीं है। कई देश के खिलाड़ी अपनी ड्यूटी करते हैं। जैसे पार्लियामेंट छ: बजे तक चलती है...(व्यवधान) जो भी ड्यूटी करते हैं मान लीजिए वे कर्मचारी हैं तो वे अपनी ड्यूटी के बाद खेल की गतिविधियों में भाग लेते हैं। भारत में हम उनको हर तरह की सुविधा देते हैं। जो यह विश्वविद्यालय आया है, इसके भी बड़े अच्छे परिणाम आने वाले हैं। मैं अपने पूर्व व वर्तमान मत्रियों से एक बात कहना चाहता हूं। हम विदेशों से बहुत बड़ी संख्या में कोच लेकर आते हैं। हर खिलाड़ी विदेशी कोच की मांग करता है और हम लाते भी हैं, उसमें हमारा बहुत अधिक पैसा जाता है। एन.एस.एन.आई.एस. विश्वविद्यालय में कोचेस की ट्रेनिंग होती है। अगर हम वहां दो-तीन सत्र के लिए विदेशी कोचों को बुलाकर अपने कोचों को ट्रेनिंग दे दें तो हमें विदेशी कोच मंगाने की जरुरत नहीं पड़ेगी। मंत्री जी इस बात के गवाह है। एशियन गेम्स में हम दोनों बैठे थे, कबड्डी का टूर्नामेंट चल रहा था। हमें फर्क यह पड़ा कि विशेषकर कबड्डी से हमारे कोच गए हैं और जो विराट की टीम हमें हराकर गोल्ड मैडल लेकर के गई है, वे हमारे देश के ही कोच हैं, तो जब हम हमारी कोचिंग को ठीक कर लेंगे तो खेल को भी ठीक कर लेंगे। अगर हमारा पैसा सबसे ज्यादा कहीं जा रहा है तो वह कोचिंग में जा रहा है...(व्यवधान)

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): आप कुश्ती के बारे में भी कुछ बताइए...(व्यवधान)

श्री बृजभूषण शरण सिंह (कैसरगंज): मैं यही आश्वासन देना चाहता हूं कि जो 2 मैडल हमारे थे, उससे ज्यादा मैडल हमारी कुश्ती की टीम लेकर के आएगी। मुझे सरकार के अलावा इस देश के लोग और उद्योगपति बहुत समर्थन कर रहे हैं। यह सुविधा दुनिया में किसी देश को नहीं है...(व्यवधान)

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): आप दोनों का स्वास्थ्य अच्छा है...(व्यवधान)

श्री बृजभूषण शरण सिंह (कैसरगंज): हां बिल्कुल स्वास्थ्य अच्छा है। स्वास्थ्य आपके जिम में है...(व्यवधान)

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): और मंत्री जी कहां हैं...(व्यवधान)

श्री बृजभूषण शरण सिंह (कैसरगंज): वे भी आपके जिम में हैं। तीनों आपके जिम में हैं...(व्यवधान) मैं इस बिल का समर्थन करते हुए स्पोटर्स पर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इस पर फिर से विचार करना चाहिए और ओलम्पिक में पदक की संख्या इसलिए भी बढ़ने वाली है क्योंकि पहले हमारे देश के खिलाड़ी सोचते थे कि मैं इंटरनेशनल खिलाड़ी हो जाऊं। मैं अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी कहलाऊं, लेकिन आज मोदी जी की सरकार के आने के बाद एक परिवर्तन आया है। आप किसी से भी पूछ लीजिए कि गांव में बैठा हुआ एक-एक खिलाड़ी हो, दिल्ली में कई अखाड़े हैं प्रेमनाथ का अखाड़ा है, छत्रसाल है, गुरुहनुमान है। आज की तारीख में खिलाड़ी यह बात करता है कि मुझे ओलम्पिक से पदक लाना है। आज सोच में परिर्वतन हुआ है और यह प्रेरणा राज्यवर्धन सिंह राठौड जी से मिली है, सुशील कुमार जी से मिली है, साक्षी मलिक जी से मिली है, योगेश्वर दत्त जी से मिली है।

(1420/RPS/RP)

यहां हमारे बगल में बैठे हैं, भारत सरकार ने श्री राज्यवर्धन सिंह राठौर को खेल मंत्री बनाने का काम किया। मैं समझता हूं कि इसमें भी खेल का बहुत बड़ा हाथ है। अगर इनके ऊपर निगाह गई तो इसमें भी खेल का बहुत बड़ा हाथ है। खेल के कारण ही इनकी पहचान बनी है। ज्यादा समय न लेते हुए, मैं इस मंत्रालय की डिमाण्ड्स फॉर ग्राण्ट्स का समर्थन करता हूं। ...(व्यवधान) अगर मैं टेक्नीकल बातों पर आऊंगा तो बहुत टाइम लग जाएगा। ...(व्यवधान) मैंने बोल दिया है। धन्यवाद।

(इति)

HON. CHAIRPERSON (SHRI N. K. PREMACHANDRAN): Thank you very much. This is a very important subject. I think, after a long time, we are discussing the Demands under the Ministry of Youth Affairs and Sports. We are seeking very constructive suggestions from the hon. Members because we are discussing such a serious subject after a long time. Definitely, constructive suggestions have to come from the Members so they can be taken up in a serious way.

The next speaker is Dr. Kalanidhi Veeraswamy.

1421 hours

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): Hon. Chairperson, thank you for giving me this opportunity to make my maiden speech in the 17th Lok Sabha.

I would like to begin by quoting a couplet by Thiruvalluvar, the greatest poet of all time:

Thammin periyar thamara ozhuguthal
Vanmaiyul ellam thalai.

It translates as: "Of all the strengths a person can possess, living among great men with sublime intelligence and qualities and befriending them is the most supreme."

True to this Kural, I would like to remember and pay tribute to our founding fathers and greater leaders Thanthai Periyar, Perarignar Anna and Kalaignar Karunanidhi in whose time we are happy to live and without whose vision or need for State autonomy and revolutionary ideals and ideologies, Tamil Nadu would not have reached the top three best performing States from the bottom three where it was at the time of Independence.

I would also like to thank our Thalaivar M.K. Stalin for reposing his faith in me without which I will not be speaking here in this August House. I would also like to thank our Parliamentary Floor Leader, Thiru. T.R. Baalu for giving me this opportunity to speak on the Demands for Grants under the Ministry of Youth Affairs and Sports.

I take this opportunity to pay tribute to the millions of youth of Tamil Nadu, both, boys and girls, who gathered at the Marina Beach and across the nation and the world, to protest in a democratic fashion against the ban on Jallikattu – a traditional sport of Tamil Nadu for several centuries – by the Supreme Court of India. They succeeded in their efforts and caught the attention of the whole world and gave us hope that the youth of today are capable of standing for the right of Tamils, just like our DMK Party which stood against the imposition of Hindi in the past and still is. I say 'still is', Sir, because either by design or by chance, there have been three attempts to impose Hindi in several States in less than two months of this Government assuming Office.

The first was to implement the three-language policy. The second was in the form of a Circular by Southern Railways that all communication be only in English or in Hindi. The third was the recent one where they conducted recruitment exams, for the post offices, in English or Hindi and ignored the regional languages. We have agitated, protested and successfully thwarted these devious designs.

Sir, we have been fighting against the imposition of Hindi for several decades since 1930s. I am sure that this is the same case with all the other States as well. The spirit and determination of our late leaders lives in the form of our current leader.…(*Interruptions*)

SHRI RAJIV PRATAP RUDY (SARAN): Sir, I have a point of order.…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: There is no point of order. Baalu ji, you please be seated.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: This is his maiden speech. Let him continue.

… (*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Nothing is allowed. Nothing will go on record except his speech.

… (*Interruptions*) … *(Not recorded)*

(1425/RCP/RAJ)

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): But it has been promised that it will not be imposed upon us …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please come to the topic. This debate is on the Demands for Grants of the Ministry of Youth Affairs and Sports.

… (*Interruptions*)

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): I understand, Sir. But we have some reservations. We have to voice them out only in this august House. …(*Interruptions*)

We have been fighting against this for the past several decades since 1930s. The spirit and determination of our late leaders live on in the form of our current leader Thalapathy and we will continue to protect our linguistic pride. I am sure that several other States with the same pride will stand with us on this issue.

I would like to quote our founder Perarignar Anna who, in April 1962, in the Rajya Sabha spoke, and I quote:

> "I claim, Sir, to come from a country, a part in India now, but which I think is of a different stock, not necessarily antagonistic. I belong to the Dravidian stock. I am proud to call myself a Dravidian. That does not mean that I am against a Bengali or a Maharashtrian or a Gujarati or any other language person. As Robert Burns has stated, 'A man is a man for all that'. I say that I belong to the Dravidian stock and that is only because I consider that the Dravidians have got something concrete, something distinct, something different to offer to the nation at large. Therefore, it is that we want self-determination."

I am happy that his ideals have seeped into our blood and youth have established their right to self-determination by successfully protesting the *Jallikattu* ban.

I hope, it would not be considered presumptuous on my part to request that the Ministry be renamed as 'Youth Empowerment and Sports', instead of being called as 'Youth Affairs and Sports'. The reason why I would like to place such a request is this. It is to condemn the deplorable, despicable moral policing resorted to by a few anti-social elements who have abused young couples in several parts of the country in the name of religion and culture. Perhaps, they have misunderstood the terminology 'youth affairs'.

Sir, kindly bear with me for digressing into the Ministry of HRD for it would be a grave injustice not to talk about the education policy of the Government when talking about youth of this country. I am sure that many of the hon. Members present here would have studied Plus one and Plus two with Physics, Chemistry, Mathematics and Biology. I would be very much surprised if any one remembers what Coulomb's law is or what Frank-Starling law is in Physics or the valences of various chemicals compounds like magnesium and manganese or chemical formulae in Chemistry or differentiation, integration, trigonometry in Mathematics which are forced upon children in schools but have not been of any use neither in our college nor in our lives. The hon. Minister of Health and Family Welfare is present here. I am sure that he also would concur that most of these things are not required in most of our medical curriculum.

Our leader and former Chief Minister Kalaignar Karunanidhi had brought in 'Samacheer Kalvi' to ease the lives of school children. But this Government has imposed NEET in an ill-planned manner which sadly has cost the lives of several thousand children. Notably from my State of Tamil Nadu, Anitha, Prathiba and hundreds of other children committed suicide despite scoring high marks.

It is alarming and shocking to note that a child is dying every hour in India. These are the statistics which have been provided by the Government of India. The count was 8,934 suicidal deaths in 2015. With the introduction of NEET, these numbers are only going to rise. Our schools, instead of being centres of education, are turning out to be concentration camps of deaths. It is sad to note that these are intelligent children and they are great assets of our nation. We are losing them due to flawed education policy and our indifference towards their welfare.

Having said all this, I would implore the Government to reconsider and abolish NEET. It would also help to have a psychologist or a counsellor, and a vocational guide in each school. We need psychologists more for parents than children. Children are not the ones who have such ambitions. Parents have such ambitions and they thrust them upon their children. Parents in most cases, no doubt with good intent, are pushing their children beyond their limits.

Due to lack of vocational guide, many students and parents are unaware of the economic potential of certain degree programmes. I would like to highlight a few of them. I have seen several dentists who work on a salary of Rs. 8000 or Rs. 10,000 per month, and engineers are offered Rs. 5000 per month or less. This is the state of affairs of our educational system in India. A receptionist earns more than this, while paramedics like optometrists, dialysis technicians and even chefs earn Rs. 15,000 or more per month.

(1430/SMN/IND)

We have many colleges but most of the students from these colleges are unemployable.

While the whole world is stressing on the importance of schooling, the Government of Tamil Nadu is contemplating of closing down 1500 schools. Apart from this, they are planning to open hundreds of TASMAC alcohol bars across the State.

These thousands of schools have come out with the hardwork of great leaders like Kamraj, Anna and Kalaignar. Th Government of Tamil Nadu is planning to close down 1500 schools. It is deplorable. I request the Government of India to prevail upon the Government of Tamil Nadu and stop them from closing down these schools.

I make this request because many believe that the BJP is running the Tamil Nadu Government, as reiterated by our Party Whip.

Sir, the prevalence of sexual crime against women is another cause for concern. It is curious to note that instead of a man attacking and molesting a woman as it used to happen in the past, it has changed where groups of men join together and rape women. Recent instances like in Pollachi where hundreds of girls and women were raped over a period of seven years is shocking.

And to make matters worse, the other pressing issue of grave concern is sexual offences against children. In fact, few weeks ago, a repeat offender had raped and murdered a girl child soon after being released for the same offence which he had committed earlier. I implore the Government to ensure that the strictest laws be passed to save our children and women from such heinous predators.

Sir, unemployment among our youth is revealing a shocking trend. Data shows that unemployment among graduates is highest at 23.8 per cent whereas the figures are 2.3 per cent for illiterate, 3.3 per cent for primary schooled and 3.7 per cent for secondary or higher secondary schooled youth.

We tell our youth to study hard and graduate for better job opportunities. What are we going to tell them now? …(*Interruptions*)

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): Mr. Rudy, he is not yielding. What is the purpose of stopping him? …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON (SHRI N. K. PREMACHANDRAN): Shri Rajiv Pratap Rudy, we will hear after his speech. Let him conclude.

…(*Interruptions*)

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): Adding insult to injury, the ill-planned, ill-conceived and ill-executed demonetization and GST by this Government has caused great hardship apart from several deaths. …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Mr. Veeraswamy, please wait for one second.

…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Mr. Rudy, please quote the rule. …(*Interruptions*)

SHRI RAJIV PRATAP RUDY (SARAN): Sir, Rule 132 states:

> "The debate on such a motion shall be confined to consideration of matters referred to in the message of the President or to any suggestion relevant to the subject-matter of the amendments recommended by the President."

Sir, we are talking about sports. Where does imposition of Hindi come in this? Under the Constitution, we recognise Hindi as a national language. Where does Hindi come in the matter of sports? Does this come under the scope of discussion? …(*Interruptions*) We are talking of Ministry of Sports and Youth Affairs. You are talking of imposition of Hindi. Is this fair? …(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Mr. Dayanidhi, I will give the Ruling.

…(*Interruptions*)

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण) : माननीय सदस्य कह रहे हैं कि हम हिंदी को इम्पोज कर रहे हैं। हम सदन में स्पोर्ट्स के विषय पर डिस्कस कर रहे हैं और आप कह रहे हैं कि हिंदी को हमारे ऊपर इम्पोज किया जा रहा है, क्या यह उचित है?

महोदय, इसे रिकार्ड से बाहर निकाला जाए। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है और इस पर किसी प्रकार की आपत्ति उचित नहीं है।…(व्यवधान) यहां किसी के ऐसा बोलने का कोई मतलब नहीं है।

HON. CHAIRPERSON: Hon. Members, I will give the Ruling.

…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Please keep silence.

…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Rule 132 states:

> "The debate on such a motion shall be confined to consideration of matters referred to in the message of the President or to any suggestion relevant to the subject-matter of the amendments recommended by the President."

That is not applicable in this case. Hon. Member may please proceed.

…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Rudy ji, this is his maiden speech.

…(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON: Shri Rajiv Pratap Rudy, if you examine the speeches of many Members, especially the new Members, they are not confining to the subject matter.

(1435/MMN/VB)

He is a new Member. As a new Member, I have allowed him. It is his maiden speech. Let him complete the speech. I have already directed that he should confine his speech to the subject matter of debate. Anyway, he has already started his speech. Let him conclude the speech. All the Members are hereby requested to confine their speeches to the subject matter. That is the convention of the House. He is a new Member and it is his maiden speech. Let him continue, please.

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): Having said that, if we take the statistics and see, the graduate employees have higher percentage of unemployment in this country. What have we done to make sure that these people are getting employed?

Adding insult to injury, the ill-planned, ill-conceived and ill-executed demonetization and GST by this Government have caused great hardship apart from several deaths and it resulted in the closure of more than five lakh MSMEs, leading to a loss of more than 50 lakh jobs.

Coming to the subject matter, I hope the Government has learnt lessons from its failures in the past tenure and will perform better this term, which the people have given to them, with a very strong mandate, despite their failures and inadequacies. …(*Interruptions*)

Please give me one more minute. Speaking of the Ministry of Youth Affairs and Sports, I am happy to note that the Government has increased the budget by nine per cent to Rs.2,216 crore. But I feel that it is inadequate to improve the standards of sports in our country. Countries much smaller than us have a much bigger budget than this.

I pay tribute to all the sporting legends who have reached great heights and have become a source of inspiration for the youth of this country. I do not want to name any one single person for the fear of leaving out somebody who is very important.

The Rajiv Gandhi Khel Abhiyan launched in February, 2014 by the UPA Government proposed to develop sporting infrastructure in the form of sports

complexes both indoors and outdoors at every block level of the country to encourage sporting talent in rural areas.

HON. CHAIRPERSON (SHRI N.K. PREMACHANDRAN): After exhausting your time only, you are coming to the subject.

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): Sir, I am talking about the subject which he was asking for.

HON. CHAIRPERSON: Please conclude.

DR. KALANIDHI VEERASWAMY (CHENNAI NORTH): The NDA Government, for reasons best known to you, Sir, merged this scheme with Khelo India along with two other sport projects launched by the UPA, namely the Urban Sports Infrastructure Scheme and the National Sports Talent Search Scheme.

No progress has been made in Khelo India, especially in Tamil Nadu but for one facility in Theni District. I request the hon. Minister, through you, Sir, to revive the Khelo India Scheme to benefit the welfare of youth, especially in the rural areas.

My constituency in Chennai is the most backward, economically and socially, with poor literacy and employment rates. The youth are distraught with neither good opportunities for education nor employment and are misled into drugs and crimes by anti-social elements. Setting up of sporting facilities will divert their focus and help them improve their life.

I conclude by requesting the Ministry to set up infrastructure and deploy personnel for development of football and boxing, the sports which are popular among the youth in my constituency of North Chennai.

I would also like to add that my fellow person from Salem has told me that the Mahatma Gandhi Sports Complex building has a very poor infrastructure. I request that it can be re-done. I also request that all the blocks in Tamil Nadu are provided with a sporting complex.

I, once again, thank you for giving me the opportunity.

(ends)

HON. CHAIRPERSON: Now, Shri Prasun Banerjee. He is another veteran sportsperson of this House.

1438 hours

SHRI PRASUN BANERJEE (HOWRAH): Sir, thank you for giving me a chance. Thanks to you all. I am a national footballer. I am an Arjun Awardee. I participated in the Asian Football Championship. I am the first footballer who has come as an MP to this august House. I really thank all my colleague MPs here.

I will tell you one thing. This is the first time—thanks to you—that some debate about sports and youth is taking place. I do not know whether for the last 20 or 30 years such a debate took place. But this is for the first time that our Government has started a discussion on youth and sports. This is a very good thinking and I am very much happy. मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे खुशी है। ऐसा होना चाहिए। स्पोर्ट्स यूथ अच्छे होंगे, तो हमारा कंट्री का नाम ऊँचा होगा। हमारे यूथ्स स्पोर्ट्स में होंगे, तो अच्छे रहेंगे, वे ड्रग एडिक्शन वगैरह में नहीं पड़ेंगे। इसलिए यूथ्स को फुटबॉल या अन्य स्पोर्ट्स में होना चाहिए।

I want to say a few things because I am the first footballer who has come as an MP after 70 years, thanks to my AITC and also to the people of my Howrah constituency.

(1440/VR/PC)

Chairman, Sir, I have a very small demand. I must say that there is no firm sports policy of the Central Government. There are a number of autonomous bodies under the Ministry of Youth Affairs and Sports but there is lack of co-ordination between them. I find that the Government makes provision to spend a lot of money on a number of programmes and schemes every year in the Budget. But what is the net outcome? I do not know, if any.

Sir, I got a publication from the Ministry of Youth Affairs and Sports with statistics on the achievements of *Khelo* India School Games 2018. But have these games actually spread throughout the country? The actual motto to start such programmes is to find good sportspersons at the grass root level. Has this been achieved? Even being the first sports person to become a Member of Parliament three times consecutively, I am sorry to say that I too have no firm idea about *Khelo* India Scheme, which was launched in 2017.

I know that the Ministry of Youth Affairs and Sports requires a huge fund for promotion and development of sports in our country. In this regard, we have a number of schemes and projects but the main drawback I feel is that of lack of coordination between them. In her Budget speech, the hon. Finance Minister

announced setting up of a National Sports Education Board for development of sportspersons under *Khelo* India Scheme. How will this National Sports Education Board work and what will be their key motto? How will this Board function? Who will govern this Board? Will this be another organization to be led by bureaucrats or the actual persons from sports fraternity will govern this body? With a vast experience on the ground, I humbly suggest to the hon. Minister that he should allow only persons from sports arena to become policy-makers.

Sir, unless participation of people from sports fraternity increases as policy makers, India will not be able to achieve its goal in sports. Infrastructure like stadiums, hostels, etc. may be built by bureaucrats, but it is only the coach who can make a sportsman perform best.

I must say that there is no firm sports policy in our country. But my very good friend, the hon. Minister of State of the Ministry of Youth and Sports is sitting here. मैं एक बात पूछना चाहता हूं। हमारे बच्चे, जो सभी डिसिप्लिन्स से हैं, इनको गांव से लाने के लिए आप किसको भेज रहे हैं? We need sportsmen. Ex-sportspersons are sitting there. They are willing to participate in this task. सर, हमारे पास कोई ताकत नहीं है। I request you to get and involve them. There is no need to involve a person with political background. There is no need to get any bureaucrat for it. Only sportsmen can do it. These children listen to their call. वे बच्चों को आगे लेकर आयेंगे। उन्हें कॉल कीजिए और उनको नैशनल प्रॉपर्टी बनाइए। आप लोग ज़्यादा खर्च करते हैं, लेकिन आपको स्पोर्टसमैन पर प्रॉपर्ली खर्चा करना चाहिए। They should be converted into national assets.

Sir, I have been a football player. I want to say something about football. You know the persons who were appointed as officers to administer football teams are useless. They did nothing. We need your support immediately. You should call all the senior players and senior football Olympians. They can do something remarkable. What is happening there at present? वहां कोई पॉलिटिकल आदमी बैठ जाता है या कोई बाहर का आदमी बैठ जाता है। वे लोग खेलों के बारे में, फुटबॉल के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। उन्होंने फुटबॉल को बर्बाद कर दिया है। I know it because I have a 30-years' experience in football. I know what is going on. हमारे बच्चे भी वर्ल्ड कप खेंलेंगे। आप उन्हें थोड़ा सपोर्ट कीजिए। You just bring them from Gujarat, Bihar, Uttar Pradesh and all the States. Why should the boys only from West Bengal and Kerala go there all the time? आपको सब स्टेट्स से बच्चों को लाना चाहिए। आप देखिए कि आज फुटबॉल में क्या हो रहा है। The East Bengal and Mohun Bagan football teams are assets of

India. In 1911, Mohun Bagan football team created a record in the history of Indian football when they beat the English people.

(1445/SPS/SAN)

तीन टीम मोहन बागान, ईस्ट बंगाल और मोहम्मदन स्पोर्टिंग क्लब को ये लोग बंद करना चाहते हैं। इनको खराब करना चाहते हैं। एक-एक टीम का एक करोड़ रुपये का सपोर्टर है। Football is a game which I have played. हम लोगों ने फुटबॉल गेम खेला है। आप बोलते हैं कि ऑटोनोमस बॉडी में हाथ नहीं देंगे। आप लोगों को जरूर हाथ देना चाहिए। Otherwise, they will finish our game of football. For God's sake, I request to the hon. Minister to do something. आप लोग बोलते हैं कि प्रसून दा हम नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वह ऑटोनोमस बॉडी है। मैं यही बोलने के लिए आया हूं। एक बात और है। Rijiju bhai is there. Another sportsman is there. हम लोग 30-40 सालों से देख रहे हैं कि बच्चे लोग रोटी और सब्जी खाकर वर्ल्ड कप नहीं जीत सकते हैं, उनको खाना दीजिए। आप लोग कोशिश कीजिए। उसको नेशनल प्रॉपर्टी बनाइए। स्पोर्ट्समैन को कुछ नहीं मिलता है, लेकिन जब वह जीतकर आता है तो आप उसको करोड़ों रुपये देते हैं। पहले उसको घर में खाना नहीं मिलता है, इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं मिलता है, आप इसके ऊपर जोर दीजिए। For God's sake, please do it. आप प्रत्येक खेल के लिए कुछ करिए। आप फुटबॉल को बचाइए। ये बच्चे लोग कितना अच्छा अण्डर 17 खेले हैं। I thank everybody. I thank your Government. I thank the Chief Minister of West Bengal. हम कल ममता जी को धन्यवाद देने जाते हैं। आप फुटबॉल के लिए कुछ करिए। I am a footballer. जब हम इधर आते हैं तो लोग पूछते हैं कि आप फुटबॉलर हैं और एम.पी. बने हैं तो आपने क्या किया है? आप कुछ कर नहीं रहे हैं। आप हमको बुलाइए, इसमें कोई पॉलिटिक्स मत रखिए और हम लोग एक साथ मिलकर काम करेंगे। हम थोड़ा तो सपोर्ट कर सकेंगे। I tell you that the children who played under-17 World Cup. जिन बच्चों ने गेम खेला, आपने उनको नहीं रखा। उनको नेशनल प्रॉपर्टी बनाना चाहिए और उनको ट्रेनिंग देनी चाहिए। They are coming back. They will get it. हम बोलते हैं कि इण्डिया अभी भी फुटबॉल वर्ल्ड कप खेल सकता है। आप सब साथ में आइए। You immediately call all the top players from Kerala, Goa, West Bengal and other places all over India. हम लोग केवल कागजों में देखते हैं कि यह काम किया, वह काम किया। हमें ऑन द ग्राउण्ड करना होगा। सब काम ब्यूरोक्रेट्स के करने से नहीं होगा। भारत में ऐसा चलता है कि सब कुछ ब्यूरोक्रेट्स करते हैं। वे लोग सेलेक्शन भी करते हैं और टीम भी चलाते हैं। आप लोग स्पोर्ट्समैन को बुलाइए। बहुत अच्छे-अच्छे स्पोर्ट्समैन हैं। They are really interested to come to your place. You call them one day and give them something. All the other sports are very good. अभी हाल ही में भारत को स्पोर्ट्स में गोल्ड मिला है। हम चाहते हैं कि आप लोग सपोर्ट करिए और साथ में रहिए। गवर्नमेंट यूथ डेवलपमेंट को सबसे पीछे रखती है। आप स्पोर्ट्स को ऊपर रखिए और सब कुछ पीछे रखिए। यह बड़े दुख की बात है। इधर इतने सारे एम.पीज. हैं, वे किधर गए। आप लोगों को इधर होना चाहिए। हम सब एम.पीज. को मिलकर काम करना चाहिए। भारत बहुत

बड़ी जगह है। भारत सब कुछ कर सकता है। My request to the hon. Minister is to call me. मैं 8 साल से सांसद हूं। मैं इस बारे में कुछ बोल सकता हूं, लेकिन आप बुलाते नहीं हैं। इसमें कोई तृणमूल-बी.जे.पी. की बात नहीं है। I always try. I will come to you.

Last but not least, our greatest footballer has told me that he has given signature to Honey Singh. We give him our signatures. I tell you the slogan he has just written to me - 'Play the Football, See the World, Be a Gentleman and Fly Your National Flag All Over the World.'

Thank you. *Namaste.*

(ends)

(1450/RBN/KDS)

1450 hours

SHRIMATI GODDETI MADHAVI (ARAKU): Mr. Chairman, Sir, thank you. This is my maiden speech.

The Ministry of Youth Affairs and Sports has the mandate of developing sports facilities and encouraging sporting talent in India. The Minister is responsible for creating infrastructure and capacity to enable international competitiveness.

The Ministry of Youth Affairs and Sports has been allocated a sum of Rs. 2,216 crore for the year 2019-20. This is an increase of 11 per cent over the Revised Estimates of 2018-19. In 2018-19, the Budget Estimates for the Department of Youth Affairs was Rs. 621 rore and for the Department of Sports it was Rs. 1,575 crore.

Under the Department of Sports, the Khelo India Programme, the National Sports Federation and the Sports Authority of India have the highest allocations. Together, 58 per cent of the Ministry's allocations has gone to these heads. This is a good move. But I would request the Government to utilise these funds.

The Ministry of Finance has included sports infrastructure in the harmonised master list of infrastructure sub-sector on 9th September, 2016. This list consists of five core sectors, such as transport, energy, water and sanitation, communication and social & commercial infrastructure.

Sports has been included as a subsector under social and commercial infrastructure. This inclusion pertains to provision of sports stadia and infrastructure for academies involved in training and research in sporting activities. This status makes the sports sector eligible for obtaining long-term financial support from banks and other financial institutions at par with other infrastructure projects. This financial support is expected to bolster investment in sports infrastructure, encourage private investments, promote health and fitness and provide more employment opportunities.

No doubt Sir, this move has increased the flow of investments into the sports infrastructure sector.

I wish to point out some of the key observations and recommendations regarding the Ministry by the Standing Committee on Human Resource Development.

The Committee observed that the speed of expenditure of the Department of Youth Affairs was slow and a large part of the allocation had been kept for the last quarter of the financial year. Against a projected demand of Rs. 904 crore for the year 2017-18, it got Rs. 550 crore at BE which was further reduced to Rs. 544 crore at RE. The Committee found that the Department still had more than Rs. 150 crore to spend. It, therefore, recommended that the Department should take a cautious approach while making projections; and allocations should be spent in a time-bound manner.

There is a lack of coordination between the NSFs and the SAI, as well as the NSFs and the State Sports Federations, SSFs. The Standing Committee has also highlighted the need for increased cooperation of the Ministry with other Ministries such as Human Resource Development, Women and Child Development and the Panchayati Raj for the development of sports.

The Committee observed that the composition of most NSFs is mostly dominated by non-sportspersons. The Committee recommended constituting an independent Election Commission and ensuring adequate representation for sportspersons and other sports experts in the Committee. The NSFs are receiving inadequate funds from the Government and, therefore, trying to manage more funds from other sources. In this context, it has been recommended that if the Government is not in a position to take care of all the funding requirements, private participation should be encouraged. Further the Committee observed that there are still some erring NSFs which are not complying with the Government guidelines.

Under the Sports Authority of India, the Committee found that the mode and pace of recruitment was not satisfactory. There was a shortage of coaches and more than 37 per cent of posts were lying vacant. While filling posts, the Committee advised against contract-based appointments.

(1455/SM/MM)

There exists a confusion among the public sector undertakings regarding NSDF and CSR. CSR comes under the Companies Act, 2013 while NSDF comes under the Charitable Endowments Act, 1890. Hence, contribution under CSR cannot be equated to endowments to NSDF. The Standing Committee recommended that the Department of Sports must educate the PSUs about this difference.

Further, the Committee recommended the setting up a Council of NSDF to manage the fund. The Council would be represented by different stakeholders like sportspersons, administrators, among others. Additionally, it also recommended about reaching out to all possible donors who have the capacity to contribute. So, I would like to request the Government to look into these issues at the earliest and let us pave the way to create new idols of our nation in the field of sports.

Sir, I have also a request to the hon. Minister that at least one indoor sports facility centre in rural areas like my Parliamentary constituency, Araku should be set up. There are so many sportspersons, but there is no facility in my constituency. I was a teacher of physical education and now I have become an MP at the age of 26. I am very happy to speak before you. Thank you very much.

(ends)

1456 hours (Shrimati Rama Devi *in the Chair*)

1456 बजे

श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे (हातकणंगले): सभापति महोदया, मैं इस संसद में पहली बार भारत के लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए एक सांसद के नाते मेरे सांसद भाई-बहनों के सामने अपनी बात रखने का प्रयास कर रहा हूं। यह मेरी मैडन स्पीच है।

महोदया, मैं कोल्हापुर जिले से आता हूं जो राजेश्री शाहूजी महाराज और शिवाजी महाराज की भूमि है, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की भूमि है। मेरे लोक सभा क्षेत्र हातकणंगले के लोगों ने मुझे अपनी बात यहां रखने का अवसर दिया, इसके लिए मैं हातकणंगले की आम जनता का और श्री उद्धव ठाकरे का अपने हृदय से शुक्रिया अदा करना चाहूंगा कि उन्होंने मुझे यह अवसर प्रदान किया।

महोदया, मैं अपनी बात रखने से पूर्व एक महत्वपूर्ण विषय पर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। आज शिव सेना पार्टी की तरफ से मैं अकेला ही सांसद सदन में उपस्थित हूं। उसका कारण है कि शिव सेना ने महाराष्ट्र में एक मोर्चा बीमा कम्पनियों के खिलाफ खोला है, क्योंकि उन्होंने किसानों के साथ *… (Not recorded)* की है। उस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का काम शिव सेना वहां कर रही है। मैं सदन के माध्यम से आप सभी भाई-बहनों का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि उनके न्याय के लिए काम करने की आवश्यकता है।

महोदया, मैं एक युवा सांसद के नाते बोल रहा हूं। भारत एक युवा देश है, जिसमें 600 मिलियन जनसंख्या 25 वर्ष से कम की है। कुल जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत 40 वर्ष की आयु के नीचे का है। 40 प्रतिशत की आबादी 13 से 35 के आयु वालों की है। इस देश में औसत आयु 28 से 29 के बीच के लोगों की है। शायद हमारी संसद भी आज सबसे युवा संसद है। इस बार सबसे ज्यादा युवा चुनकर आए हैं। हमारे पंत प्रधान हमारे देश के युवाओं के चहेते पंत प्रधान हैं। इनको प्रधान मंत्री की दूसरी बार जिम्मेदारी दी गयी, इसका मुख्य कारण यह है कि वे युवाओं के अब तक के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। मैं आदरणीय पंत प्रधान जी का भी अभिनंदन करना चाहूंगा। मैं कुछ मुद्दे यूथ और स्पोर्ट्स के बारे में आपके सामने रखना चाहूंगा। युवा सांसद होने के साथ ही मैं नेशनल लेवल का फुटबाल खिलाड़ी भी हूं। निश्चित रूप से खिलाड़ियों को होने वाली समस्या और किसान का बेटा होने के नाते दोनों के बारे में बातें आपके सामने रखना मेरा कर्तव्य है। किसानों के बेटों को रोजगार उपलब्ध करवाना बहुत आवश्यक है। मैं यह कहना चाहता हूं कि चाहे किसी भी राज्य का युवा हो, वह अपने क्षेत्र में काम करना चाहता है।

(1500/MM/AK)

अगर मैं किसी स्कूल के बच्चे से पूछूं कि आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हो तो कोई डॉक्टर बोलेगा, कोई इंजीनियर बोलेगा, कारपेंटर बनने के लिए भी बोलेगा, लेकिन कोई भी किसान नहीं बनना चाहता है। ऐसे विचार आपको महाराष्ट्र और देश भर के बच्चों में देखने को मिलेंगे। इसका प्रमुख कारण है खेती में वैल्यू एडिशन का न होना और उसके क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध न होना। यह उनकी आवश्यकता है। इसलिए बेरोजगार युवकों के लिए कृषि में रोजगार दिलाने हेतु शासन कदम उठाए ताकि उनकी भी उन्नति हो सके। इंटीग्रेटिड फूड पार्क उनके लिए बनाए जाएं, जिससे युवाओं को काम मिल सके। मैं जानता हूं कि मैं ऑफ लाइन हो रहा हूं, लेकिन मैं निश्चित रूप से यह कहना चाहूंगा कि रोजगार न होने के कारण बहुत सारे युवा देश छोड़कर परदेस में नौकरी ढूंढ़ रहे हैं। अगर उन्हें देश में ही नौकरी मिलती है तो उन युवाओं को फायदा होगा।

महोदया, मैं खिलाड़ी होने के नाते खेल के बारे में कुछ बातें सदन में रखना चाहूंगा। खेल के बारे में मेरे बहुत सारे साथियों ने बहुत सी बातें सदन में कही हैं। लेकिन खिलाड़ियों को आने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए इस शासन को जागृत होना बहुत जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्र में खिलाड़ियों को आने वाली समस्याएं अलग हैं। वहां खेल के मैदान बहुत कम हैं। खेल के मैदान न होने के कारण खिलाड़ियों को खेलने का अवसर ही नहीं मिल पाता है। मुझे टीवी पर देखकर लगता है कि मैं तैराकी सीखूं, टीवी पर देखकर गांव का बच्चा सोचता है कि मैं एक तीरांदाज बनूं, लेकिन उसके गांव में ऐसी कोई सुविधा नहीं है, जिसकी वजह से उसको वैसा प्रशिक्षण मिल सके और वह खेल में आगे बढ़ सके। बहुत से प्रतिभाशाली बच्चे ऐसे हैं, जिनको स्पर्द्धा में जाने की बहुत इच्छा है, लेकिन वहां ऐसी स्पर्द्धाएं नहीं होती हैं। मैं सरकार से मांग करूंगा कि वहां प्रशिक्षण केन्द्र बनाए जाएं। हर एक तहसील में इंटिग्रेटिड स्पोर्ट्स सेंटर हों ताकि वहां के बच्चों को भी हर एक स्पोर्ट के बारे में जानकारी मिल सके और राष्ट्र में अच्छे खिलाड़ियों की उत्पत्ति होती रहे। मैं जिस जिले से आता हूं वह कुश्ती का केन्द्र है। राजेश्री शाहूजी महाराज ने कुश्ती को देश भर में प्रोत्साहित किया था। सौ साल पहले कुश्ती जन-जीवन में लाने का काम राजेश्री शाहु महाराज ने किया था। शाहु महाराज के बाद खाशाबा जाधव नाम के पहले ओलम्पियन मेरे जिले से थे, जिन्होंने कुश्ती में पहला मेडल देश के लिए जीता था। यह एक सम्मान की बात है। निश्चित रूप से कुश्ती को आज और आगे ले जाने की आवश्यकता है। उसी तरह से वहां बहुत अच्छे तैराक हैं। आज भी ओलम्पिक के दो मेडल मेरे जिले से आए हैं। तैराकी में वीरधवल खाड़े और निशानेबाजी में राही सरनोबत ने देश का मान बढ़ाया है और खेल में उन्होंने बहुत बड़ी प्रतिष्ठा हासिल की है। मेरे जिले में कोई भी फायरिंग रिंग नहीं है, जबकि सबसे ज्यादा निशानेबाज हमारे यहां हैं। अंतर्राष्ट्रीय पटल पर काम करने वाले बच्चे हमारे यहां हैं, लेकिन उनके लिए कोई सुविधा नहीं है। अगर बच्चों को सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएं तो निश्चित रूप से हमारे यहां ऐसी प्रतिभाएं हैं, जो खेल में महाराष्ट्र और देश का नाम ऊंचा कर सकती हैं। मैं एक गांव में गया था। एक बच्चे ने जमीन पर टेबल जैसी कोई आकृति बनायी थी और उसमें बॉल रखकर लकड़ी से खेल रहा था। मैंने उससे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो तो उसने कहा कि मैं बिलियर्ड्स खेल रहा हूं। उसने जमीन पर बिलियर्ड बोर्ड बना लिया

था। मैंने बच्चों को गुल्ली-डंडा खेलते देखा है, लेकिन वह बच्चा कुछ अलग कर रहा था, इसलिए मेरा कौतूहल बढ़ गया था। ऐसे कितने ही बच्चे हैं, जिनको आशा और अपेक्षा है, लेकिन उनको वैसी सुविधाएं नहीं मिलती हैं, इसलिए वे वंचित रह जाते हैं। मैं शासन को अपनी पार्टी की ओर से विनती करना चाहूंगा कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा शिक्षण, अच्छा रोजगार और अच्छा स्वास्थ्य उनका मूलभूत अधिकार है और इस हेतु शासन से जो कुछ हो पाए, वह किया जाना चाहिए।

(1505/SJN/SPR)

आज जो वंचित बच्चे मुख्य प्रवाह में आने के लिए काम कर रहे हैं, उसमें खोखो जैसा खेल है, अपने यहां पर खोखो को ग्लैमर प्राप्त हो गया है, क्योंकि एक सेलिब्रिटी उसको दुनिया के सामने लाए हैं। उसके माध्यम से आज खोखो एक राष्ट्रीय खेल की तरफ बढ़ने लगा है। ऐसे कई देशी खेल हैं, जो राष्ट्रीय मूल के हैं, उनको भी उजागर करना जरूरी है। जैसे खोखो है, हाकी है, लेकिन हमारे देश का आकर्षण क्रिकेट की तरफ ज्यादा है। मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि क्रिकेट के साथ ही जो अन्य खेल हैं, जो भारतीय मूल के हैं, उनको भी प्रोत्साहन देना और उनके लिए अच्छा नियोजन करना यह शासन की जवाबदारी है। मैं अपने दल की ओर से यह बात आपके सामने रखते हुए अपने शब्दों को विराम देना चाहता हूं।

आदरणीय सभापति महोदया, मैं फिर एक बार आपका, सदन का और सभी साथियों का शुक्रिया अदा करते हुए, मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं।

(इति)

1506 बजे

श्री विजय कुमार (गया): सभापति महोदया, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया, मैं इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं और आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं। भारत की वर्ष 2025 तक संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, चीन और जापान के बाद चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की संभावना है, जो कि विश्व की जीडीपी में लगभग 5.5 प्रतिशत से लेकर 8 प्रतिशत का योगदान होगा। यह अनुमान है कि वर्ष 2020 तक तीनों देशों की तुलना में भारत की जनसंख्या की औसत आयु 28 वर्ष होगी। आज खेल में भारत की जो स्थिति है, वह बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है। आज पहले की तुलना में जो अर्थव्यवस्था है, उसमें भी बहुत संभावनाएं व्यक्त की गई हैं। आज़ादी के 72 साल हो गए हैं, आज हमारा देश हर क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है। चाहे शिक्षा हो, विज्ञान हो, अर्थव्यवस्था हो, खेल हो, सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ गया है। आज हमारे देश की आबादी 130 करोड़ हो गई है। हर तरह से चाहे रियो हो, ओलंपिक हो, सभी क्षेत्रों में वर्ष 2018-19 के दौरान माननीय प्रधान मंत्री जी ने खेल के लिए जो बजट दिया है, उसमें पहले की तुलना में बहुत भारी वृद्धि की गई है।

मैं आज इस सदन के माध्यम से बोलना चाहता हूं कि गया संसदीय क्षेत्र जो भगवान बुद्ध की धरती है, वहां पर खेल के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम का निर्माण किया जाए, चूंकि वहां पर बहुत से देशों से लोग आते-जाते हैं और खेल को बढ़ावा मिलने के लिए यह बहुत जरूरी है। मेरा यह मानना है कि खेलों में सुधार बहुत नीचे के स्तर से किए जाने चाहिए। आज देश में सिर्फ 15 प्रतिशत से भी कम लोगों के पास ही खेलने की सुविधाएं हैं और कहें तो, उनमें जागरूकता है। भारत में युवाओं की संख्या ज्यादा है। अगर इनको खेलने की समुचित सुविधा दी जाए, तो हमारा देश खेल में काफी आगे जाएगा। सरकार को मणिपुर की तर्ज पर देश के सभी राज्यों में खेल विश्वविद्यालय की स्थापना करनी चाहिए। जिला स्तर से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले युवाओं को हर महीने प्रोत्साहन राशि मिलनी चाहिए, जिससे गरीबी के कारण अपने सपनों को पूरा न कर पाने वाले युवा भी अपनी प्रतिभा में निखार ला सकें। इसके साथ ही राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी देश का नाम रोशन कर सकें।

मैं बिहार के युवाओं की तरफ से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि खेल प्राधिकरण की संस्थाएं बिहार में भी खोली जाएं, जिससे बिहार की जो युवा पीढ़ी खेलों से अपना कैरियर बनाना चाहती है या जिनकी खेलों में रुचि है, उनको आसानी से इसका लाभ मिल सके। मैं खेलो इंडिया कार्यक्रम की काफी प्रशंसा करता हूं। देश भर के युवाओं को अपनी प्रतिभा निखारने और दिखाने का मौका मिलना चाहिए। मेरा सरकार से आग्रह है कि इस कार्यक्रम के लिए आबंटित राशि में कुछ और वृद्धि की जाए। इसके साथ ही साथ बिहार जैसे पिछड़े राज्यों में विशेष स्तर पर खेल कार्यक्रम की व्यवस्था की जाए, जिससे कि बिहार के युवाओं को भी देश के अन्य राज्य के युवाओं की तरह ही खेल और इससे संबंधित प्रतियोगिताओं के समान अवसर प्राप्त हो सकें।

(1510/GG/UB)

महोदया, बिहार एक पिछड़ा राज्य है, जहां इस तरह के कार्यक्रमों की ज्यादा आवश्यकता है। खेल के मैदानों के विकास, सामुदायिक कोचिंग और वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं के माध्यम से कई नई प्रतिभाओं की खोज को भी बढ़ावा मिलेगा। मेरे संसदीय क्षेत्र में बहुत सी संभावनाएं है।

महोदया, मैं एक निवेदन और करना चाहता हूँ कि गया में हर हाल में स्टेडियम बनना चाहिए। मैं सदन के द्वारा माननीय मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूँ कि बौद्धगया में बुद्ध भगवान को ज्ञान प्राप्त हुआ था, इसलिए इसे अति आवश्यक समझा जाए।

महोदया, मैं इन्हीं चंद शब्दों के साथ अपनी बात को समाप्त को समप्त करता हूँ।

(इति)

1512 बजे

श्री अच्युतानंद सामंत (कंधामल): माननीय महोदया, मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे इस सिलसिले में बोलने का समय दिया है। यह भी मेरी मेडन स्पीच जैसी है। मैं पॉलिटिक्स में तो नया हूँ। जीरो ऑवर की बात कभी लॉटरी में आई नहीं है तो मैं पहली बार यहां मिनिस्ट्री ऑफ यूथ एण्ड स्पोर्स्ट्स की डिमांड्स फॉर ग्रांट्स पर बोल रहा हूँ।

महोदया, स्पोर्ट्स एण्ड यूथ अफेयर्स एक इतना संगीन मंत्रालय है, देश के लिए इतना महत्वपूर्ण है, इसे हम सब लोग अनुभव कर रहे हैं। मेरे साथी सांसदगण बोले हैं, उसी सिलसिले में मैं भी इसके कुछ पॉइंट्स उठाना चाहता हूँ।

Madam, today youth is the future of tomorrow's India and sports has a tremendous potential to save this future. I rise to speak about various underlying grassroot level issues and points that need attention for India to bridge the gap in our sporting potential.

It is true: "Jo khele vo khile". Those who play, shine. For our youth and sportspersons to shine and outshine others, we need to handover and guide them right from the formative stage, provide direction in the form of suitable training and empower them with assurance of education and career so that they excel at the top level and inspire the future generation.

In this regard, I would like to thank our hon. Finance Minister for presenting the Budget that strengthens the sports ecosystem by encouraging mass participation and promotion of excellence under the able leadership of our prolific Prime Minister, Shri Narendra Modi ji, who aptly says, "Khelega India to khilega India".

We are on the right path to becoming a sporting powerhouse. However, we can raise our speed and ensure the safety of our drivers. मैं इस सिलसिले में माननीय प्रधान मंत्री जी का उदाहरण देना चाहता हूँ। माननीय प्रधान मंत्री जी जरूर जमीन से जुड़े इंसान होंगे। उन्होंने अपने बचपन में जरूर स्वच्छता, स्वास्थ्य, नारी की समस्या को खूब करीब से देखा होगा। इसलिए जब प्रधान मंत्री बने तो आज हमारे पास स्वच्छ भारत अभियान, उज्जवला, आयुष्मान और सौभाग्य योजना जैसे हीरे दे दिए हैं। बोलने का सिलसिला है, जैसे इसको माननीय प्रधान मंत्री, भारत सरकार, They have made it a campaign. जिसकी वजह से आज स्वच्छता में सन् 2014 में 39 प्रतिशत से अब 99 प्रतिशत आ चुका है। उज्जवला में नौ करोड़ लगभग हो गया है। जैसे इसको हम एक मेडन किए हैं, उसी तरह से स्पोर्ट्स को हम लोग वैसे कैम्पेन करेंगे तो आगामी दिनों में देश के लिए बहुत अच्छा भला होगा। मैं इस सिलसिले में भी बोलना चाहता हूँ कि माननीय प्रधान मंत्री ऑलरेडी काम शुरू कर चुके हैं। जैसे एक अच्छी स्कीम लाँच किए हैं – खेलो इंडिया। The Khelo India Programme has been introduced to revive the sports culture in India at the grassroots level by building a strong framework for all sports played in our

country and establish India as a great sporting nation. Talented players identified in priority sports disciplines at various levels by high-powered committee will be provided annual financial assistance of Rs. 5 lakh per year.

(1515/KN/KMR)

यह प्रोत्साहन देने के लिए बहुत अच्छा है। माननीय मंत्री जी बैठे हैं, इसको विस्तार से करें, तब जाकर इसका फल हम लोगों को अनुभव होगा। मैं इस सिलसिले में बोलना चाहता हूँ कि सबसे बड़ी दु:ख की बात है, हम सब लोगों को पता है कि भारत 130 करोड़ की आबादी का देश है, लेकिन आज तक कोई भी खिलाड़ी एथलेटिक्स में भारत के लिए एक भी मैडल नहीं ला पाए हैं। मैं इसमें याद दिलाना चाहता हूँ कि ओलम्पिक के नीचे वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स है, जो अभी चल रहे हैं। उसमें भी कोई भारतीय खिलाड़ी आज तक एथलेटिक्स में कोई भी मैडल नहीं लाया है। लेकिन भारत के लिए खुशी की बात है कि अभी 10 जुलाई को हम लोगों के देश की बेटी, के.आई.आई.टी. की छात्रा दुती चंद ने पहली बार इतिहास बनाया है। भारत के लिए गोल्ड मैडल जीता है, जिसके लिए माननीय प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, अमिताभ बच्चन से लेकर, सब लोगों ने ट्वीट किया, प्रेज़ किया। मैं बोलना चाहता हूँ कि भारत देश की 130 करोड़ की आबादी है। युवाओं का देश है। हमें इस पर ध्यान देना चाहिए। हम लोगों को आशीर्वाद है कि इतना बड़ा युवा देश है, डेमोग्राफी डिविडेंड बनना चाहिए, डेमोग्राफी डिजास्टर नहीं होना चाहिए। अन्यथा टाइम फिर आएगा, जैसे अभी पीएम किसान योजना में 6000 रुपये सहायता देते हैं, देश में युवा लोग ऐसे ही बैठे रहेंगे तो भारत सरकार को सोचना पड़ेगा कि इन लोगों को भी कितनी सहायता देनी चाहिए। मोदी जी की दूरदर्शी सरकार है, इसमें स्टेप लेंगे तो ज़रूर खेलकूद बढ़ेगा।

मैं इस सिलसिले में याद दिलाना चाहता हूँ कि भारत का अंतरिक्ष में 1960 के दौरान कुछ भी नहीं था। उस टाइम रशिया, यू.एस. की टक्कर चल रही थी। भारत की आबादी बढ़ने के कारण अर्थ बल, ज्ञान बल में बहुत संघर्ष कर रहे थे, लेकिन उसी टाइम अवर ग्रेट सन आफ द कंट्री ग्रेट साइंटिस्ट विक्रम साराभाई जी ने 15 अगस्त, 1969 में इसरो की स्थापना की थी। आज वही इसरो इतने कम साल के अंदर नासा को टक्कर दे रहा है। आज इसरो चन्द्रयान-II को चन्द्रमा के साउथ पोल पर भेज रहा है।...(व्यवधान)

मैडम, मेरी मैडन स्पीच है। मैं कभी बोलता नहीं हूँ। मुझे बोलने दीजिए। हम खेलकूद को आगे बढ़ाएंगे तभी हम लोगों के लिए बहुत अच्छा होगा। मैं इस सिलसिले में ओडिशा का एग्जाम्पल दूँगा। Owing to the efforts made by Shri Naveen Patnaik ji, Odisha has become the sports capital of India. The State Government has created world-class infrastructure to host many global sporting events. Odisha is the template for nurturing budding talents with exposure to the international players. We all know that Odisha Government announced a five-year deal with Hockey India to sponsor both men and women players. Not only this, though Odisha is a poor State, it has hosted many events like the Junior Women's Rugby Tournament,

22nd Asian Athletics Championship, Men's Hockey World League, and also World Cup Hockey.

सारी दुनिया को दिखा दिया है कि कैसे हो सकता है। आज के दिन 17 जुलाई को 21वें कॉमनवेल्थ टेबल टेनिस चैम्पियनशिप का उद्घाटन हो रहा है। That is why Odisha is always being hailed as the sports capital of the country. As our Chief Minister says, Odisha is shaping the future of sports in India.

नवीन पटनायक जी बोलते नहीं हैं, काम करके दिखाते हैं। For the first time, the Sports and Youth Service Department of Odisha signed seven MoUs with seven leading corporate houses for promoting sports like athletics, football, swimming, badminton and also weightlifting and shooting.

You all know that Odisha is a tribal dominated area. यहाँ पर भी एक चौथाई आदिवासी आबादी है। हम लोगों को पता है कि आदिवासी लोग खेलकूद में बहुत आगे बढ़े हैं। हमारे यहाँ सुन्दरगढ़ जिला है। सुंदरगढ़ से दिलीप टिर्की से लेकर कई आदिवासी खिलाड़ी इंडिया की हॉकी टीम में हैं। मैं इस सिलसिले में याद दिलाना चाहूँगा कि अभी रग्बी में भारत के लिए ब्रॉन्ज मैडल लाकर इतिहास रचा। उसमें भी इंडिया टीम में पाँच लड़कियाँ आदिवासी हैं।

(1520/CS/SNT)

वे लड़कियाँ हमारे आदिवासी विश्वविद्यालय से ही थीं। मेरा कहना है कि सामान्यत: खेल को गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चे ही खेलते हैं। उनके लिए सुविधाएं प्रदान करें, उनको आगे बढ़ाएं, be it reservation in education, be it reservation in service, इस सबमें उसे थोड़ा आगे बढ़ाना चाहिए। हमारे माननीय मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक जी ने दुती चंद को 3 करोड़ रुपये प्राइज मनी दिया, जब वे एशियन गेम्स से दो मेडल लेकर आईं।

माननीय मंत्री जी यहाँ बैठे हैं, पूर्व खेल मंत्री जी भी यहाँ बैठे हैं, जिन्होंने देखा है कि हम लोगों ने क्या कॉन्ट्रिब्यूशन किया है। मैं आज इंडिविजुअल खिलाड़ी नहीं हूँ, लेकिन मैंने खेलों में बहुत कॉन्ट्रिब्यूट किया है। मेरे बच्चे एशियाड, कॉमनवेल्थ, ओलम्पिक गेम्स में पार्टिसिपेट करते हैं और मेरे लगभग 5 हजार खिलाड़ी खेल रहे हैं। मेरा कहना है कि sports is the future of India. इसको हम लोग जितना आगे बढ़ाएंगे, उतना ही बेहतर है। हमारे यहाँ जितनी समस्याएं हैं, मेरे पास बोलने के लिए टाइम नहीं है। Sports is inspiring, immersive, emotion evolving and catalyst for change. Sports bring people together across culture, language, gender and social class.

माननीय सभापति (श्रीमती रमा देवी): आप अपने सारे सुझाव मंत्री जी को लिखकर दे दीजिएगा।

SHRI ACHYUTANANDA SAMANTA (KANDHAMAL): It promotes brotherhood and amiable relations and definitely, sports creates health awareness and accelerates psychological healing. मैं बीजू जनता दल की तरफ से युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के नियंत्रणाधीन अनुदानों की मांगों का समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

(इति)

1522 बजे

कुंवर दानिश अली (अमरोहा): महोदया, मैं युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के नियंत्रणाधीन अनुदानों की मांगों के समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद।

महोदया, हमारे देश में इतनी प्रतिभाएं हैं कि अगर उनका सही उपयोग किया जाए, तो हिन्दुस्तान खेलों के मामले में भी दुनिया में नम्बर एक हो सकता है। बदकिस्मती इस बात की है कि देश को चलाने वाले लोग नौजवानों को केवल अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं। बच्चों को बचपन से लेकर जवानी तक तैयार करते हैं कि उनसे राजनैतिक फायदा कैसे मिले, इसके लिए तो बहुत ताकत लगाई जाती है, लेकिन अगर बच्चों, नौजवानों को सही अवसर उपलब्ध कराए जाएं, तो मैं नहीं समझता कि हम दुनिया में किसी भी देश से पीछे रह सकते हैं। हमारे देश में प्रतिभाओं का भंडार है। अभी बाढ़ का मौसम है, कई प्रदेशों में बाढ़ आ रही है, वहाँ गाँवों में रहने वाले बच्चे किस तरीके से तैरकर एक गाँव से दूसरे गाँव में पहुँच जाते हैं, अगर हम उनको इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध कराएं, तो मैं समझता हूँ कि दुनिया के किसी भी देश से वे मुकाबला कर सकते हैं। आदिवासी इलाकों में माँ की कोख में ही बच्चा तीर चलाना सीख जाता है, लेकिन अगर हम उनको थोड़ा सा इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध करा दें, तो वे देश क्या, दुनिया के बड़े तीरंदाज बन सकते हैं।

महोदया, बदकिस्मती इस बात की है कि हमारे देश में जितनी खेल संस्थाएं हैं, वे सभी दिल्ली और मुम्बई जैसे देश के बड़े महानगरों के आलीशान बंगलों में बैठे हुए लोगों के कब्जे में हैं। जिन्हें उस खेल की ए,बी,सी,डी भी नहीं मालूम, वे उस खेल एसोसिएशन के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष दशकों से रहते चले आ रहे हैं।

(1525/RV/GM)

मैं समझता हूं कि यह सरकार आदरणीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में बहुत मजबूत सरकार है। हम रोज इस सदन में सुनते हैं - where there is a will, there is a way. मैं आपके माध्यम से खेल मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि ऐसी सभी एसोसिएशंस, जिन पर दशकों से कब्जा है और यह कब्जा उन लोगों का है, जिनके बारे में आप जानते हैं, हम भी जानते हैं और पूरा सदन जानता है कि उनका खेल से कोई लेना-देना नहीं है। उन एसोसिएशंस को पूरे तरीके से कॉमर्शियलाइज़ किया गया है।

सभापति महोदया, इसमें एक बहुत अच्छा समन्वय भी है। यह बहुत अच्छी अंडरस्टैण्डिंग हैं कि जब उधर बैठे हुए लोग उसके किसी पद के लिए चुनाव लड़ रहे हों तो इधर बैठे हुए लोग उसे ऑपोज़ नहीं करेंगे और जब इधर बैठे हुए लोग किसी पद के लिए लड़ रहे होंगे तो उधर बैठे हुए लोग उसे ऑपोज़ नहीं करेंगे। लेकिन, जो गांव, देहात में बसने वाला नौजवान है, इससे उसकी प्रतिभा के साथ खिलवाड़ हो रहा है।

महोदया, मैं यहां खड़े होकर गांव में बसने वाले दलितों और आदिवासियों की बात कर रहा हूं क्योंकि हमारे देश में तो खेलों पर एक एलीट क्लास लॉबी का कब्जा है, जो बड़े-बड़े महानगरों में रहते हैं। उन लोगों ने इस पर कब्जा कर रखा है। इसलिए मैं सदन का ज्यादा वक्त न लेते हुए खेल

मंत्री जी से यही गुज़ारिश करूंगा कि इस पर आप सीरियसली विचार कीजिए। खेलों के एसोसिएशंस में एक बहुत बड़ा नेक्सस है। इसमें राजनेताओं और नौकरशाहों का नेक्सस है। मुझे यह कहने में बिल्कुल भी गुरेज नहीं है क्योंकि वे अपनी पूरी ताकत इसमें लगाते हैं कि उनके किथ-एण्ड-किन्स इस खेल में कैसे आगे बढ़ें।

महोदया, ज्यादा कुछ न कहते हुए मैं खेल मंत्री जी से यह भी मांग करूंगा कि मेरे अमरोहा लोक सभा संसदीय क्षेत्र में आप एक स्टेडियम दीजिए। अभी-अभी मेरे क्षेत्र से क्रिकेट के मैदान में भी एक बड़ा खिलाड़ी मोहम्मद शमी उभर कर आया है, जिसने कई मैचों में लगातार विकट्स लिए। मोहम्मद शमी मेरे अमरोहा लोक सभा क्षेत्र से ही आता है। मेरे लोक सभा क्षेत्र में बहुत युवा प्रतिभाएं हैं जो देश का नाम रोशन करेंगी। कृपया आप मेरे क्षेत्र में एक स्टेडियम देने का कष्ट करें।

बहुत-बहुत शुक्रिया।

(इति)

1528 बजे

कर्नल राज्यवर्धन राठौर (जयपुर ग्रामीण): माननीय सभापति महोदया, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे युवा मामले और खेल मंत्रालय की अनुदान मांगों पर हो रही चर्चा में बोलने का अवसर दिया।

महोदया, मैं सबसे पहले प्रधान मंत्री मोदी जी और भारत सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा। एक खिलाड़ी होने के नाते यह पहली बार है कि हम गर्व से कह सकते हैं कि खेलों के ऊपर फोकस आया है, खेलों को और खिलाड़ियों को आज मान-सम्मान दिया जा रहा है।

सभापति महोदया, यह कहते हुए मुझे जरा-सी भी झिझक नहीं है कि एक खिलाड़ी का जीवन अत्यन्त चुनौतीपूर्ण होता है और ये चुनौतियां सिर्फ प्रतिद्वन्द्वियों से नहीं मिलती हैं, बल्कि हमारी जो परिस्थितियां हैं, उनसे भी खिलाड़ियों को चुनौती मिलती है। ऐसे माहौल में, जहां किसी गांव में अगर कोई लड़की खेलना चाहे तो उसे ताने दिए जाएं, उसे खेलने का अवसर न मिले, वह खेलना चाहे, मगर कोई सुविधा न हो, प्रतिभा हो, मगर कोई अपॉर्च्यूनिटी न मिले, कोई प्लेटफॉर्म न मिले और इतना सबके बावजूद भी अगर वह स्टेट लेवल पर, राष्ट्रीय लेवल पर पहुंचे तो वहां से ऊपर अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर जाने के लिए जो साजो-सामान, स्पोर्ट्स साइंस एण्ड नॉलेज, जो चाहिए, वे न हों। ये सारी चुनौतियां एक साधारण खिलाड़ी के जीवन में आती हैं। लेकिन, मैं कह सकता हूं कि पिछले पाँच सालों के अन्दर हमारे खिलाड़ियों को जो सम्मान और सुविधा मिली है, उसके कारण आज विश्व के अन्दर भारत के खेलों को और भारत के खिलाड़ियों को एक नए नज़रिए से देखा जा रहा है। यह उभरते हुए भारत की तस्वीर है और अगले कुछ सालों में आप इसका नतीजा देखेंगे।

महोदया, पहले आम तौर पर यह माना जाता था कि आपके पास कुछ और करने को नहीं है तो आप खेल रहे हैं और अपना समय ज़ाया कर रहे हैं। एक कहावत और शुरू हो गयी थी कि 'खेलोगे-कूदोगे तो बनोगे खराब।' मैं आज यह कह सकता हूं कि अब भारत के अन्दर जमाना बदल गया है। आज 'खेलोगे-कूदोगे तो बनोगे लाजवाब', हम यह माहौल पूरे देश में लेकर आए हैं।

(1530/MY/RK)

खेल खेलने के कई कारण हैं, जिनके लिए आप खेलते हैं। इससे आपका चरित्र डेवलप होता है। आप एक टीम की लीडरशिप संभालते हैं। आप एक लीडर के नीचे काम करना सीखते हैं। आप सैक्रिफाइस करना सीखते हैं। आप एक टीम के लिए खेलते हैं। आप बहुत कुछ सीखते हैं। आप अपने जीवन के क्लास रूम में बैठकर भले ही पढ़ लें कि ठोकर खाने के बाद फिर से खड़े हो जाइए, लेकिन वह तो सिर्फ किताब में है। अगर जीवन के अंदर वाकई में ठोकर खाकर खडा होना है, तो आपको खेल के मैदान में उतरना ही पड़ेगा। अगर आप खेल के मैदान में उतरेंगे, तो हर दिन आपकी जीत होगी और हर दिन आपकी हार होगी। आप उसी से सीखिएगा कि जीत में भी संयम बनाकर रखिए, हार में भी अपना धैर्य हमेशा ऊपर रखिए और टीम को हमेशा साथ लेकर चलिए। एक खेल के मैदान से जितनी शिक्षा मिलती है, वह शायद ही किसी क्लास रूम से मिल सकती है। मैं यह भी बिना झिझक के कह सकता हूं कि यहां संसद के अंदर बहुत से मेम्बर्स ऑफ पार्लियामेन्ट

हैं, जो खेल के मैदान से होकर पार्लियामेन्ट तक आए हैं। उसी तरह चाहे बैंक हो, चाहे सर्विसेज़ हों, चाहे बिजनेसमैन हों, चाहे टीचर्स हों, जो भी खेल के मैदान से निकलकर अपने स्थान तक पहुंचे हैं, उन्होंने अपने जीवन में अच्छा ही किया है। उन्होंने एक पॉजिटिव इम्पैक्ट छोड़ा है।

यही नहीं, स्पोर्ट्स डिप्लोमैसी का भी एक बहुत बड़ा साधन है। अगर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहूं, तो वर्ष 1949 में 25 वर्ष बाद पिंग पांग डिप्लोमैसी के तहत अमेरिका और चीन ने बातचीत करना शुरू किया था। चीन ने अमेरिका की टेबल टेनिस टीम को आमंत्रित किया था। उससे उनकी बातचीत शुरू हुई और उसके बाद उनके संबंध अच्छे हुए। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की भी क्रिकेट डिप्लोमैसी कई बार चर्चा में रही है। वर्ष 1987 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति यहां पर आए, वर्ष 2005 में आए और वर्ष 2011 में भी आए। खेल के माध्यम से आप जिस तरह से सीमाओं को पार कर जाते हैं, चाहे वह जाति की सीमा हो, धर्म की सीमा हो, पंथ की सीमा हो, समुदाय की सीमा हो, आप खेल के मैदान में घुसते ही, जैसे ही आप खेल के मैदान की बाउंड्री में घुसते हैं, आपकी बाकी सारी बाउंड्रियां वहीं पर समाप्त हो जाती हैं। यह खेल की ताकत है। इसको बढ़ाने के लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं। पहली बार एक ओलिम्पिक टास्क फोर्स लगाई गई। ऐसा नहीं है कि इस ओलिम्पिक टास्क फोर्स के अंदर ब्यूरोक्रेसी या अधिकारियों को डाल दिया गया है। खेल के जो विशेषज्ञ थे, उनको ही चुनकर प्रधान मंत्री जी ने उसमें डाला है। उन्होंने इसके ऊपर खूब लंबी स्टडी की और उसके बाद ही अपनी सिफारिश दी। प्रधान मंत्री जी ने एक पिरामिड का विज़न किया कि देश के अंदर एक पिरामिड बनना चाहिए। उस पिरामिड के सबसे ऊपर एलिट खिलाड़ी होना चाहिए, जो भारत के लिए खेले और हमारे तिरंगे को दूसरे देशों में लहराए। अगर उस पिरामिड को ऊंचा होना है, तो उस पिरामिड को चौड़ा होना भी जरूरी है। यह तभी चौड़ा हो सकता है, जब हर बच्चे को खूब खेलने की सुविधा मिले। इसके बीच में नेशनल टीम्स तथा कैम्प्स भी आते हैं।

सभापति महोदय, खेल एक स्टेट सब्जेक्ट है, यानी स्टेट इसके ऊपर कानून बनाता है। यहां पर हमारी दूसरी पार्टियों के बहुत सारे सदस्यों ने उसकी चर्चा की। मैं उन सभी से पूछना चाहता हूं। मैं आग्रह करना चाहता हूं कि आप अपने-अपने राज्यों में जाकर अपनी-अपनी पार्टियों से एक बार तो पूछिए कि किसी ने स्टेट के अंदर स्पोर्ट्स का एक्ट बदला या नहीं बदला। वहां जो फेडरेशंस हैं, उनको जवाबदेह बनाने के लिए कुछ काम किया या नहीं किया। आपको ताज्जुब होगा कि जब 'खेलो इंडिया' शुरू हुआ, तो पहली बार स्टेट के जो एजुकेशन अधिकारी थे, वे स्टेट के स्पोर्ट्स अधिकारियों के साथ मिलकर बात कर रहे थे। यह पहली बार हुआ है। आप सोचिए कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि स्टेट में जो स्पोर्ट्स हैं, वहां के स्कूल में पढ़ने वाले जो बच्चे हैं, वे ही तो खेल खेलेंगे। पहले एजुकेशन डिपार्टमेंट और स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट आपस में बातचीत भी नहीं करते थे। 'खेलो इंडिया' ने यह सब शुरू किया है। 'खेलो इंडिया' का जो प्रोग्राम रखा गया, उसमें 17 से 21 साल तक के युवाओं के लिए हमने यूथ गेम्स शुरू किया। हमने पहली बार 'खेलो इंडिया' गेम्स का भी आयोजन किया। यह चुनौती वाला काम था। उस समय भारत सरकार के अधिकारियों ने

कई बार कहा कि शायद इस बार यह संभव नहीं है, इसे अगली बार करते हैं, लेकिन प्रधान मंत्री मोदी जी ने यह तय कर लिया था कि हमें 'खेलो इंडिया' और यूथ गेम्स को करना ही है।

जब दूसरी बार 'खेलो इंडिया' और यूथ गेम्स हुए, तो सात हजार खिलाड़ियों ने उसमें पार्टिसिपेट किया। आप सोचिए कि स्कूल के लेवल पर किसी बच्चे को आज तक यह सुविधा एवं अवसर मिलता था कि एक स्कूल का बच्चा स्टार टीवी के 100 घंटे के हाई डिफिनेशन ब्रॉडकास्ट लाइव के ऊपर पार्टिसिपेट करे और पूरी दुनिया उसको देखे। यह अवसर किसको मिलता था? मुझे इस बात की भी खुशी है कि सरकार को बधाइयां दी जाती थीं। उस समय उनके माता-पिता आकर बोलते थे कि आपने 'खेलो इंडिया' का जो ट्रैक सूट और स्पोर्ट्स किट दी है, वह ट्रैक सूट इतने अच्छे हैं कि बच्चे उसको पहन कर सो जाते हैं।

(1535/CP/PS)

मतलब एक-एक पैसे की पूरी वसूली की गई। हाई स्टैंडर्ड की चीजें बनीं। प्रधान मंत्री मोदी जी ने कहा कि खेल इस तरह के करो कि हमारे बच्चों को आगे बढ़ने का एक विजन मिले। हर बच्चा कामनवेल्थ या एशियन गेम्स में नहीं जा सकता है। उनको स्कूल के लेवल पर क्या आप राष्ट्रमंडल खेलों जैसा नजरिया दिखा सकते हैं, ताकि उनका भी मन करे कि वे अंतर्राष्ट्रीय खेलों में जाएं? हमने इस तरह का आयोजन किया कि स्टार स्पोर्ट्स के जो कैमरामैन हैं, वे बोलते हैं कि हमें गर्व होता है, अगर किसी खेल को हम कवर करते हैं। क्रिकेट, आईपीएल नहीं, हमें सबसे ज्यादा अगर गर्व होता है किसी खेल को कवर करने में, तो वह खेलो इंडिया के यूथ गेम्स को कवर करने में गर्व होता है।

हम सब बात करते हैं कि भारत के अंदर प्रतिभा है। प्रतिभा जरूर है, लेकिन उस प्रतिभा को मंच देना बहुत जरूरी है। अमेरिका के अंदर अगर अच्छे खिलाड़ी हैं, तो उसका एक कारण यह है कि यूएस के अंदर कॉलेज गेम्स बहुत मशहूर हैं। हर खिलाड़ी वहां कॉलेज गेम्स में खेलता है और उसको मंच बनाकर आगे बढ़ता है। मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि प्रधान मंत्री मोदी जी ने जो खेलो इंडिया का विजन रखा है, अगले दस साल के अंदर यह लगातार जब चलता रहेगा, तो भारत के खिलाड़ी जो स्कूल के लेवल के हैं, वे अंतर्राष्ट्रीय लेवल के होंगे। अगले दस साल के अंदर जो-जो भारत के ओलम्पिक चैम्पियन बनेंगे, वे खेलो इंडिया से ही होकर निकलेंगे, मैं आपको इस बात का यकीन दिला सकता हूं।

हमने एक मोबाइल ऐप बनाई। देश के जितने भी खेल के मैदान हैं, उनकी मैपिंग करके उसमें डाल दिया। उन खेलों को कैसे खेला जाता है, उनके एनिमेटेड वीडियोज़ उसके ऊपर डाल दिए। हमने फिटनेस और नैचुरल एबिलिटी का सिलेक्शन उस मोबाइल ऐप में डाल दिया। अब हम स्कूलों से आग्रह कर रहे हैं कि आप पार्टनर करिए। आप अपने स्कूल के बाहर लिखिए। आप सिर्फ यह मत कहिए कि हमारे स्कूल के अंदर जो बच्चे हैं, वे 90 पर्सेंट से ऊपर मार्क्स लाते हैं। आप वह जरूर लिखिए, लेकिन आप यह भी लिखिए कि हमारे स्कूल के जो बच्चे हैं, वे फिजिकली फिट हैं। उनका स्टैंडर्ड इतना अच्छा है कि खेलो इंडिया की मोबाइल एप्लीकेशन भी हमें थम्ब्स अप देती है। इस तरह का हमने एक माहौल बनाया है।

मोबाइल एप्लीकेशन से हम सिलेक्शन करना शुरू कर रहे हैं। हो सकता है कि झारखंड के अंदर कोई दस साल की लड़की हो, जो दस साल की उम्र में ही पांच फीट दस इंच की हो, हो सकता है कि तमिलनाडु में कोई ऐसा बच्चा हो, जो आठ साल की उम्र में बहुत ऊंचा जम्प करता हो, हो सकता है कि कश्मीर के अंदर कोई लड़की हो, जिसमें बहुत अच्छा टैलेंट हो। इस मोबाइल एप्लीकेशन से हम उनको 8 साल, 10 साल या 11 साल की उम्र में आइडेंटिफाई करके, उनको 10 साल की उम्र से हम उनको 5 लाख रुपये प्रति वर्ष देना शुरू करेंगे और 8 साल तक लगातार देते रहेंगे। जब वे 18 साल के होंगे, तब तक अंतर्राष्ट्रीय स्टैंडर्ड से भी वे ऊंचे उठ चुके होंगे। इस तरह का हमने एक विजन रखा हुआ है।

मोदी सरकार ने लक्ष्य रखा हुआ है कि हर जिले के अंदर हमें एक स्पोर्ट्स स्कूल बनाना है। स्कूल नया खड़ा करने की जरूरत नहीं है। स्कूल पहले से ही हैं। नवोदय विद्यालय है या सेंट्रल स्कूल है। उनके अंदर सिर्फ एक या दो खेलों का आयोजन हम इस तरह से करें कि वहां पर ट्रेनिंग हो सके। उस जिले के अंदर जो अच्छे खिलाड़ी हैं, कोई साउथ में है, कोई तमिलनाडु या केरल का बच्चा है, उसको दिल्ली में लाने की क्या आवश्यकता है, उसको वहीं ट्रेनिंग मिलनी चाहिए। इसीलिए इस तरह के स्पोर्ट्स स्कूल की भी तैयारी चल रही है।

मैं वित्त मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा। हर बच्चा एकैडमिक्स में अच्छा नहीं होता है। सबकी अपनी-अपनी काबिलियत होती है। जो खेलों में अच्छा हो, ड्रैमेटिक्स में अच्छा हो, सिंगिंग में अच्छा हो, उनको आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। हर एक बच्चा उसी तालीम को करेगा, उसी सिलेबस को करेगा, तो इतना भारी स्कूल बैग को उठाकर वह खेलों में कुछ कैसे कर सकता है?

मैं वित्त मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने नेशनल स्पोर्ट्स एजुकेशन बोर्ड का ऐलान किया है, मुझे यकीन है कि इसके अंदर कोई नया रास्ता निकलेगा, जिससे खेल में आगे बढ़ने वाले बच्चे भी आगे बढ़ पाएं।

गुरु बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। गुरुओं को कैसे आगे बढ़ाया जाए? सबसे पहले खेलो इंडिया के अंदर ही प्रधान मंत्री जी ने कहा कि कोचेज़ को, हिंदी में रूपान्तर करें तो गुरु, इनको महत्व दीजिए और इनको आगे बढ़ाने के लिए कोई इनसेंटिव बनाइए। मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहता हूं कि जब भी कोई खिलाड़ी ओलम्पिक या एशियन गेम्स में जीतता है, तो उस खिलाड़ी को तो पैसा मिलता ही है, उसके कोच को भी पैसा मिलता है। इससे एक दुविधा शुरू हो जाती है। जो कोच उस खिलाड़ी को तैयार करके लाता है, बृजभूषण जी एकदम स्माइल कर रहे हैं, समझ गए होंगे, वे रेसलिंग फेडरेशन के अध्यक्ष हैं, वे इस समस्या को समझते हैं। जब किसी खिलाड़ी को तैयार करके कोई कोच नीचे से ऊपर लाता है, तो वह उस खिलाड़ी को छोड़ना ही नहीं चाहता है। (1540/RC/NK)

उस खिलाड़ी के दिमाग में डाल देता है कि दूसरा कोच आएगा तो तुम्हें बिगाड़ देगा, वह खिलाड़ी उस कोच को नहीं छोड़ना चाहता है, बिल्कुल सही बात है। जिस कोच ने आपको तैयार किया है, उसको भी कुछ न कुछ मिलना चाहिए, उसको मान्यता मिलनी चाहिए, इन्सेन्टिव मिलना

चाहिए। मैं खेल मंत्रालय को धन्यवाद देता हूं, उन्होंने पूरी पॉलिसी को बदल दी, अब इन्सेन्टिव का पैसा ग्रासरूट कोच को भी तीस परसेंट जाएगा जिसने बचपन में उसको सिखाया और आगे कदम बढ़ाया। स्कूल, कॉलेज और इंटरमीडिएट कोच को भी तीस परसेंट पैसा जाएगा और मान्यता भी मिलेगा, बचा हुआ चालीस प्रतिशत उस समय का अंतर्राष्ट्रीय लेवल के कोच को मिलेगा, जिसने उसके ऊपर हाथ फेरा है और जीतने के गुर सिखाए हैं, उसको मिलेगा। इस तरह से हमने सिस्टम खड़ा करने की कोशिश की है।

हम कम्युनिटी कोचेज डेवलपमेंट करना चाहते हैं। गुरु सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों के लिए हो, ऐसे खिलाड़ी नहीं बन सकते। जब तक नीचे से सही दिशा में नहीं चलेंगे तब तक खिलाड़ी तैयार नहीं हो सकता। मैं यहां पर बताता हूं, यह सेइंग है, Practice makes you perfect. यह गलत है Perfect practice makes you perfect. Imperfect practice will make you imperfect. यहां पर कुछ उदाहरण भी हैं, इम्परफेक्ट प्रैक्टिस से काम नहीं चलेगा। हमने सैलरीज इन्क्रीज कीं। मेरे साथी ने इस पाइंट को उठाया कि जब तक गुरुओं को साधन नहीं मिलेगा और पैसा नहीं मिलेगा तो किस तरह से परिवार को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा। नेशनल एकेडमी के कोचेज और सपोर्ट स्टाफ के ऊपर कैप लगा रखी थी कि उनको एक लाख रुपये से ज्यादा पैसे नहीं मिल सकते हैं। हम उसमें सौ प्रतिशत सुधार लेकर आए और सीधे उस राशि को डबल कर दिया और कैप भी हटा दिया। यदि भारत के कोच हैं और वह अच्छी कोचिंग कर सकते हैं तो उनकी सैलरी और फी स्ट्रक्चर में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। टॉप मैडल प्रोसपेक्ट, मैं उस रास्ते से निकला हूं जहां कई बार चिंता होती थी कि मैं खेल के मैदान में जाऊं या फाइल को आगे धकेलूं। कई बार खेल के मैदान को छोड़ कर उस दफ्तर के अधिकारी के पास बैठना पड़ता था ताकि फाइल आगे बढ़े तो थोड़ा-बहुत साधन मिले। आपको मुझे बताते हुए गर्व है कि मोदी सरकार ने टारगेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम के अंतर्गत प्रोफेशनल लोगों को रखा है, जो खेलों के लिए पैसेनेट है, जो खेलों के बारे में जानते हैं, जो खेलों के बारे में शानदार रिसर्च करते हैं। खिलाड़ियों और फेडरेशन से ज्यादा बढ़कर नॉलेज रखते हैं ताकि स्पोर्ट साइंस और सब कुछ बैकअप उनको दिया जा सके। उन्होंने रिलेशनशिप मैनेजर रखा हुआ है। आमतौर पर बिजनेस कंपनी में रिलेशनशिप मैनेजर रखते हैं। किरन रिजुजु जी यहां बैठे हुए हैं, इनके मंत्रालय ने रिलेशनशिप मैनेजर रखे हुए हैं ताकि टॉप के खिलाड़ी से सीधे मोबाइल फोन पर बात कर सकें और उनको ऑफिस आने की जरूरत न पड़े। उनको जो चीज चाहिए वह घर बैठे मिले। घंटियां तो जीवन भर बजती रहती हैं।

यह डिमांड्स फॉर ग्रांट्स है, इसमें पैसे की बात होती है। जब हम खेलते थे तो सबसे पहली चीज अधिकारी कहते थे कि पैसे नहीं हैं। आप कुछ भी लेकर जाइए, पैसे नहीं हैं। खेल मंत्रालय ने बार-बार कहा है और मोदी सरकार का कमाल है कि खिलाड़ियों को अब पैसे की कोई कमी नहीं है। माननीय सदस्यों को बताना चाहता हूं कि जितना पैसा एलॉट हुआ है, इसके अलावा एक बहुत बड़ा फंड है, जो एलिट खिलाड़ी हैं, उनकी जो कस्टमाइज्ड ट्रेनिंग होती है, उसी पैसे से होती है, उस पैसे के अंदर कॉरपोरेट पैसा डालते हैं, उसका नाम है नेशनल स्पोर्टस डेवलपमेंट फंड, उस

फंड के अंदर बहुत बढ़िया फलैक्सिबिलिटी है, जो भी उस फंड में पैसा डालेगा भारत सरकार को भी उसके बराबर का पैसा डालना पड़ेगा यानी कॉरपोरेट जगत पचास करोड़ रुपये डालता है तो भारत सरकार को कानूनन उसमें पचास करोड़ रुपये डालने पड़ते हैं।

(1545/SK/SNB)

मैं खेल मंत्रालय से नेशनल स्पोर्टस डैवलपमेंट फंड के लिए निवेदन करता हूं और इस पर माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक तरह से स्वीकृति भी दे रखी है कि आगे बढ़कर काम कीजिए। इसे बढ़ाकर जितने भी कारपोरेट जगत के बड़े दिल वाले कारपोरेट मुगल्स हैं, हैड्स हैं, उनको इस बोर्ड में शामिल कीजिए और अगले ओलम्पिक की तारीख से लंबा कार्यकाल दीजिए। उनको जिम्मेदारी दीजिए। इसमें कम से कम दस कारपोरेट जगत के हैड्स को लाइए, हर एक को 100 करोड़ रुपये लाने के लिए बोलिए। देश में पैसे की कोई कमी नहीं है, आराम से 1000 करोड़ रुपये उस फंड में इकट्ठा कर सकते हैं। मैं आपको यकीन दिला सकता हूं, इतना पोटेंशियल है कि हमें वर्ष 2032 तक 100 ओलम्पिक मैडल का टार्गेट रखना चाहिए और हम उसे अचीव भी कर पाएंगे।

माननीय सभापति (श्रीमती रमा देवी): माननीय सदस्यगण, जो भी माननीय सदस्य अपना लिखित भाषण सभा पटल पर देना चाहते हैं, उनको अनुमति दी जाती है कि वह अपना भाषण पटल पर रख सकते हैं।

1546 hours

SHRI P. P. MOHAMMED FAIZAL (LAKSHADWEEP): Hon. Chairperson, thank you very much for giving me this opportunity to speak on the Demand for Grant relating to the Ministry of Sports and Youth Affairs. I support the Demand for the Ministry. I am thankful to my Party for giving me this opportunity. In fact, I was asking for this opportunity because in previous tenure I was very closely associated with sports activities in my Lakshadweep Parliamentary constituency. I am also thankful to this Government for according so much importance to this Ministry of Sports and Youth Affairs and also for selecting for discussion the Demand for Grant of this Ministry in this House. This is a welcome step.

Madam, I would like to say here that the over-all inter personal relationship and over-all development of a person can happen through sporting activities. We should give much importance to sports for the youth of our country. I would not like to repeat the points that have already been referred to by my colleagues here in this House. I would like to invite the attention of the hon. Minister for Sports and Youth Affairs to a few things.

The first thing is – which has already been mentioned by the former Sports Minister in a very befitting manner – about hunting of talent. Recently, a boy named Master Esow hailing from the Andaman and Nicobar Islands bagged two gold medals in the Junior Cycling Championship in Asia Cup in 2018. This boy hails from a such a remote place like the Andaman and Nicobar Islands. I was very keenly listening to the speech of the former Sports Minister.

I would like to draw the attention of this august House to my constituency Lakshadweep. It is a place surrounded by water on all sides. Water of the sea is saline in nature. The boys there are natural swimmers. The problem we face there is that we do not have swimming infrastructure there. You all know that the buoyancy of saline water and fresh water is different. When the talented youths who swim in the sea water are asked to swim in fresh water, they cannot perform well because they face an imbalance owing to different buoyancy of fresh water. Since the Government is very keen on providing infrastructure, I would like to urge upon the Government to kindly provide an international standard swimming pool in Lakshadweep so that the

day would not be far when from Lakshadweep Island we can have boys and girls bagging gold medals for India. The only request that I would like to make to the Government is to provide swimming infrastructure for swimming enthusiasts in Lakshadweep.

(1550/RU/MK)

Lakshadweep got its first chance to participate in Santosh Trophy in the 72nd game. Can you imagine as to how many long years it had to travel to at least represent Lakshadweep as a team at the national level? I am not blaming the previous Governments. But I am still closely associated with the Association. We took the officials of the All India Football Federation to Kavaratti and showed the skills of our boys playing in the island and the muscular power of our boys who are very nutritious. But what is lacking is the techniques and skills. I am not talking only about Lakshadweep. Everywhere in India, we need technical experts to train our youths so that they can be taken forward in a right way to yield good results for our own nation.

The same is the case with cricket. What is happening in the case of cricket? We have very good players in cricket but we do not have a place to showcase ourselves. We have been trying to get an affiliation of Lakshadweep Cricket Association with the BCCI but it is not happening. That is why, the calibre of our boys, who are very enthusiastic, is coming down. I can name a boy who always comes to me crying to get it registered with the BCCI but it is not happening. We are in a way doing injustice to them. So, I request the hon. Minister to come out with a solution for such Associations situated in remote places where the real calibre exists. India has the real calibre in remote places. Such areas should be focussed upon like how the former Minister mentioned about mobile apps and other things. At least you may give an opportunity to affiliate these Associations at the national level so that rural India can be represented properly.

Secondly, let me come to reservation in the job sector. Lakshadweep is one place where even now there is no reservation in the job sector. For persons who are playing at the national level or the State level, there is no representation in the Government. There is no reservation or rules in the Government that the national level athletes will be given special consideration in the Government job sector. This has to be noted down. I think,

Lakshadweep must be the only area where recruitment rules are not applicable for Government employment as far as sports sector is concerned.

Let me now come to strengthening of the Associations. In Lakshadweep, we have Football Association, Athletic Association, Volley Ball Association, Swimming Association and other Associations but they are not even given grant-in-aid from the Administration to engage technical coaches to train the enthusiasts and nurture the talent found in them. It is difficult to train them with the existing funds which are insufficient. When you allocate funds to Union Territories, you must focus in such a way that they are properly utilised so that the Associations can expand themselves in a better way.

Lastly, I would reiterate that Lakshadweep is an area where you need to concentrate on many aspects. This Government has done many things for Lakshadweep for the last five years. The Sports Authority of India has opened a Special Area Games Centre in my own native island. I am very thankful for it. The Lakshadweep Administration is coming up with a full-fledged stadium. For all these things, we need more funds for developing them to the international level.

I urge the hon. Minister to support us with more funds. With these words, I conclude my speech.

(ends)

1554 बजे

श्री मनोज तिवारी (उत्तर पूर्व दिल्ली): सभापति महोदया, आपने आज हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का मौका दिया है, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं एक खेल शिक्षक हूं। मैंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.पी.एड, एम.पी.एड किया है। बाद में गायक बन गया क्योंकि नौकरी नहीं मिली। यह भी हमने झेला है। मुझे बहुत खुशी है कि हमारे खेल मंत्री श्री किरेन रिजीजू बैठे हुए हैं। वे भी एक अच्छे स्पोर्ट्स पर्सन हैं।

(1555/YSH/NKL)

वे अच्छा फुटबॉल खेलते हैं और बहुत ही स्वस्थ हैं। उनके खेल मंत्रित्व में देश का भविष्य अच्छा है। हमारे साथी राज्यवर्धन राठौड़ जी, जो पहले खेल मंत्री रहे हैं, उन्होंने अपने समय में बहुत ही रिमार्केबल काम किया है। उनको सुनने के बाद हमारा सब्जेक्ट बहुत छोटा हो जाता है, लेकिन हमें यह कहते हुए खुशी होती है कि जब स्पोर्टस एण्ड यूथ की बात होती है, तो हमें सहज ही समझ में आ जाता है कि ये दोनों एक दूसरे से अनायास ही संबंधित हैं। जो यूथ होगा वह ज्यादातर स्पोर्टस में भाग लेगा। चर्चा आगे बढ़ रही है तो हम यह भी बताना चाहेंगे कि यह आर्थिक आकर्षण का भी बहुत बड़ा साधन है। जैसे पहले लोग कहते थे कि पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे तो होंगे खराब, लेकिन आजकल जब कोई धोनी को देखता है। अभी-अभी जो विम्बलडन जीता, उनको देखता है कि एक टूर्नामेंट जीतने से उसको 23-23 करोड़ रुपये मिलते हैं, तो सबको लगता है कि यह बहुत बड़ा आकर्षण है। टी.वी. पर भी मैच आते हैं तो मैं समझता हूं कि इससे कितना बड़ा आर्थिक व्यवसाय भी जुड़ा हुआ है।

सभापति महोदया, मैं जिस गांव का हूं, वहां पर फुटबॉल एक बार खरीदते थे तो छ: महीने सिलवा-सिलवाकर खेलते थे। ब्लेडर फट जाता था तो पंक्चर सही कराने जाते थे और उसके लिए भी मिन्नत करते थे, क्योंकि उस समय पैसा नहीं होता था। इस देश में खेलो इंडिया के तहत आज स्थिति यह है कि किसी गांव में अगर कोई खेल से संबंधित, खासकर के जो फुटबॉल और बॉलीबाल ऐसा गेम है, जो हर गांव का आकर्षण बना हुआ है, तो उस पर हमारे कुछ सुझाव भी हैं, जिन्हें आज मैं मंत्री जी को दूंगा। जब वह दिन याद आते हैं तो मैं डर जाता हूं, क्योंकि अभी कुछ साथियों को सुन रहा था। वे लोग अभी भी कोसते हैं, जबकि पांच साल, दस साल तक शासन चलाया हैं। मुख्य मंत्री रहते हुए अगर वे अपनी स्टेट को खुशियां नहीं दे पाए तो मैं समझता हूं कि आज इस बैंच को कोसने की उनकी कहीं से भी योग्यता नहीं है। नरेन्द्र मोदी जी ने जिस प्रकार से खेल के क्षेत्र में भी लोगों को सम्मान देना शुरू किया है, शुरू में बृजभूषण शरण जी ने बोला था, खिलाड़ी जीतकर आते है तो सम्मान करना, जाते हुए सम्मान करना तो खिलाड़ियों का इतना सम्मान हो रहा है और दूसरी तरफ यहां दिल्ली में ऐसे-ऐसे लोग भी हैं कि जैसे एक दिव्या नाम की स्पोर्टस पर्सन, जब एशियाड से पदक जीतकर आई और जब उसको एक जगह बुलाया गया तो वह वहीं पर मुख्य मंत्री जी को कोसने लगी कि जब मेरी जरूरत थी तब तो आपने सहायता नहीं की और आज जब मैं पदक लेकर आई हूं तो आप मेरी तारीफ करने आ गए। मैं उन मुख्य मंत्री जी का नाम नहीं लेना चाहता हूं। मुझे लगता है कि उनका खेल से कभी पाला नहीं पड़ा नहीं तो वे भी एक

स्वस्थ व्यक्ति होते। मैं यह भी मानता हूं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। खेल के मार्फत जो एक दूसरे से घनिष्ठता होती है वह भी एक बड़ा साधन है, जिससे खेल को मोदी जी इतना बढ़ावा दे रहे हैं। एक समस्या की तरफ मैं मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हम बिहार और उत्तरप्रदेश के रहने वाले हैं और दिल्ली में भी दुर्दशा देख रहे हैं। जब हम देखते हैं कि धनबाद, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, गोरखपुर और उससे आगे सीतामढ़ी करीब 600-700 किलोमीटर के दायरे में एक भी स्टेडियम नहीं है, जहां पर रात को खेल हो सके। मैं मंत्री जी को यह बताना चाहता हूं चूंकि खिलाड़ी होने के नाते हमने इसकी कमी महसूस की है, तो इस पर जरूर ध्यान दिया जाए और एक से ज्यादा स्टेडियम वहां बन जाए तो बहुत अच्छा रहेगा। इलाहबाद में और भदोही में भी जहां पूरी दुनिया कालीन लेने आती है, लेकिन वहां कोई खेलने का साधन नहीं है, तो हम माननीय खेल मंत्री जी को और वित्त मंत्री जी को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने कितना बजट बढ़ा दिया है, यह देखकर के हम लोगों को बहुत खुशी होती है।

(1600/RPS/KKD)

मुझे खुशी होती है, अभी राज्यवर्धन जी बोल रहे थ, नेशनल स्पोर्ट्स एजुकेशन बोर्ड बन गया। अभी कुछ दिन पहले मणिपुर में नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी का शुभारम्भ हुआ, उसके इसी सदन में हम लोगों ने मोदी सरकार की बड़ी तारीफ की थी। मैं समझता हूं कि स्पोर्ट्स और युवा मामले, दोनों मिले हुए हैं, विदेशों में युवाओं को रोजगार मिले, उसके लिए जो भाषा प्रशिक्षण का विशेष प्रावधान इस बजट में दिया गया है, उसके लिए मैं वित्त मंत्री जी की तारीफ करना चाहता हूं, उनको साधुवाद देना चाहता हूं।

सभापति मैडम, स्टार्ट अप के बारे में हम सभी को पता है कि अभी तक उस पर तीन साल तक इनकम टैक्स नहीं लगता था। हमारे देश के युवाओं के लिए मोदी जी ने बहुत सुंदर कार्यक्रम शुरू किया। अब इस साल जो एंजेल टैक्स खत्म कर दिया गया है, उसके लिए मैं वित्त मंत्री जी का और खेल एवं युवक कार्यक्रम मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। आजकल मैं स्वामी विवेकानन्द जी को पढ़ रहा हूं। आजकल मैं एक किताब पढ़ रहा हूं – एसेंशियल विवेकानन्दा, जो मुकुल कानितकर एवं अनूप ए.जे. द्वारा लिखी हुई है। इस पुस्तक में एक बहुत अच्छी लाइन मुझे पढ़ने को मिली। मैं अंग्रेजी में थोड़ा कमजोर हूं, लेकिन पढ़ूंगा और समझने वाले समझ जाएंगे। स्वामी विवेकानन्द जी ने लिखा है:

> "We speak of many things parrot-like but never do them; speaking and not doing has become a habit with us. What is the cause of that? Physical weakness."

स्वामी विवेकानन्द जी ने तब कहा कि फिजिकल वीकनेस के कारण ऐसा हो रहा है। उन्होंने एक बहुत ही महत्वपूर्ण लाइन लिखी है कि उनके पास कोई दुबला-पतला व्यक्ति आया, जो सन्यासी बनना चाहता था। स्वामी जी ने उसे कहा कि तुम इतने दुबले-पतले हो, पहले जाकर तुम फुटबाल खेलो। स्वामी विवेकानन्द जी ने जब ये बातें कही हैं, तब भी हमें दिखाई और सुनाई देता

है कि उन्होंने भी किस प्रकार से इसका सपोर्ट किया है। एक-दो चीजें मैं सुझाव के रूप में माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं।

मैडम, मैं जिस लोक सभा क्षेत्र से आता हूं – उत्तर पूर्व दिल्ली, जो दिल्ली का एक हिस्सा है। वहां की सरकार से हम क्या अपेक्षा करें, वह खिलाड़ियों को ही डांटने लगते हैं। जो पदक जीतकर आता है, उसे भी डांटने का मामला सामने आया है। अभी उन्होंने दिव्यांग जनों को भी डांटा। मैं माननीय मंत्री जी से कहूंगा कि ऐसी चीजों का संज्ञान लिया जाना चाहिए। हम किसी पार्टी पॉलिटिक्स में नहीं जा रहे हैं, लेकिन जब स्पोर्ट्स की बात हो और कोई मुख्य मंत्री जीतकर आए हुए दिव्यांग खिलाड़ियों को बुलाकर भी न मिले, तब मैं समझता हूं कि एक बार पूछताछ अवश्य होनी चाहिए। ऐसे दिल्ली प्रदेश में, मेरे लोक सभा क्षेत्र में यदि एक स्टेडियम दे दिया जाए। मेरे लोक सभा क्षेत्र में लगभग 50 लाख लोग हैं, उसके साथ कुछ हिस्सा ईस्ट दिल्ली का भी है, जहां से गौतम गंभीर जी सांसद हैं। उन 50 लाख लोगों के बीच हमारे पास लैण्ड बहुत है। डीडीए के मार्फत हमने इसके लिए रिक्वेस्ट भी की है। मंत्री जी स्टेडियम के बारे में नोट कर लें, हालांकि उन्होंने मुझे कहा भी है कि चिन्ता मत करो।...(व्यवधान) मैडम, बस एक मिनट में कन्क्लूड करूंगा। ...(व्यवधान) सभापति मैडम, आप बहुत अच्छी हैं। मैं इसी के साथ अपने क्षेत्र की बात कहना चाहूंगा। दिल्ली में हम लोगों ने एक अनुभव किया। दिल्ली में 14 जिले हैं और 280 वार्ड्स हैं। पीछे खेल मंत्री जी और खेलो इंडिया के सहयोग से हमने एक बार दिल्ली में क्रिकेट का एक बड़ा टूर्नामेंट कराया। उसमें दिल्ली के 6,800 बच्चों ने भाग लिया। उसके बाद उन्होंने नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद देते हुए जो लाइनें हमसे कहीं, उन लाइनों के साथ मैं आज अपने इस उद्बोधन को समाप्त करूंगा। मैंने उसे कहीं लिखा भी था :

"उर्जित तन, मन प्रफुल्लित और दिलों के मेल कर दे,
सकल जग के संगठन का करिश्मा यह खेल कर दे।"

ऐसे मंत्री जी को धन्यवाद देते हुए, शुभकामनाएं देते हुए कि इस खेल के ऊपर अभी हमारा देश जो रिकॉर्ड बना रहा है, उसके लिए बधाई देते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। धन्यवाद।

(इति)

(1605/RP/RAJ)

1605 hours

SHRI HIBI EDEN (ERNAKULAM): Thank you, Madam. It is a great honour, pride and privilege for me to speak in one of the finest Parliaments in the entire world.

Madam, about 50 per cent of our country's population is below the age of 25 years and 65 per cent of our country's population is below the age of 35 years of age. By 2020, the average age of an Indian would be 29 years; in China, that would be 37 years; and in Japan, that would 40 years. So, India would be the human resource capital for the entire world. We have to channelise this demographic dividend in a proper way. If this demographic dividend would not be utilised in a proper way, it would become a demographic disaster. So, the Ministry of Youth Affairs has to, very specially, take care of it.

1606 hours (Shri P.V. Midhun Reddy *in the Chair*)

There are two ways of looking at this demographic composition. One side of the coin shows sign of despair as the unemployment rate is skyrocketing. There is a widespread despair among the youth as they struggle to achieve their goals and enrich themselves with ample skills. The other side of the coin is symbolic of how the youth symbolises a new beginning which can change the nation.

The youth affairs have connections with many different departments. Education is a key department where a huge transition should happen in HRD. Our youngsters and students should not just confine to the classrooms but the transformation should happen in curriculum as well. Sports should play a major role in this.

I would like to see the youngsters and students of this country on the playgrounds rather than seeing them in churches, mosques and temples. This is a very important aspect to make sure that our demographic dividend is used in an efficient way.

Another major menace would be the usage of drugs amongst the youngsters of this country. The major hassle, which we have, is the NDPS Act. I represent a constituency like Kochi in the State of Kerala, which is fastly transforming into an urban constituency. We can see a 150 per cent of rise in the cases of drug usage. You can imagine the number of cases. There is a

sharp rise in the cases of usage of most modern synthetic drugs. We have to properly deal with it. There should be an amendment in the NDPS Act about the quantity of drugs carried. Sometimes, the quantity is an aspect whereby the culprits, actually, escape from those menaces. The youngsters and the students are being used as innocent carriers in many of the school and college premises.

Madam, sports is not just sports, it is a space whereby youth vulnerability such as violence and drugs can be mitigated. Sports is an outlet through which these adults can win their frustrations of daily struggles. The Ministry ought to ensure that sports facilities and infrastructure is available to all sports. It should provide youth with a platform which can transform into career opportunities. Every child must be able to avail of their services and make use of the opportunities available.

According to the WHO, India is touted to be the most depressed country in the world. The World Health Organisation has a very scientific study on this. These are the things which we have to be very seriously looked upon.

Another major organisation in this country is the Nehru Yuva Kendra which was established in 1972. Being the biggest and longstanding Government sponsored youth agency in the world, the Nehru Yuva Kendra upholds unparallel track records to its credit.

(1610/RCP/IND)

In remote villages, across the country, voluntary youth clubs are the primary agencies helping the citizens in disasters, in accidents, in poverty alleviation, in sanitation, and in culture and sports. Millions of youth clubs are there in the villages promoted by the Nehru Yuva Kendra. My humble request is to increase the fund allocation for the Nehru Yuva Kendra Clubs.

Also, it is quite unfortunate to understand that there is a move to remove the world leader of modern India, Pandit Jawaharlal Nehru's name from the Nehru Yuva Kendra. It would be a very unholy and seditious step – if it happens – taken from the side of the Government. So, I would like to urge upon the Government of India not to take an unholy and seditious step like that.

We have many examples in a State like Kerala. Sports and arts clubs are the souls of our villages. It used to be the cultural hubs in Kerala. That is a way of channelizing youth energy. We have heard of Hima Das. After 75 years of Independence, we have got an international gold medal in athletics. She is from

Gogoi *ji*'s constituency. This young lady athlete got to afford spikes a few years back. So, we have talents from the extremely rural parts of our country. Unfortunately, we are not able to tap them properly. So, there should be a proper channel. As Shri Mohammed Faizal said, from Lakshadweep, from Andaman and Nicobar Islands and from many parts of India, we should be able to tap these resources.

The hon. Minister is from the North East. We know how cricket has already been acclaimed as one of the finest sports in the country, but football plays a major role in our country. But we are not able to take part or we are not competent enough to take part in the World Cup. We know there are many football clubs. There are Spanish clubs; there are European clubs. There is Manchester United; there is Real Madrid. We are all watching football from many parts of the world. But it is quite unfortunate that even though we have a lot of talent in football, but proper opportunities and training are not given at the right time. Right opportunity at the right time is something which is very important.

My State's 'Kerala Blasters' had an excellent performance in ISL. The team was owned by Sachin Tendulkar. In regard to crowd attendance, Kochi holds the fourth position in the entire world. There are so many fans and well-wishers of football. Football is a major sport which the Government of India has to look upon in future. There are many games.

The former Minister of Sports, Col. Rajyavardhan Rathore had mentioned about corporate funding. Corporate funding happens for certain individuals and certain games. Everybody is not privileged or every sport is not so privileged. So, I would request the Government of India to increase funds for certain games as well as to make sure that every panchayat, every municipality and corporation of our country have open playgrounds and stadiums to promote sports.

Thank you, Sir.

(ends)

1614 बजे

श्री सुमेधानन्द सरस्वती (सीकर): सभापति जी, आपने मुझे युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय की अनुदान की मांगों के संदर्भ में बोलने का अवसर दिया, इसके लिए बधाई देना चाहता हूं। सबसे पहले मैं राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू जी, पूर्व खेल मंत्री राज्यवर्धन जी और देश के सम्माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र भाई मोदी जी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करूंगा कि उन्होंने इस महत्वपूर्ण विभाग की ओर विशेष ध्यान दिया है। खास तौर से उन्होंने नेशनल स्पोर्ट्स एजुकेशन बोर्ड (एनएसईबी) के माध्यम से एक नई पहल की है और खेल को एक नई दिशा देने का उन्होंने विचार किया है। मेरे से पूर्व वक्ताओं ने ज्यादातर खेल के संदर्भ में बोला है। मैं युवा कार्यक्रम के संबंध में कुछ बातें कहना चाहूंगा।

(1615/VB/SMN)

इस मंत्रालय में जो युवा कार्यक्रम हैं, उनमें लगभग 14 उपक्रम हैं। उसका एक कारण है। हमारे देश के एक क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल जी की एक घटना बताते हुए मैं अपनी बात कहना चाहूँगा। रामप्रसाद बिस्मिल जी एक ऐसे क्रांतिकारी थे, जिन्होंने हजारों नौज़वानों को प्रेरणा दी। 19 दिसम्बर, 1927 को वे फांसी पर चढ़े। चार नौज़वान- रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाकउल्ला खाँ, रोशन सिंह और राजेन्द्र प्रसाद लाहिड़ी एक साथ फांसी पर चढ़े। जेल में बंद रहते हुए उन्होंने अपनी आत्मकथा पुस्तक लिखी। श्री गेंदालाल दीक्षित, जो उनके गुरु थे, उन्होंने उन तक उस पुस्तक को पहुँचाया। वह पुस्तक प्रकाशित हुई। मेरा सौभाग्य है कि मैंने उस पुस्तक को पढ़ा। उस पुस्तक को पढ़कर मेरे मन में एक भाव आया कि मुझे देश के लिए कुछ काम करना चाहिए। उपसंहार के समय, जब उनको फांसी पर चढ़ना था, उससे एक दिन पहले उस पुस्तक में उन्होंने एक बात लिखी कि मैंने देश की आज़ादी के लिए एक क्रांतिकारी रास्ता अपनाया। उससे मैं संतुष्ट हूँ कि मैं उसके माध्यम से फांसी के फंदे पर चढ़ूँगा। मुझे दो दिन बाद फांसी हो जाएगी। उन्होंने लिखा कि मैं देश के नौज़वानों को एक प्रेरणा देना चाहता हूँ। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि मेरी तरह सभी नौज़वान फांसी के फंदे को चूमे और इस क्रांतिकारी पथ पर चलें। लेकिन, एक काम जरूर करें, वे गाँवों में जाएँ और गाँवों में जाकर गाँवों के गरीब, मजदूर, किसान की संतानों को शिक्षित और संस्कारित करें। एक बात, जो उन्होंने कही, वह बहुत ही महत्वपूर्ण थी कि शिक्षित व्यक्ति का शोषण नहीं होता और संस्कारित व्यक्ति का पतन नहीं होता।

मैं समझता हूँ कि हमारे देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी न केवल देश के युवाओं को खेल के क्षेत्र में बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि उनकी एक पहल है। वह पहले यह है कि देश का युवा शिक्षित और संस्कारित हो। लेकिन मैं एक निवेदन करूँगा, जब कहीं संस्कार की बात आती है, जब शिक्षा नीति में परिवर्तन की बात आती है, तो हमारे साथियों को बड़ी तकलीफ होती है। वे भगवाकरण-भगवाकरण कहते हुए खड़े हो जाते हैं।

मैं आपसे एक बात कहना चाहूँगा कि भारत में जितने भी मत, पंथ और संप्रदाय हैं, उनके संस्थापक और मार्गद्रष्टा लगभग सभी युवा हुए। स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, महाराणा प्रताप, शिवाजी, महाराजा सूरजमल, महारानी लक्ष्मीबाई, सुभाष चन्द्र

बोस, वीर सावरकर, श्यामजी कृष्ण वर्मा, राम प्रसाद बिस्मिल आदि हजारों शहीदों की बात आपको बता सकता हूँ। ऐसा कोई मत, पंथ और संप्रदाय नहीं है, जिनको दिशा देने वाला व्यक्ति युवा न हो। इसलिए नौज़वानों ने देश में न केवल अन्य क्षेत्रों में काम किया है, बल्कि देश को गतिशील भी किया है। आप किसी भी क्षेत्र में जाएंगे, आप एजुकेशन के क्षेत्र में जाएंगे, तो आपको पूरी दुनिया में भारत के साइंटिस्ट मिलेंगे, भारत के डॉक्टर मिलेंगे। अभी से पूर्व एक वक्ता कह रहे थे कि हमारी टीम खेलने गई, तो वहाँ पर भी हमारे खिलाड़ी मिले। यानी वहाँ जो कोचेज थे, वे हमारे देश के थे। आज भारत के युवा विदेशों में जाकर कोचिंग कर रहे हैं, वे साइंस और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। इसलिए युवाओं को संस्कारित करने की आवश्यकता है। यदि युवा संस्कारवान होगा, तो वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चलेगा, गलत पथ पर नहीं चलेगा।

इसलिए जो लगभग 14 उपक्रम दिये गये हैं, उनमें नौज़वानों को शिक्षित करने के साथ-साथ संस्कारित करने की बात भी कही गई है। खेल के क्षेत्र में, भाई राज्यवर्द्धन जी ठीक कह रहे थे कि खेल मात्र एक फिजिकल एक्सरसाइज नहीं है।

एक बहुत बड़े संत स्वामी श्रद्धानन्द जी हुए। मैं कांग्रेस के भाइयों से कहना चाहूँगा कि सन् 1885 में कांग्रेस पार्टी की स्थापना हुई। जब सन् 1920 में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, तो उसमें हिन्दी पर बहुत चर्चा हो रही थी, स्वामी श्रद्धानन्द जी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने 35 साल बाद उस अधिवेशन में हिन्दी में अपना भाषण दिया। वहाँ उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें हिन्दी बोलना सिखाता हूँ। वे सन् 1926 में शहीद हो गये। उन्होंने हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। वे वहाँ नौज़वानों को क्रिकेट खेला रहे थे, इसी सदन में आचार्य नरेन्द्र देव जी सांसद रहे हैं। आचार्य नरेन्द्र देव जी ने उनको एक बात कही, स्वामी जी आप संन्यासी हैं, आर्य समाजी हैं, तो आप यह विदेशी खेल क्यों खेला रहे हैं?

(1620/PC/MMN)

उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात कही थी। उन्होंने कहा कि मैं क्रिकेट इसलिए खिलाता हूं क्योंकि उसमें सामने एक खिलाड़ी होता है और दूसरा खिलाड़ी जब 120-150 की स्पीड पर गेंद फेंकता है तो उस खिलाड़ी को उस समय दो काम एक साथ करने पड़ते हैं। एक तो उसको यह डिसीजन लेना पड़ता है कि उसे गेंद किधर खेलनी है और दूसरा उसमें निर्भयता आती है, उसके अंदर अभय उत्पन्न होता है। भयभीत होने वाला व्यक्ति कभी डिसीजन नहीं ले सकता। इसलिए खेल के मैदान में जब आदमी खेलता है तो उसे डिसीजन लेने होते हैं।

मैं कुशती खेलता रहा हूं। मैं स्कूल में नैशनल लेवल पर खेला था। हमारे समय में कबड्डी के खेल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता नहीं मिली थी। कुशती में भी बिना दिमाग लगाए आदमी खेल ही नहीं सकता कि किस समय कौन सा दांव लगाना है, किस समय कैसे सामने वाले को पटखनी देनी है। बुद्धिमान खिलाड़ी ही कुशती का खेल खेल सकता है। मोटे दिमाग का आदमी कभी कुशती का खेल नहीं खेल सकता। यह मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं। आज कुशती के क्षेत्र में बड़े अच्छे, पढ़े-लिखे नौजवान जा रहे हैं। मैं आपसे यह बात इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि आज युवा किसी भी फील्ड में, किसी भी क्षेत्र में जा रहा है।

आज का युवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल के मैदान में जा रहा है। पिछले दिनों हमारे देश के नौजवानों ने, खास तौर पर हमारी बहनों ने कुशती के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण काम किया है, उन्होंने देश का झंडा ऊंचा किया है। चाहे एथलैटिक्स का क्षेत्र हो, या जिमनास्टिक्स का क्षेत्र हो, उसमें हमारी बहनों ने जो काम किया है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं इसलिए आपसे निवेदन करना चाह रहा हूं कि हमें खेल को और अधिक बढ़ावा देना चाहिए। राज्यवर्धन जी कह रहे थे कि कई बार जब देशों के बीच में खटास आ जाती है तो हम खेलों के माध्यम से आपस में नज़दीक आते हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी ने 'खेलो इंडिया' प्रोग्राम देश को दिया है। मैं इसे दूसरे अर्थ में लेता हूं। 'खेलो इंडिया' का मतलब केवल बच्चों को खिलाना नहीं है, केवल युवा को खिलाना नहीं है। आपने कहा 'खेलो इंडिया', जब 80 साल का आदमी खेलेगा, 60 साल का आदमी खेलेगा, युवा खेलेगा, बच्चा खेलेगा, जब वह खेल के मैदान में जाएगा, तब ही देश स्वस्थ और मज़बूत होगा, तब हमें हॉस्पिटल खोलने की या और किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होगी।

हम कई बार हॉस्पिटल में जाकर अपनी चर्बी कम करवाते हैं। हमें इस प्रकार के ऑपरेशन्स करवाने की क्या आवश्यकता है? हमें वज़न से तंग होने की क्या ज़रूरत है? मोदी जी ने इसीलिए योग का महत्व बताया है। जब आदमी योग करता है तो वह कॉन्सेनट्रेट करता है। मैं लंबे समय तक इस क्षेत्र में काम करता रहा हूं। आदमी जितना मेडिटेशन करेगा, आदमी की जितनी एकाग्रता होगी, हर फील्ड में जो आदमी एकाग्र नहीं होगा, वह गलतियां करेगा, चाहे वह राजनीतिक फील्ड हो या और कोई क्षेत्र हो, जो आदमी मानसिक दृष्टि से विचलित होगा, वह गलतियां करेगा। योग को मोदी जी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया है। आज हमारा युवा गलत रास्ते पर जा रहा है। प्रात:काल उठकर अगर आधे घंटे के लिए नौजवान मेडिटेशन, योगा करेगा तो वह कभी गलत पथ पर नहीं जाएगा, क्योंकि उससे वह आत्मचिंतन करेगा। जब आदमी स्वयं आत्मचिंतन करता है, तब वह आदमी देश को आगे बढ़ाता है।

अत: मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि सरकार ने पर्याप्त मात्रा में बजट दिया है और इस बजट की स्थिति और आगे बढ़ती चली जाएगी। मोदी जी जब भी सोचते हैं, वे यह सोचते हैं कि हर क्षेत्र में हम अपने नौजवानों को आगे बढ़ाएं। मैं अधिक समय नहीं लूंगा। मेरे गुरुजी एक बात कहते थे - 'बोलो कम सुनो अधिक, होंगे लाभ अनेक, जीभ दी है एक हमें और कान दिए हैं दो'। भगवान ने हमें दो कान दिए हैं, लेकिन जीभ एक ही दी है, इसलिए हमें सुनना दोगुना चाहिए लेकिन बोलना कम चाहिए, इसलिए मैं अपनी बात को यहीं विराम देता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

*SHRI DEEPAK (DEV) ADHIKARI (GHATAL) Thank you Chairman Sir, first of all I thank each and every person of my constituency Ghatal who has voted for me once again. I also thank the people who have not voted for me as I know they also love me. I am grateful to Hon. Chief Minister of West Bengal who has reposed faith in me and has given me another chance to come to this august House.

Sir, thanks to you for giving me the opportunity. Speaking on behalf of the youth and for the youth, let me say it is truly the need of the hour. The youth of India today falls within the age group of 15-29, which is 40 per cent of India's total population. The Ministry of Youth Affairs and Sports identifies this group as the most dynamic and vibrant segment of India's population. Yes, the youth is the present of India but it is also the largest stakeholder and shaper of India's future. Unfortunately, the youth is not being provided with the right facilities or environment to try to perform to the best of his abilities. There are multiple problems. The biggest problem of today's youth is unemployment.

(ends)

* Original in Bengali.

(1625/VR/SPS)

Sir, if we look at the NSSO data, India's unemployment rate is 6.1 per cent which is the highest in the last 45 years. सर, मैं कुछ पॉइंट्स पर बात करना चाहता हूं। मेरा फर्स्ट पॉइंट इम्प्लॉयमेंट को लेकर है। We are living at a time when multiple PhD holders are applying for far much lesser jobs, which do not justify their investments or achievements. This is not to draw hierarchy among jobs but to collectively reflect on the lack of choices our youth enjoys in current times.

Educated young people are applying for Government jobs which they are grossly overqualified for. This Government takes every opportunity to reiterate its projects for increasing entrepreneurship with schemes like Stand-Up India and Ease of Doing Business. The question to ask here is, whom are these schemes benefiting? Certainly not the youth of India!

Then, I come to low budgetary allocations to schemes related to Ministry of Youth Affairs. It is the job of the Department of Youth Affairs to help develop creative energies and personality of youth and involve them in various nation-building activities. However, the Department is neither well equipped with budgetary allocation nor human resource to fulfil its mandate. Together, 62 per cent of the Ministry's allocation have gone to *Khelo* India, Sports Authority of India and National Sports Federations; and the schemes of the Department of Youth Affairs are left only with a small share in the budgetary allocations.

The next point which I want to talk about is regarding poor performance of schemes with higher allocations like *Khelo* India. Even the schemes with higher allocations like the Government's flagship *Khelo* India programme have failed to attract young sporting talent. Under the scheme, the Government had planned to identify and train athletes and provide them annual financial assistance. However, out of 1518 under-17 athletes selected by a high-powered committee, only 625, that is less than half, have joined the Government training programmes.

The other point on which I would like to draw the attention of the House is the Government's expenditure on advertisements. The Central Government has spent over Rs.5200 crore in advertisements through electronic, print and social media. The money was spent to advertise the schemes launched by the Government. This is misuse of public money. सर, अगर हम एक फण्ड यूथ के लिए यूज करें तो आज यूथ की स्थिति बेहतर हो सकती है।

Then, Sir, I come to the most important point, which is violation of fundamental rights. This is the most dangerous thing happening in India. The Ministry of Human Resource Development has proposed to connect itself to the social media accounts of over three crore students of different universities and colleges across India. This move is violative of the Right to Privacy as per the 2017 judgement of the Supreme Court which states that Right to Privacy is an inherent part of Article 21 of the Constitution. The Government can use the data accessed from social media posts of students and profile them based on their political and ideological beliefs. This endangers the Young India's Right to Freedom of Expression guaranteed by the Constitution.

Swami ji once said – *Gita Padache Football Khela Bhalo.* अगर मैं हिन्दी बोलूं तो गीता पढ़ने से अच्छा फुटबॉल खेलना चाहिए। यह स्वामी जी ने बहुत पहले कहा था। आज लीग के अंदर ईस्ट बंगाल और मोहन बागान जैसी टीम अपनी जगह ढूंढ रही है। हिमा दास जैसे एथलीट, देश का नाम आगे ले जा चुकें हैं। ऐसी एक हिमा दास नहीं, हमें हजारों हिमा दास चाहिए। आज का यूथ जो अपना फ्यूचर स्पोर्ट्स में देखना चाहते हैं, उनको प्रॉपर ट्रेनिंग, प्रॉपर मेंटेंनेंस, प्रॉपर सिक्योरिटी और प्रॉपर कैरियर देना चाहिए। क्योंकि एक स्पोर्ट्स पर्सनेलिटी का कैरियर बहुत ज्यादा हो तो तीन से चार साल का होता है। आज की तारीख में यूथ जब स्पोर्ट्स में जाते हैं, they think that their career is not secured there because they do not know what are they going to do after three-four years or where are they going to land up? If they are injured, what will they do? What would happen to them? मुझे लगता है कि हमारे स्पोर्ट्स मिनिस्टर को इस बारे में ज्यादा ध्यान देना चाहिए कि यंग इण्डिया को मेंटली प्रमोट करना पड़ेगा।

When you are talking about India, I would like to draw your attention to what is happening in West Bengal. There are a few things which I would like to mention here which have been done by the Government of West Bengal. Bengal leads in Skill Development. *Utkarsh Bangla* scheme has been awarded the United Nations WSIS Prize in Capacity Building and SKOCH Skill Development Award in the 'Gold' category.

(1630/SAN/KDS)

Now, I will talk of employment in West Bengal. Yuvashree Scheme provides financial and job-related assistance to unemployed youth. Two lakh beneficiaries have registered so far. Sixteen IT Parks, Bengal Silicon Valley have provided 1.5 lakh jobs. TCS generated 40,000 jobs; Cognizant generated 20,000 jobs; IBM generated 15,000 jobs; and Wipro generated 10,000 jobs. Bengal reduced unemployment by 40 per cent by providing one crore jobs.

Gatidhara Scheme provides subsidy of one lakh rupees to buy commercial vehicle to make youth self-employed.

Sir, I will take two minutes only. Under-17 FIFA World Cup was organised at the state-of-the-art Vivekananda Yuba Bharati Krirangan in West Bengal. Not only quarter final, semi-final and final along with 11 other football matches were played there. There is a Khelasree Scheme under which two lakh rupees are given to clubs, organisations etc. just to promote sports.

Being a young Member of Parliament, I would request the Government and the Sports Ministers to encourage our young India, the youth to come and participate for the betterment of India.

(ends)

1631 hours

ADV. A.M. ARIFF (ALAPPUZHA): Sir, I thank you for giving me the opportunity. Before entering into the discussion, I support all the creative suggestions given by hon. Members in this august House in support of upliftment of the youth.

In a discussion on youth affairs, how can we escape without discussing the problem of unemployment? So, I am going to draw your attention to the problem of unemployment facing the youth. It is appalling that the discussion on youth affairs and sports today is being done against the backdrop of the unemployment rate that hit a 46-year high in the history of independent India. Beyond the cacophonic rhetoric of start-up missions, Mudra loans, fellowships and skill development, we need to have an insight into the real problems faced by the youth in our country and take corrective measures to resolve the issues.

The Government is maintaining a studied silence on the unemployment rate that stood at 6.1 per cent, the highest since 1972-73. It is also shameful and shocking that the same BJP-led previous Government was not ready to release the data on unemployment. Two non-government members of the National Statistical Commission resigned as a protest against non-publication of NSSO's survey on unemployment and unemployment situation in India for 2017-18. This is not surprising. The Sixth Annual Employment and Unemployment Survey of the Labour and Employment too has been withheld as it reportedly shows the unemployment rate shooting up to 3.9 per cent from 3.7 per cent in 2015-16. I am not going into details due to lack of time.

The educated youth are the most important resource of a country. There is no wonder that the disappointed unemployed youths would be lured by anti-national forces to act against the nation. It has to be noted that unemployment and poverty is the root cause of anti-national activities.

Stable and secured jobs are the dream of every youth in our country, but the rampant privatisation and corporatisation has made this a distant dream. Every public sector is getting privatized, including the Indian Railways, BSNL etc. which are the largest employers in India and the world. Informalisation and casualisation of jobs is on the rise. BSNL itself has casual workers numbering around 1,20,000 all over the country. They were on a nation-wide dharna demanding immediate payment of salaries which have been pending for six months.

The informal economy in India still accounts for more than 80 per cent of non-agricultural employment. The growing level of informal employment in the formal sector is largely due to the growing use of contract labour and outsourcing of production. The jobs in this sector are notorious for low wages, exploitation, unhealthy working conditions and gross violation of labour and human rights.

The need of the moment is to strengthen the sectors and creation of more job opportunities. Instead of leaving it to the multinationals, we need to plan and implement programmes for the modernisation of agriculture and the industrial sectors for self-reliance by using the youth power in our country.

(1635/RBN/MM)

Reservation should be extended to the private sector that uses the public resources. Skill development and upgradation should be given to employees of each industry. Programmes should be there to attract the youths to the traditional sectors through financial support, modernisation and marketing strategies to compete with the multi-national corporates.

The youths should not be used as a tool for communal and terrorist forces. They should be used as a resource for the construction of a modern India. I am disappointed by the fact that there is no sufficient Budgetary allocation for creation of jobs and for the use of youth's resources.

Regarding sports, I would like to say that India's performance is very poor at the international level sports events like Olympics. Even geographically smaller and economically weaker countries are performing better than India. We have programmes aiming to make the athletes perform outstandingly well in the international competitions. But we are not that much successful in the international events with the assistance of the programmes designed by our authorities.

As competitors in the international sports events, we have failed in coordinating sports and sports science together. We have no specific sports policy. Sports and sports science sail in two boats. …(*Interruptions*) No efforts have been made to incorporate sports science in our training programmes as well as in the performance of our athletes. Now, researches show that that most of our youth suffer from many kinds of hypo kinetic diseases. This shows our young generation is in danger. It cannot be solved merely by yoga and other exercises. So, the system has to address this serious issue in a proper way.

Hence, I request you that instead of making rhetoric and hollow promises, take constructive steps to use the youth power in our country and lift the standard of our athletes. Thank you.

(ends)

1637 बजे

श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश (सूरत): सभापति महोदय, भारत की पहली वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा देश की इकोनॉमी को पांच ट्रिलियन डॉलर की ओर ले जाने वाला बजट प्रस्तुत किया गया है, जिसका समर्थन करने के लिए मैं खड़ी हुई हूं। किरेन रिजीजू जी के खेल मंत्रालय की बजट की अनुदानों की मांगों का भी मैं समर्थन करती हूं।

महोदय, मैं पिछले दस साल से सूरत का प्रतिनिधित्व कर रही हूं और मैं ज्यादातर कनेक्टिविटी, इकोनॉमी, डायमंड और टैक्सटाइल के लिए बोली हूं, लेकिन आज स्पोर्ट्स की चर्चा पर बोल रही हूं। यह समय भी ऐसा है कि काफी बच्चे चर्चा को देखने के लिए आते हैं। अध्यक्ष जी ने आज खेलकूद पर चर्चा का समय दिया है और हम लोग खेलकूद को प्राथमिकता दे रहे हैं। यह दर्शाता है कि मेरा देश बदल रहा है। मेरा सूरत भी बदल रहा है और मैं वहां के डायमंड के बारे में भी थोड़ा बताना चाहूंगी।

महोदय, 65 परसेंट युवा आबादी वाले देश में नरेन्द्र भाई मोदी जी ने फिटनेस के प्रति युवाओं में आकर्षण पैदा किया है। मुझे 100 में से 75 परसेंट वोट युवाओं और महिलाओं के मिले हैं। इसलिए मेरा भी फर्ज बनता है कि उनकी बात यहां रखूं। खेल मंत्रालय के बारे में पूर्व मंत्री ने भी बातें बताई हैं और वर्तमान मंत्री श्री किरेन रिजीजू फिज़ीकल फिटनेस के लिए जाने जाते हैं। उनको इंस्टाग्राम पर फॉलो करना अच्छा लगता है। वह सुबह आधा घंटा योग करते हैं, साइकलिंग करते हैं। अरुणाचल प्रदेश में साइकलिंग के लिए सलमान खान जी को भी ले गए थे। जब हमारे अहमदाबाद गए थे तो हमारे स्पोर्ट्स के बच्चों के साथ उन्होंन खाना खाया था। यह बहुत अच्छा जैस्चर उन्होंने दिखाया था। उन्होंने जब से मंत्रालय संभाला है, तब से खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए काफी प्रयत्न कर रहे हैं। पीयूष जी ने अंतरिम बजट में खेलो इंडिया स्कीम के लिए 2002 करोड़ रुपये का आबंटन किया था, जिसको निर्मला जी ने 214 करोड़ रुपये बढ़ाकर 2216 करोड़ रुपये कर दिया है। मैं यह आंकड़े इसलिए बता रही हूं कि पिछले पांच वर्ष में जो भी कार्य किए गए हैं, उनको मंत्री जी हम सभी के साथ मिलकर आगे ले जाएंगे। स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया का बजट 95 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 450 करोड़ रुपये कर दिया गया है। जिससे नेशनल स्पोर्ट्स अथॉरिटी नेशनल कैम्प इक्विपमेंट प्रोवाइड करके दूसरी जरूरतों को पूरा कर सकेगा। खेलो इंडिया नेशनल प्रोग्राम के तहत स्पोर्ट्स के डेवलपमेंट के लिए पचास करोड़ रुपये बढ़ाकर 550 से 601 करोड़ रुपये कर दिया गया है।

(1640/SJN/SM)

यहां जिस एनएसएएफ की बात हो रही थी, वह 2 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 70 करोड़ रुपये कर दिया गया है। स्पोर्ट्स पर्सन के लिए भी इन्सेंटिव फंड 63 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 89 करोड़ रुपये कर दिया गया है। स्पोर्ट्स पर्सन के लिए अवार्ड और एन्करिजमेंट के लिए भी 94 करोड़ रुपये को बढ़ाकर 316 करोड़ रुपये से 411 करोड़ रुपये कर दिया गया है। मैं ये आंकड़े इसलिए बता रही हूं कि अगर उचित समय पर उनको बढ़ावा और प्रोत्साहन मिल जाए, तो उनमें काफी जोश आ जाता है। गत पांच वर्षों में खेल नीति के कारण जब नरेन्द्र मोदी जी ने गुजरात में खेल महाकुंभ शुरू किया था, मैं उसका एक ही उदाहरण अच्छे से दूंगी। मैं जिसकी बात करने वाली हूं, गोल्डन गर्ल सरिता

गायकवाड़, जो डांग जिले के आदिवासी क्षेत्र में रहती है। वह नंगे पांव ट्रैक पर दौड़ती थी, लेकिन उसको खेलो इंडिया के माध्यम से और जब से उसको राज्य सरकार ने भी प्रोत्साहन दिया है, तो यह आदिवासी क्षेत्र की सरिता ने यूरोप एथलेटिक मीट में 400 मीटर रन में गोल्ड मेडल हासिल किया है। वीर नमर्द साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी ने भी उनको अपना ब्रांड एम्बेसडर बना दिया है। उसके बाद उसने 7 जुलाई, 2019 को एशियन गेम्स में फिर से गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। यह जो डिफरेंट हुआ है, उसके कारण उनका उत्साह भी बहुत बढ़ा है।

इसी तरह से हरमित देसाई ने वर्ष 2018 में आस्ट्रेलियन कॉमनवेल्थ गेम्स में टेबल टेनिस में गोल्ड मेडल हासिल किया है। वैसे तो सूरत इकोनॉमी शहर है, वहां पर सब बिजनेस की बात करते हैं। लेकिन स्पोर्ट्स के लिए जो जागरुकता बढ़ी है, मैं उसके साथ एक और बात जोड़ना चाहूंगी कि सरकार के जो भी कार्यक्रम हैं, ये लोग उसमें भी अपने आपको जोड़ लेते हैं। जैसे दक्षिण एशिया में ट्राइथलोन्स में पूजा चौरुषी ने अपना नाम करके बहुत सारे मेडल लिए हैं। वह हमारी ब्रांड एम्बेसडर बन गई है और वह खेल के साथ में सफाई का भी काम करती है।

महोदय, मैं केवल दो ही बातें रखना चाहूंगी। अभी एवरेस्ट सैर करने के लिए हमारी दो बहने अदिती और अनुजा वैद्य जब हिमालय पर गई थीं, तो उनको भी इन्करेज करने के लिए राज्य सरकार ने बहुत सपोर्ट किया था। इसके साथ ही साथ अजीता इटालिया ने स्पीती वेली पर बाइकिंग की और कई महिलाएं गुजरात से निकलकर दिल्ली आई थीं और पूरे संसार भर में घूम रही हैं। उसके साथ में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ को भी जोड़ लेती हैं। उससे एक अच्छा संदेश भी जाता है। हमारे यहां से दिव्यांग ओलंपिक में भी बच्चे भाग लेते हैं। सूरत में एक इंडोर स्टेडियम है, जहां ब्रजभूषण जी भी गए थे, जहां पर ओलंपिक लेवल की कुश्ती का आयोजन होता है, जिसमें महिला कुश्ती होती है। उसके साथ-साथ में वेट लिफ्टिंग भी होता है।

अतः मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से आग्रह करना चाहती हूं, क्योंकि सूरत एक बड़ा शहर है, वहां 60 लाख की आबादी है, वहां खेल-कूद के लिए ज्यादा मैदान नहीं है। इसलिए, इंडोर गेम्स को बढ़ावा देने के लिए एक स्पोर्ट्स सेंटर भी मिल जाए, क्योंकि मणिपुर के बाद जिस यूनिवर्सिटी की बात कर रहे थे, हमें वडोदरा (गुजरात) में एक यूनिवर्सिटी भी मिली है। एक यूनिवर्सिटी तो गुजरात को मिल गई है, लेकिन एक स्पोर्ट सेंटर जो चार आदिवासी क्षेत्रों को कवर करता है, जैसे डांग, नौसारी, भरूच, सूरत और आदिवासी क्षेत्रों से जो बच्चे वहां पर आना चाहते हैं, इसके लिए मेरी आपसे विनती है। मैं खेल मंत्री जी को एक बार सूरत आने के लिए भी आमंत्रित करती हूं। सरकार ने जिस तरीके से 'कैच देम इन यंग' खिलाड़ियों को शुरुआत से ही प्रोत्साहित करके उनको आगे ले जाने के लिए जो नीतियां बनाई हैं, उन्हीं नीतियों को आगे ले जाना है। मैं समझती हूं कि अभी 2020 में ओलंपिक आने वाला है, उसमें बहुत सारी प्रतिभाएं मेडल जीतकर भारत का नाम रोशन करेंगी।

(इति)

HON. CHAIRPERSON (SHRI P.V. MIDHUN REDDY): Hon. members, due to paucity of time, please be precise. I think we are running short of time.

1644 hours

SHRI P.K. KUNHALIKUTTY (MALAPPURAM): Sir, I have only two-three points to make. Today, we are discussing the Demand for Grants of the Ministry of Sports and Youth Affairs. The young generation is very important for a country, which is considered to be the major resource of that country. In fact, very resourceful and developed countries in the world face a huge problem due to lack of young generation. They have all the resources; they have all the potentialities, education, developed infrastructure and other things. But they do have the people to enjoy and handle all these things. The aging problem is there in many developed countries like Europe, Japan and many other countries.

(1645/AK/GG)

What is the position with regard to our country? It is one of the youngest countries in the world. Now, 50 per cent of the population is below 25 years of age, and 65 per cent of the population is below 35 years of age. By 2020, the average age of an Indian would be 29 years, which means that we will be the youngest nation in the world.

Are we giving enough opportunities to them in whatever may be the aspect? This is the question to be asked. Are our policies good enough? In my view, the then UPA Government -- and I am not saying it politically -- had some vision about this aspect, and at the time of Dr. Manmohan Singh, there were many policies that helped in increasing the employment rate as one of the major factors is employment rate. I do not know the reason or I do not know the correct position or what is wrong with your policies, but the unemployment rate has gone up during the last five years. It is at an all-time record level.

Many of the Members have said here that the unemployment rate has gone up to the highest level in 45 years. Is the Government serious about it? In this House itself there are times when it is said very seriously, but I have not seen any sign of the Government approaching the matter very seriously as the rate is only going up. I think that it has reached the level of more than six per cent now whereas in China, which is a very populated country, the unemployment rate is coming down and it is at 3.5 per cent now. They are finding opportunities for their younger generation inside their nation as well as outside their nation. Their Government is taking initiatives to acquire contracts in many

countries like Africa as there are many opportunities in the African countries. The Chinese Government has taken initiatives of forming SPVs; they go abroad; and they acquire major contracts in the African countries. I think that most of the major contracts and employment opportunities in the African nations are acquired by the Chinese companies that are initiated by the Chinese Government. India is not at all present there, and our unemployment rate is going up.

Why do we not probe the possibility of seeking opportunities abroad like in the Gulf countries? India was getting opportunities in the Gulf countries. Hence, so many people got opportunities there in the last decade. If we take the example of Kerala, then there is huge NRI remittance from there. Likewise, I do not think that this Government has many youth-friendly policies. The last UPA Government had the National Youth Policy, but I do not know what policy you have brought in its place. The Nehru Yuva Kendra was such a big initiative, but I have not noticed any such initiative in your programmes during the last five years.

HON. CHAIRPERSON (SHRI P.V. MIDHUN REDDY): Please conclude now.

SHRI P.K. KUNHALIKUTTY (MALAPPURAM): The National Institute of Youth Development and so many such schemes were there. I do not think that you have formulated such visionary programmes like those.

As regards giving opportunities for the younger generation, you should encourage start-ups as start-ups give support to good ideas of the younger generation so that they themselves can build their enterprise. There is no such major initiative for that from your side. Hence, it has come down. There was a lot of talk about it, but you have not even reached many places in many of the States.

HON. CHAIRPERSON (SHRI P.V. MIDHUN REDDY): Please conclude now.

SHRI P.K. KUNHALIKUTTY (MALAPPURAM): In my State, I was in-charge of the Ministry in Kerala where I took the initiative first to have ‘start-up village’. As a result, some of the enterprises have grown to multi-national levels now. Why do not you take things a little more seriously?

(1650/SPR/KN)

This is the time that you are thinking about the New Education Policy. There should be a place for skill development in your policy. Then only, to a certain extent, you will be able to give employment to the younger generation and arrest the unemployment in the country.

(ends)

1650 बजे

श्री सैयद इम्तियाज़ जलील (औरंगाबाद): अध्यक्ष महोदय, बचपन में हमें एक बात बताई गई थी कि 'पढ़ेंगे लिखेंगे तो बनेंगे नवाब, खेलेंगे कूदेंगे तो बनेंगे खराब'। हम चाहते हैं कि आप कुछ ऐसी नीति बनाए कि माँ-बाप को ऐसा कहना चाहिए कि 'पढ़ेंगे लिखेंगे तो बनेंगे नवाब, खेलेंगे कूदेंगे तो बनेंगे नवाबों के नवाब।' इस तरह की नीति बनानी चाहिए। पूरी दुनिया के अंदर अगर कोई ऐसा देश है, जहाँ पर खेल और खिलाड़ियों का बहुत पोटेंशियल है तो वह मेरा भारत देश है। लेकिन हकीकत यह है कि कहीं न कहीं हम जब बाहर जाते हैं तो पता नहीं क्या हो जाता है कि हम लोग इतने कमजोर हो जाते हैं। जो उम्मीदें हम खिलाड़ियों से लगाते हैं, वह कहीं न कहीं पूरी नहीं होती हैं और जब वह पूरी नहीं होती हैं तो पूरा देश उसके लिए अफसोस मनाता है। इससे एक बात का तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि कहीं न कहीं कुछ गलतियाँ हो रही हैं।

मंत्री साहब, मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहूँगा कि कुछ कड़े फैसले लेने की ज़रूरत है। हम नेताओं की आदत है कि हम खेल में भी घुसना चाहते हैं। आज आपको यह फैसला करना होगा कि जितने भी एकेडमीज हैं या जितने भी स्पोर्ट्स से रिलेटिड फेडरेशन्स हैं या एसोसियेशन्स हैं, इसमें होता यह है कि उस नेता का खेल से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन एसोसियेशन के अध्यक्ष बने बैठे हैं। उस फेडरेशन के अध्यक्ष बने बैठे हैं। आप एक कानून ऐसा बनाइये, ठीक है, आप एम.पी. को बनाइये, एम.एल.ए. को बनाइये। लेकिन कम से कम स्टेट लेवल के ऊपर नेताजी ने कुछ न कुछ खेल खेला हुआ हो, तब जाकर उनको फेडरेशन का अध्यक्ष बनाइये। अभी आप राज्यवर्धन राठौर साहब को देख रहे हैं। अगर एक खिलाड़ी नेता बनना चाहे तो उन्हें वह *… (Not recorded)* उतारना है और दूसरे ही दिन वह नेता बन सकता है। लेकिन अगर आप किसी नेता को कहेंगे कि अब आपको राज्यवर्धन बनना है तो वह नहीं बन पाएगा, क्योंकि बहुत मेहनत और मशक्कत लगती है। हमारे सांसद साहब बैठे हैं, ये कुश्ती में माहिर हैं, ये कुश्ती खेलते हैं। अगर इन्हें राजनीति के अखाड़े में आना है तो कुश्ती का अखाड़ा छोड़ना बहुत आसान बात है। अगर आप किसी सांसद से कहेंगे कि कल आपको इनके अखाड़े में जाकर इन्हें चित करना है तो मुमकिन ही नहीं होगा। हमें कहीं न कहीं ऐसे फैसले लेने होंगे कि इन एसोसियेशन्स के अंदर ऐसे लोगों को लाइये, जो खेल से ताल्लुक रखते हैं, तब जाकर मेरे हिसाब से खेल का स्तर बढ़ेगा। नेता लोग नाराज होंगे, जो एसोसियेशन्स से ताल्लुक रखते हैं। लेकिन यह हकीकत की बात है कि आप कोई तो क्षेत्र छोड़िए। खिलाड़ियों को खेल के अंदर जाने दीजिए तब खेल का स्तर बढ़ेगा। अगर हम वहाँ पर भी उंगलियाँ करना शुरू कर देंगे, वहाँ पर भी जाना शुरू कर देंगे तो कहीं न कहीं मेरे हिसाब से हम खेल के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह कहना चाहूँगा कि मंत्री जी आपने एक स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी औरंगाबाद को दी है। महाराष्ट्र के अंदर लैंड आइडेंटिफाई कर चुके हैं। अब हमारा यह कहना है कि अगर आप उसे बजट दे देते हैं तो जब तक अगले पाँच साल तक आपका मंत्री पद है, वह स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी तैयार हो जाएगी। उस स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के अंदर सिलेबस क्या होगा, कोर्सेस क्या होंगे, इसके लिए इंटरनेशनल लेवल के ऊपर बुदापेस्ट, कैनबरा है, यह वे शहर हैं, जहाँ पर फिजिकल यूनिवर्सिटीज है। हम इनके साथ टाई-अप करें।

अध्यक्ष महोदय, एक आखिरी मुद्दा है। मैं जिस शहर औरंगाबाद से आता हूँ, वहाँ दीवानगी की तरह फुटबॉल खेला जाता है। कोई इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं है, लेकिन गली-कूचों के अंदर जहाँ छोटे मैदान हैं, वहाँ पर आपको खिलाड़ी खेलते हुए नज़र आएँगे। अगर हम उन बच्चों को टेप करें तो उन गली-मोहल्लों में से न जाने कितने हीरे ऐसे तराश कर सकते हैं। उन्हीं हीरों को हम अच्छी तरह से डेवलप करें तो यही हीरे कल के दिन जाकर हम ओलम्पिक में भेज सकते हैं। यह ज़रूरी नहीं है कि आपको बड़े-बड़े शहरों के अंदर स्पोर्ट्स के लिए जाना पड़ेगा। छोटे-छोटे शहरों के अंदर, ग्राउंड्स के ऊपर देखना पड़ेगा।...(व्यवधान)

(इति)

1654 बजे

श्री सौमित्र खान (बिशनुपुर): अध्क्ष महोदय, 'खेलेगा भारत तो खिलेगा भारत'। यह जो वचन हमने सुना है, यह हमारे प्राइम मिनिस्टर नरेन्द्र मोदी जी का वचन है।

1654 बजे (श्री ए. राजा पीठासीन हुए)

आज मुझे इस बिल पर बोलने के लिए परमिशन दी है, उसके लिए मैं चेयरपर्सन को धन्यवाद देना चाहता हूँ, पार्टी को धन्यवाद देना चाहता हूँ। आज 2000 करोड़ रुपये से ज़्यादा स्पोर्ट्स के लिए पैसा दिया गया है। खेलो इंडिया क्या है, आज तीन जगह पर चर्चा होती है।

(1655/CS/UB)

एक राजनीति है, दूसरा खेल है और तीसरा अभिनय है। इन तीनों क्षेत्रों में बहुत जल्द परिचय मिलता है, लोकप्रियता मिलती है। इनमें भी सबसे अच्छा क्षेत्र खेल का है, क्योंकि एक खिलाड़ी को हर कोई प्यार करता है। हम सभी लोग प्लेयर को प्यार करते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि जो नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बिल पास हुआ है, उसके लिए मैं माननीय मंत्री श्री किरेन रिजीजू जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। आज माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी "मेक इन इंडिया" चाहते हैं। यह शब्द सिर्फ तीन शब्दों का है, लेकिन इसके ऊपर बहुत सारी बातें हैं।

*Today we can see that in West Bengal, we can progress if the quality of sports improves. A young man can be healthy, in body and mind if we focus on sports: Thus my point is that the passing of Sports University Bill is not enough. We want that, through this Bill, a Sports University should be set up in our state of West Bengal. In Bengal, when aids are doled out to the clubs, cut money or commission is sought. This is very shameful. Our Hon. Minister of Sports and respected Prime Minister Narendra Modi ji have been making great efforts for National Sports and Adventure. There are MPs and MLAs who work for the welfare of the state. But unfortunately, when athletes come to us for help, we are never able to help them as the MPLADS cannot be utilized to assist them.

आप हमारी कुछ मदद करो, लेकिन हम सांसद होकर भी उनकी कोई मदद नहीं कर पाते हैं, क्योंकि हमारी जो सांसद निधि होती है, हम उससे उन्हें कुछ भी पैसा नहीं दे पाते हैं। मैंने अपने बिशनुपुर लोक सभा क्षेत्र में एक मैराथन आयोजित की थी। पंजाब से भी एक स्पोर्ट्समैन उसमें भाग लेने आया था, उसे उसमें प्रथम स्थान मिला था और उसे 1 लाख रुपये का प्राइज मिला था। मेरे क्षेत्र का कोई भी युवा नेशनल एथलेटिक्स में खेलने के लिए जाता है, वे अपने क्षेत्र के सांसद के पास

* Origional in Bangali

आते हैं और उनसे कहते हैं कि मेरे पास वहाँ जाने के लिए ट्रेन का किराया नहीं है, मेरे पास जूते नहीं हैं, लेकिन हम लोग उनकी व्यथा सुनने के बाद भी कुछ नहीं कर पाते हैं। मेरा कहना है कि हमारी सांसद निधि 5 करोड़ रुपये है। उस सांसद निधि में से कम से कम 10 लाख रुपये की एक ऐसी व्यवस्था कीजिए, जो हम नेशनल एथलेटिक्स गेम्स में खेलने जाने वाले खिलाड़ियों को दे सकें। आप इसका बंदोबस्त कीजिए। मंत्री जी, मेरी आपसे यह प्रार्थना है। जो खिलाड़ी नेशनल गेम्स में खेलने के लिए जाते हैं, जैसे मैरीकॉम, हिमा दास को मिला है। हम लोग डायरेक्ट उनको एक पत्र लिख देंगे, वे डी.एम. से कलेक्ट कर लेंगे, कलेक्टर से कलेक्ट कर लेंगे। यह सभी खिलाड़ियों के लिए अच्छा होगा। यह हम लोगों, सांसद के लिए भी अच्छा है। मेरी एक कीमती माँग है। मेरे बिशनुपुर में बहुत सारे खेल खेले जाते हैं। मुझे बिशनुपुर स्टेडियम चाहिए। वहाँ जो स्टेडियम है, वह बहुत छोटा है। हमें वहाँ भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) का ट्रेनिंग सेंटर चाहिए। मेरी मंत्री जी से रिक्वेस्ट है कि मेरे बिशनुपुर स्टेडियम में (SAI) का ट्रेनिंग सेंटर चालू हो जाए, तो बहुत अच्छा होगा। जितने भी माननीय सांसद हैं, सभी के क्षेत्रों में भारतीय खेल प्राधिकरण का एक कैम्प हो जाए, तो यह बहुत अच्छा रहेगा। हमें युवाओं को आगे बढ़ाने के बारे में सोचना है। हम लोग उनके पास केवल वोट के लिए जाते हैं। हम लोग सिर्फ यह कैलकुलेशन करते हैं कि हमारे क्षेत्र में 14 परसेंट, 16 परसेंट युवा हैं, हमें इनका वोट चाहिए। मैं एक माँग और करूँगा कि जो भी सांसद निधि या विधायक निधि हमें मिलती है, हम 5 लाख या 10 लाख रुपये के लिए डायरेक्ट अपने लेटरहेड पर कलेक्टर को लिखेंगे और वह पैसा कलेक्टर के वहाँ से उन्हें मिल जाए। इससे 20-30 हजार रुपये की प्रत्येक खिलाड़ी को मदद हो सकती है। यह मेरी माँग है। मैं युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के नियंत्रणाधीन अनुदानों की मांगों का समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

(इति)

(1700/RV/KMR)

1700 बजे

श्री हनुमान बैनिवाल (नागौर): सभापति महोदय, आपने मुझे युवा मामले और खेल मंत्रालय की अनुदान मांगों से जुड़ी चर्चा पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपको धन्यवाद। आज आप मुझ पर थोड़ी कृपा बनाए रखें।

सभापति महोदय, आज यहां युवा मामले और खेल मंत्रालय की अनुदान मांगों पर चर्चा हो रही है। इस चर्चा में मेरे से पूर्व वक्ताओं ने अपनी बात को जोरदार ढंग से रखा। पक्ष-विपक्ष की तरफ से भी कई सुझाव आए। निश्चित रूप से भारत जिस तरह से आगे बढ़ रहा है, उसमें खेलों के अन्दर भारत को और आगे बढ़ने की आवश्यकता है। हमारी जितनी आबादी है, उस आबादी के हिसाब से आज हमारे खिलाड़ियों को गोल्ड मेडल्स नहीं मिल पाते हैं। इसलिए खेल नीति में बदलाव की आवश्यकता है।

ध्यानचन्द 'हॉकी के जादूगर' के रूप में जाने जाते थे। कबड्डी, हॉकी ऐसे खेल हैं, जिनका एक प्रकार से जन्मदाता भारत को माना जाता है। हिन्दुस्तान के अन्दर जितनी भी क्रांति हुई, वर्ष 1857 की जो क्रांति हुई, उस क्रांति का हीरो तात्या टोपे थे और आज़ादी की लड़ाई के अन्तिम क्षण पर जब वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन हुआ, उसके बाद भारत में युवाओं के अन्दर जिसे लेकर सबसे ज्यादा करेन्ट था, वह शहीद भगत सिंह थे। वे किसान के बेटे थे। देश को आज़ाद कराने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आज हमारे कई युवा साइंटिस्ट्स हैं। आप अमेरिका और दूसरे देशों में जाकर देखें। मैं इस बात की बधाई दूंगा कि इस संसद के अन्दर इस बार सबसे ज्यादा युवा सांसद जीत कर आए हैं। यह भी प्रधान मंत्री मोदी जी का ही करिश्मा है कि उन्होंने युवाओं को, हमारी जो अन्तिम और सबसे बड़ी पंचायत है, उसके अन्दर आने का मौका दिया और हमेशा युवाओं का सपोर्ट किया। मैं प्रधान मंत्री जी को इस बात के लिए भी धन्यवाद दूंगा कि खेलों को लोकप्रिय बनाने और खिलाड़ियों के विकास के लिए राष्ट्रीय खेल शिक्षा बोर्ड का गठन 'खेलो इंडिया' योजना के तहत करने की घोषणा इस बजट में वित्त मंत्री जी ने की है।

महोदय, आज हिन्दुस्तान में युवाओं की सबसे बड़ी आबादी है और सबसे ज्यादा अगर विश्व शक्ति के रूप में कोई उभरेगा तो वह भारत होगा। मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद दूंगा कि राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत होने वाली भावना इस देश के प्रत्येक युवा के अन्दर जगी है। आने वाले समय में हिन्दुस्तान विश्व का नेतृत्व करेगा, ऐसा नजर आ रहा है। आज युवा जिस तरीके से आगे चल रहे हैं, आज हर फील्ड में, चाहे चन्द्रमा पर जाना हो या कोई और काम हो, आज हिन्दुस्तान के युवा आगे हैं।

महोदय, हमारी तो बेटियां भी बेटों से आगे निकल गईं हैं और मुझे इस बात की खुशी है। जिस बिरादरी से मैं आता हूं, वह पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब के हिस्सों में है, लेकिन सबसे ज्यादा पदक मेरी बिरादरी के बेटे-बेटियां जीत रहे हैं और देश का गौरव बढ़ा रहे हैं। देश की सीमाओं की रक्षा में वे सबसे ज्यादा शहादत भी देते हैं।

सभापति महोदय, हमारे मंत्री जी भी बहुत युवा हैं। वे 47 साल के हैं। वैसे ये 25 साल के लगते हैं। वे पहले भी मंत्री थे, गृह राज्य मंत्री थे। अपने स्कूल के दिनों में ये एक एथलीट थे। इन्होंने राष्ट्रीय खेलों में भाग भी लिया है। अपने मंत्रालय का दायित्व संभालते ही माननीय मंत्री जी ने स्कूल और कॉलेज के स्तर

पर शिक्षा के साथ-साथ खेलों का एकीकरण किया। 8 से 25 वर्ष की आयु वर्ग में महिलाओं सहित खिलाड़ियों की पहचान करना और उन्हें बढ़ावा देने के लिए देश भर में खेल प्रचार योजनाओं का कार्यान्वयन किया गया है। वर्ष 2018 में भारत ने गोल्ड कोस्ट कॉमनवेल्थ गेम्स में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर 66 पदक जीता। जकार्ता में एशियाई खेल में 69 पदक मिले। पैरा एशियाई खेलों में हमें 72 पदक मिले।

महोदय, मैं अब राजस्थान के बारे में बात करूंगा। खेलो इंडिया स्कूल गेम्स, 2018 में उपलब्धियां रहीं। इसमें 29 राज्यों और सात केन्द्रशासित प्रदेशों के 3507 खिलाड़ियों ने भाग लिया।

महोदय, जिन्होंने हिन्दुस्तान का नाम रोशन किया, उसमें हमारे सदन में पूर्व मंत्री राज्यवर्धन राठौर यहां बैठे हैं। मैरीकॉम, सिन्धु, साक्षी मलिक, प्रिया पुनिया, अभिनव बिन्द्रा, सुशील कुमार जैसे कई नाम हैं, जिन्होंने गांव से पढ़ाई करके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई।

सभापति महोदय, मुझे बस एक मिनट का समय दीजिए। प्रत्येक राज्य के अन्दर खेल विश्वविद्यालय खुले, प्रत्येक गांव के अन्दर खेल प्रतिभाओं को संवारने के काम किए जाएं। जो बच्चे खेलों में आ गए हैं, उनकी गांवों के स्कूल से लेकर कॉलेज और यूनिवर्सिटी की शिक्षा मुफ्त हो।...(व्यवधान)

(इति)

(1705/MY/SNT)

1705 बजे

श्री रवि किशन (गोरखपुर): सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से युवा मामले और खेल मंत्रालय के अनुदानों की मांगों पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। इससे मैं बहुत ही प्रसन्न हूं। ऐसे अद्भुत प्रधान मंत्री हमें सदियों में मिलते हैं। ऐसे श्रद्धेय प्रधान मंत्री सदियों में मिलते हैं। आप सोचिए कि इनके आते ही, पूरे देश का युवा जग गया। उनके आते ही पूरे देश में एक नयी ऊर्जा आ गई और सभी लोग दौड़ने लगे। इस देश में 65 प्रतिशत युवा 35 साल के उम्र वाले हैं। इसके पहले सब लेटे हुए थे। हमें ऐसे प्रधान मंत्री मिले कि सडेन्ली सभी जग गए। खेलो इंडिया, दौड़ो इंडिया, जागो इंडिया और इस जागो इंडिया में 1000 करोड़ रुपये का बजट बढ़ गया है। इन छह सालों में खेल के मामले में अद्भुत बजट बढ़ा है। यह मोदी जी ही कर सकते हैं। वह अद्भुत हैं, इसलिए मैं उनको अद्भुत, अद्भुतम और अद्भुतास कहता हूं। वह संस्कार भी देते हैं और खेल के लिए पैसा भी बढ़ाते हैं। मोदी जी ने इस देश में जान फूंक दिये हैं। यह मोदी जी का कमाल है।

महोदय, हम लोग वर्ष 2012 में खेले थे। उस समय हमें दो स्वर्ण सहित छह पदक मिले थे। यह फैन्टैस्टिक है। इसमें कोई प्रॉब्लम नहीं है। जब हम वर्ष 2016 में खेलें, तब दो पदक जीते थे, उसमें एक रजत भी मिला था। उसी प्रकार से जब हम वर्ष 2018 के एशियाई खेल में खेले, तो हमने 15 स्वर्ण, 24 रजत और 30 कांस्य पदक जीते थे। यह अद्भुत है। वर्ष 2018 के राष्ट्रमंडल खेल में तो कमाल ही हो गया। यह मोदी जी की ऊर्जा का कमाल है। उस समय हमने 26 स्वर्ण, 20 रजत और 20 कांस्य पदक जीते थे। अभी उस तरफ से एक सदस्य बोल रहे थे, वह हमारे मित्र एवं एक कलाकार हैं। वह टीएमसी पार्टी के सांसद हैं। अभी वह चले गए। वह बोल रहे थे कि खेलों में जो पैसा लगाया गया है, वह सब पब्लिसिटी में जा रहा है। मैं कहता हूं कि ऐसा नहीं है, क्योंकि यह मोदी जी की सरकार है। यहां मोदी जी एक रुपया लगाते हैं, तो देश उनको 100 रुपये रिटर्न में देता है। अभी देश जग गया है और ऐसा जग गया है कि साथ में सारी नारी शक्ति भी जग गई। हमारी नारी शक्ति ऐसे जगी, जो कभी नहीं जगी थी। आप भी देख रहे हैं कि पार्लियामेन्ट में कितनी नारी शक्ति बैठी है। अब हमारी महिलाएं खेलों में पुरुषों से भी आगे बढ़ गई हैं। पूरे विश्व में कहीं भी 12 बजे रात तक पार्लियामेन्ट नहीं जगती है। यह मोदी जी और हमारे अध्यक्ष जी का ही कमाल है।

महोदय, आप देखिए कि आज हर जगह चाहे हॉकी हो, कुश्ती हो, आर्चरी हो, निशानेबाजी और एथलेटिक्स हो, सभी जगह नारी शक्ति ही दिखाई देती है। चाहे वह पी.वी.सिंधु जी हो, सायना नेहवाल जी हो, कुश्ती में साक्षी मलिक जी हैं, फोगाट बहनें हैं, बॉक्सिंग में मैरीकॉम जी हैं, वह राज्य सभा सांसद है, निशानेबाजी में अंजली भागवत जी हैं, एथलीट हिमा दास जी हैं, जिमनास्टिक में दीपा कर्माकर और अरूणा रेड्डी जी हैं, आज खेलों में अनगिनत नारी शक्ति आ गई है। यह मोदी जी का कमाल है। यह अद्भुत है। यह वही बात है, मुझे याद आ गया, विवेकानंद जी ने युवाओं के लिए कहा था- "युवा तुम्हारे भविष्य का निर्माण करना स्वयं तुम्हारे अपने हाथ में है", इसलिए आप गुणी बनो। तुम्हारे अंदर इतने गुण हों कि वह तुम्हारा स्वरूप ही बन जाए। हमारे अंदर युवा अवस्था निहित गुणों को आत्मसात करती है।

महोदय, मैं एक कलाकार हूं, इसलिए मुझे हर तरह की ट्रेनिंग मिली है। मुझे स्पोर्ट्स की भी ट्रेनिंग मिली है। We have been trained. जब आप हीरो बनते हैं, तो आपको घुड़सवारी, एक्शन, कूदना,

फाँदना, स्विमिंग, इन सभी चीजों की ट्रेनिंग दी जाती है। We have been trained for everything. Then we become a hero and then we become super star. इस प्रकार की ट्रेनिंग हमारे पूरे शरीर में है। मैं देहात का लड़का हूं। मैंने अपने यहां गंगा जी में लोगों को अपना हाथ- पैर बांध कर तैरते हुए भी देखा है। हमारे यहां एक लड़का अपना हाथ-पैर बांध कर गंगा जी में स्विमिंग कर लेता है।

(1710/CP/GM)

ऐसे भी लड़के हैं। मैं यही कहना चाहूंगा कि हमारे गांव, देहात के लड़के, गोरखपुर ही नहीं, पूर्वांचल, बिहार, यूपी, झारखंड और हिंदुस्तान के सारे देहात के लड़के बड़े सक्षम हैं।

1710 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

उनका शरीर गठीला है। उनको केवल अच्छे कोच दे दिए जाएं और मोदी जी की स्पीचेज़ सुना दी जाएं। सब लोग ऐसा दौड़ेंगे कि क्या बताएं! मैं यही बोलते हुए अपने शब्दों को विराम देता हूं और मैं यही कहूंगा कि मोदी जी आप अद्भुत हैं, अद्भुतम् हैं, अद्भुतास हैं। जय हो।

(इति)

माननीय अध्यक्ष : डॉ. वेंकटेश नेता बोरलाकुंता।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, संक्षिप्त में अपनी बात कहें।

1711 hours

DR. VENKATESH NETHA BORLAKUNTA (PEDDAPALLE): Hon. Speaker, Sir, it is a privilege to participate in the discussion on Demands for Grants, particularly on Demands for Grants for the Ministry of Youth and Sports. With the blessings of Shri KCR, the Chief Minister of Telangana, I got the opportunity to participate in the discussion in this august House.

The hon. Member, who spoke before me, was talking about the *naari shakti*. I am happy to inform and I can proudly say that the State Government of Telangana is a great Government which has produced and encouraged sportspersons like Sania Mirza, Pullela Gopichand, Saina Nehwal and P.V. Sindhu. The Government of Telangana particularly allotted funds to sportspersons for encouragement and established the Pullela Gopichand Badminton Academy in Gachi Bowli and Sania Mirza Tennis Academy in the State of Telangana.

I start my debate with a great statement of the former President and the Missile Man of India, Dr. A.P.J. Abdul Kalam, “My message, especially to young people, is to have courage to think differently, courage to invent and to travel the unexplored path, courage to discover the impossible and to conquer the problems and succeed. These are the great qualities that they must work towards. This is my message to young people.” The people’s President and a youth icon, Dr. A.P.J. Abdul Kalam had no critics in his life. He was a friend, philosopher and guide to millions of people. He was a man who inspired youth. In 2011 and 2012, he launched ‘What Can I Give’, a movement against corruption to instil values and ethics amongst the youth.

In this context, I would like to quote some lines from page 16 of the Budget Speech of the hon. Minister Shrimati Nirmala Sitharaman: “The Government will bring in a New National Education Policy to transform India’s higher education system to one of the global best education systems.”

I quote the next point from her Budget Speech: “We propose to establish a National Research Foundation (NRF) to fund, coordinate and promote research in the country.”

Another point in her Budget Speech is: “To up-grade the quality of teaching, the Global Initiative of Academic Networks (GIAN) programme in higher education was started, aimed at tapping the global pool of scientists and researchers.”

As far as sports is concerned, I would quote another point from the same Budget Speech: "……a National Sports Education Board for Development of Sportspersons would be set up under Khelo India Scheme."

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मेरे पास मिनट की घड़ी लगी हुई है। मैं किसी भी माननीय सदस्य को एक-दो मिनट बातें करते हुए नहीं टोकता हूं, लेकिन जो सात-दस मिनट तक बातें करता रहता है, उनके लिए कहता हूं।

(1715/NK/RK)

मैं जब घड़ी देखता हूं तो एक-दो मिनट नहीं टोकता हूं, किंतु लगातार दस मिनट तक बात चलती रहे, यह सदन में उचित नहीं है। मैं पुन: माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूं, मैं किसी भी माननीय सदस्य को सदन में कभी भी नाम से बुलाना नहीं चाहता, एक मिनट या दो मिनट ठीक है, पीछे के बेंच वाले दस-दस मिनट तक बात करते रहते हैं। अगर आपकी इजाजत है कि बातें करना है, आप आपस में बातें करते रहिए और भाषण देते रहिए, मुझे कोई दिक्कत नहीं है।

DR. VENKATESH NETHA BORLAKUNTA (PEDDAPALLE): Sir, I will wholeheartedly follow your instructions. Right from the beginning, the TRS Party Members are obeying your instructions and completing their speeches within the prescribed period of time. Sir, please give five minutes to me.

All the programmes which have been implemented or are going to be implemented by the Central Government are appreciable. As far as Telangana State is concerned, we are a little bit disappointed with regard to development of sports infrastructure in the State. In spite of having so many stadiums, and the amount of encouragement being given to the sports persons by the State, not a single rupee has been given to the State of Telangana, which is the youngest State in the country.

As far as the budgetary allocation to the Ministry of Sports and Youth is concerned, Rs. 621 crore has been allocated to the Department of Youth Affairs. This was the recommendation of the Standing Committee on Human Resource Development. I would like to give some suggestions….(*Interruptions*) I will take two minutes more. I have come from the youngest State, recently born State, of India.

Whatever expenditure is allotted to a particular Ministry or Department, should be given to various institutions speedily. There is a lack of coordination between the National Sports Federation and the Sports Authority of India. Sufficient measures have been taken by the hon. Minister to bring about coordination between the two. Sports persons should give top priority to strengthen rural students who are anxious to participate in various sports. Indigenous sports should be given top priority and encouraged. Thank you.

(ends)

1718 hours

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU (SRIKAKULAM): Thank you very much, Speaker, Sir, for giving me the opportunity to speak on the Demands for Grants under the control of the Ministry of Youth Affairs and Sports.

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य] माननीय मंत्री जी को 5.30 बजे जवाब देना है।

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU (SRIKAKULAM): Sir, I am the only speaker from our Party. I will try to finish within the allocated time.

I would like to start my speech with the quote by Franklin D. Roosevelt, "We cannot always build the future for our youth, but we can build our youth for the future". India has more than 50 per cent of its population under the age of 25 years, and 65 per cent under the age of 35 years. An interesting statistic is that by 2020 the average age of India will be 29 years as compared to 37 years in China and 48 years in Japan. We have a large group of youth in our country, but whether it is an advantage is the question that we have to ask. Not necessarily, having a huge group of youth is an advantage. What we need is a stable, skilled, and strong youth. That is what the country requires today. Often, the youth of the country is referred to as the future of the country. I have a very different opinion here also. The youth of the country is not just the future of this country but they are the present of this country also.

(1720/PS/SK)

We need to trust in their capabilities and potential and we must invest in their ideas and mentor them to become agents of change, not just for tomorrow, but also today. How do we do this? The major instrument to achieve this has been the National Youth Policy. It has been formed earlier and in the year 2014, it was redrafted and reformed.

Through you, I would like to request the hon. Minister that it has been five years since the formation of the National Youth Policy in the year 2014 and it is time, to recall the stakeholders and evaluate how this policy has been working and how much success it has been achieved. One of the important aspects of this Youth Policy is the formation of the Youth Council also. As far as I know, there has been no Youth Council formed.

One of the other important aspects is the National Youth Parliament. January 12 is the anniversary of our great leader, Swami Vivekananda Ji. Our hon. Prime Minister mentioned in 'Mann Ki Baat' that the National Youth Parliament should be

formed. There have been National Youth Parliaments also. One of the biggest challenges with the Government today is that we have to listen to the youth of this country. The National Youth Parliament should be organised on a much wider scale and it should reach the ground level. The challenge today lies in how much of the energy and ideas are flowing from the ground level, from the youth of this country to the biggest House, that is, the Parliament today. When a clear-cut connection is established between them, it will result in a great success and in a great nation-building of this country.

I will just like to compare a few statistics. When we compare it with Malaysia, Malaysia has a Youth Parliament of Malaysia where one lakh youth elect one Member to this Youth Parliament. They have 133 such members who regularly lead the normal Parliament over there. The Global Youth Development Index says that Malaysia is ranked 34th, South Korea is ranked 18th, Japan is ranked 10th, Sri Lanka is ranked 31st, Singapore is ranked 44th, whereas India is ranked 133rd because we do not have proper systems where we are listening to the youth of this country.

I request the Government to establish a proper set-up. The biggest challenge the Ministry of Youth Affairs and Sports today has is that it has to work with 28 other Ministries because youth is the major priority for 28 other Departments. If you have to see the health of the youth, you have to talk to the Health Department; if it comes to their education, you have to talk to the HRD Department. …(*Interruptions*) Sir, I will finish in one minute. So, these are the biggest challenges. When it is compared with Sports also, there have been two different aspects. How do we create sports as a healthy lifestyle and how do we use sports as a viable profession? There have been many speakers who spoke earlier also. There are different challenges based on these two.

We all hope for big success for the youth of this country. I wish that you had given me more time. Thank you.

(ends)

HON. SPEAKER: A very good speech. ऐसे नौजवान देश का नेतृत्व करेंगे।

1723 बजे

श्री दिलीप साईकिया (मंगलदाई): माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से खेल एवं युवा कार्यक्रम मंत्रालय की अनुदानों की मांगों पर चर्चा में कुछ विषयों पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। आपने मुझे इस चर्चा में बोलने का मौका दिया, इसके लिए धन्यवाद करता हूं।

मैं उत्तर पूर्वांचल से आता हूं, असम से आता हूं। सौभाग्य से खेल एवं युवा कार्यक्रम मंत्रालय को संभालने वाले माननीय मंत्री किरेन रिजीजू जी अरुणाचल प्रदेश से हैं। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं। उत्तर पूर्वांचल में पिछले कुछ वर्षों में पूरे विश्व में खेल स्पर्द्धा में जितना नाम भारत ने कमाया है, उसमें नार्थ-ईस्ट का काफी योगदान रहा है। मैं कुछ नाम बताना चाहता हूं – एम.सी. मेरी कॉम, जिन्होंने वर्ष 2012 में कांस्य पदक जीतने का रिकॉर्ड बनाया। एल. सरिता देवी, जयंत ताल्लुकदार, बोमबॉयला देवी लेइश्राम आदि, के. संजीता चानू, शिवा थापा, कुंजारानी देवी, हिमा दास, मैंने इन लोगों का नाम इसलिए लिया है कि इन खिलाड़ियों के कारण नार्थ-ईस्ट में काफी अच्छा परिवेश खेल के मामले में बना है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी और भारत सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं।

(1725/MK/RC)

मणिपुर में 130 करोड़ भारतीयों के लिए पहला खेल विश्वविद्यालय हमारे उत्तर-पूर्वांचल में बनाने का एक बड़ा फैसला लिया है। यह पहला खेल विश्वविद्यालय है और सरकार ने खेल के विषय में एक बड़ा कदम उठाया है। हमारे मंत्री जी नार्थ ईस्ट के बारे में सब कुछ जानते हैं कि हमारे यहां कितनी सम्पदा और संभावना है। इसलिए मैं आग्रह करता हूं कि नार्थ ईस्ट के बजट में डोनर मंत्रालय में जो 10 परसेंट ऑफ दि टोटल यूनियन बजट दिया है, सभी डिपार्टमेंट्स की तरफ से वह व्यय करना चाहिए। हालांकि स्पोर्ट्स स्टेट सब्जेक्ट है, फिर भी इस क्षेत्र के लिए कुछ बजट बढ़ाया जाए और वहां स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया के सेंटर कुछ नए जगहों पर भी खोले जाएं। हमारे यहां जो सात स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया सेंटर्स हैं, उनकी हालत ठीक नहीं है। फंड देकर उसको ठीक किए जाने की आवश्यकता है। मैं मंगलदाई से प्रतिनिधित्व करता हूं, यह काफी ट्राइबल डोमिनेटेड एरिया है। यहां भी काफी लोगों ने नेशनल लेवल पर देश के लिए सम्मान कमाया है और इंटरनेशनल इवेंट्स में भी हमारे क्षेत्र के काफी बच्चों ने नाम कमाया है। मेरे क्षेत्र मंगलदाई के उदालगुरी क्षेत्र में एक स्पोर्ट्स अकादमी खोली जाए तथा नलबाड़ी में स्पोर्ट्स ऑथोरिटी ऑफ इंडिया का एक सेंटर खोला जाए, यही मेरी विनती है। मैं इस बारे में माननीय मंत्री जी को बोल चूका हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

1727 बजे

श्रीमती नवनीत रवि राणा (अमरावती): धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। हमारे स्पोर्ट्स के मिनिस्टर रिजीजू जी, It is difficult but I am very sure in the coming days, India will get all the medals in international events. Seeing your dedication and the interest that you are taking as also the way people are talking about sports from morning to evening, I think India will definitely become 'Chak De India' as Shahrukh Khan had done in the movie 'Chak De India'. This Ministry will definitely do a great work.

अध्यक्ष महोदय, मैं बताना चाहूंगी कि हमारे जिले में हनुमान व्यायाम प्रसारक मंडल एक ऐसी संस्था है, जिसके अध्यक्ष प्रभाकर राव वैद्य, जिनको पद्म श्री अवार्ड से सम्मानित किया गया है, वे पिछले 60 वर्षों से हमारे जिले में अलग-अलग राज्यों से खेलने वाले खिलाड़ी आते हैं, उनको नेशनल और इंटरनेशनल लेवल पर स्ट्रांग बनाकर आगे बढ़ाने काम काम करते हैं। मुझे लगता है कि हमारी राज्य सरकार ने कुछ डिमांड्स केंद्र सरकार से की हुई है, जैसे- रत्नागिरी से सिंथेटिक ट्रैक की मांग की गई है, पुणे में साइक्लिंग ट्रैक के रिनोवेशन की मांग की गई है। धुलिया से कंस्ट्रक्शन ऑफ रेसलिंग सेंटर, अमरावती में आर्चरी रेंज की मांग की गई है जिसमें सिर्फ 6 करोड़ रुपये लगने हैं। अकोला में स्वीमिंग पूल बनाने की मांग की है। मल्टीपल हॉल के लिए सबबर्न मुम्बई से कमेटी ऑफ मुम्बई स्वीमिंग पूल की कंस्ट्रक्शन के लिए निवेदन आया है। सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक के लिए आपको मुम्बई से विनती आई है। मुम्बई से फिर मल्टीपल परपस हॉल के लिए निवेदन आया है। रत्नागिरी से सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक के लिए निवेदन आया है। मल्टी परपस इंदौर से आपके लिए निवेदन आए हुए हैं। मैं आपसे सिर्फ इतना निवेदन करूंगी कि हर तालुका में जब कुश्ती खेलने के लिए बच्चे तैयार होंगे, तो कुश्ती करने के लिए जरूरी सारी सामग्री जैसे कुश्ती मैट हर बड़े तालुका में उपलब्ध कराने चाहिए, ताकि वहां के बच्चे खेल कर आगे बढ़ें। हमारे जिले से बहुत सारे बच्चे इंटरनेशनल लेवल पर, नेशनल लेवल पर तैयार हुए हैं। एचवीपीएम (हनुमान व्यायाम प्रचारक मंडल) जो एनजीओ चला रहे हैं, वे इतने बच्चों को तैयार कर रहे हैं कि हमारे जिले में स्पोर्ट्स के लिए और ध्यान देंगे, तो मुझे लगता है कि हम इस दिशा में आगे बढ़ते जाएंगे। जैसे एक सदस्या ने बताया कि ग्वालियर और मणिपुर में महारानी लक्ष्मी यूनीवर्सिटी ऑफ फिजिकल एजुकेशन बनी है, मैं आपसे विनती करूंगी कि यह यूनीवर्सिटी महाराष्ट्र में भी आए।

(इति)

माननीय अध्यक्ष : आप स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री में राज्य मंत्री भी रही हैं।

श्रीमती अगाथा के. संगमा (तुरा): जी नहीं सर, मैं रूरल डेवलपमेंट मिनिस्ट्री में थी।

माननीय अध्यक्ष: ये पूरे टाइम सदन में कल रात 12 बजे तक थीं, इसलिए इनको मौका दे रहा हूं।

(1730/SNB/YSH)

1730 hours

SHRIMATI AGATHA K. SANGMA (TURA): Hon. Speaker, Sir, thank you for giving me this opportunity.

स्पीकर जी, शुक्रिया। यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है।

Sir, I might not be able to speak on many issues but I would take this opportunity, since I have been given just three minutes, to talk about the National Games.

Sir, the State of Meghalaya would be hosting the 39th National Games in 2022. This year is very important to us because we would also be celebrating our Golden Jubilee and in 2022 we will also be celebrating 75th year of our Independence. The National Games is a very important event because it is the biggest multi-sport event in our country and over 10,000 athletes would be participating in these games.

The Government of Meghalaya has proposed to conduct all 36 sporting disciplines and also two additional sporting disciplines. So, in all, 38 disciplines will be conducted in this National Games. The State is extremely excited to host this event because my State and the North-Eastern region in general has a very strong sports culture. Our hon. Sports Minister, Shri Kiren Rijuju knows about it because he too belongs to the same region and is a sportsman in his own right.

Sir, the total number of sports persons in Meghalaya is 1,86,628. However, the number of medals that we have received is not commensurate with the number of athletes that we have and this is mainly because of the fact that we lack infrastructure. I believe that the State is thinking that this is going to be an opportunity to rectify that.

This event is a very big event and is going to require many things, like proper training, putting in place proper systems and infrastructure. The infrastructure for our host city of Meghalaya and the sub-host city, which is my own Parliamentary constituency, Tura will be required. The main Budget is categorised in different sub-headings but the total Budget that the State is proposing is Rs. 2199 crore and I would request our hon. Minister for Sports and Youth Affairs, our hon. Prime Minister and our Finance Ministry to look into

the Budget and help us because we are a very small State and we would require the assistance of the Central Government for hosting the National Games successfully.

Our hon. Prime Minister has always spoken about national ambition and regional aspirations. I believe that this is the time to bring to life the spirit behind what he said when he talked about national ambition and regional aspirations. It is because hosting the National Games successfully will not only be a matter of pride for Meghalaya but will also be a matter of pride for our country.

Thank you.

(ends)

माननीय अध्यक्ष: जिन माननीय सदस्यों को समय की कमी के कारण मौका नहीं मिल पाया है वे अपना लिखित भाषण सभा पटल पर दे सकते हैं। तीन-चार दिन से कई माननीय सदस्यों के जीरो अवर में अरजेंट नेचर के सवाल थे। अगर सदन की सहमति होगी तो, मैं कल सभी माननीय सदस्यों को पूर्ण समय देने का प्रयास करूंगा।

1734 बजे

युवक कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री किरेन रिजीजू): अध्यक्ष जी, धन्यवाद। मैं सबसे पहले आपको सदन की ओर से धन्यवाद देना चाहता हूं। युवा और खेल मामलों पर आपने अनुदान मांगों के तहत चर्चा करने का मौका दिया। आज कई सांसदों ने बहुत अच्छे-अच्छे सुझाव भी दिए, कुछ सवाल भी पूछे, कुछ डिमाण्ड भी की, चूंकि हमारे पास सीमित समय है इसलिए मैं सभी का जवाब नहीं दे पाऊंगा, लेकिन मेरे पास सभी सदस्यों के जितने भी पॉइन्ट्स हैं उनको मैंने बारीकी से नोट किया है। मैं सभी सांसदों को लिखित में जवाब भेजूंगा। अध्यक्ष जी, मैं आज इस सदन में आपके माध्यम से कुछ बातें बताना चाहूंगा कि युवा मामला और खेल ऐसा विषय है जो सबकी जिंदगी से जुड़ा हुआ है।

(1735/RPS/RU)

सुमेधानन्द जी अभी यहां नहीं है, उन्होंने एक बहुत अच्छी कही थी कि खेल के लिए कोई उम्र नहीं होती है। यह बिल्कुल सही बात है कि खेलने के लिए कोई उम्र नहीं चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर और राष्ट्रीय स्तर पर मेडल जीतने के लिए उम्र चाहिए, लेकिन कोई गेम खेलने के लिए कोई उम्र की जरूरत नहीं है और सभी को खेलना चाहिए। इसलिए मैं सभी सांसदों से अपील करना चाहता हूं कि कोई न कोई खेल अवश्य खेलिए, उससे देश का माहौल अच्छा होगा, स्वास्थ्य अच्छा होगा, खर्च कम होगा, जिन्दगी अच्छी होगी, आबाद होगी और देश का कल्याण होगा। कई सांसद अपने-अपने जमाने में अच्छे खिलाड़ी रहे हैं और आज सांसद बनकर यहां हमारे बीच में आए हैं, जैसे राज्यवर्धन राठौर जी ने ओलम्पिक गेम्स में भारत के लिए पहला सिल्वर मेडल जीता था।

अध्यक्ष जी, मैं उस समय, 2004 में इस सदन का सदस्य था। जब एथेंस में ओलम्पिक चल रहा था, उस समय आपके आसन पर सोमनाथ चटर्जी जी स्पीकर थे, मैंने उनसे कहा कि मुझे ओलम्पिक देखने के लिए जाना है, क्योंकि भारत फाइनल में खेल रहा है और मेडल मिलने की हमारी उम्मीद है। उस समय साउथ एवेन्यू में मेरा घर था, मैंने घर जाकर खेल देखा। उस समय राज्यवर्धन राठौर जी ने पहली बार हिन्दुस्तान के लिए जो सिल्वर मेडल जीता था, उसकी खुशी का कोई पैमाना नहीं था। खेल में जो भारत को जीत दिलाता है, मेडल लाता है, उससे जो खुशी मिलती है, उसको आप शब्दों में बयान नहीं कर सकते हैं। उससे उत्साह, देश का नाम और शान बढ़ती है, उससे हमारा सीना चौड़ा हो जाता है, उसको शब्दों में बयान नहीं कर सकते हैं। इसलिए नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जो एक नया अभियान शुरू किया गया है – 'खेलो इंडिया,' इसके बारे में आज कई सांसदों ने कई सुझाव दिए हैं और इसकी जानकारी भी रखी। यह अच्छी बात है। मैं समझता हूं कि सांसदों को खेल में रुचि रखते हुए, जो भी कार्यक्रम भारत सरकार और राज्य सरकार की ओर से चलते हैं, उनकी जानकारी रहेगी तो और अच्छा होगा। सांसदों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों के बारे में बहुत सारी डिमाण्ड्स आई हैं।

अध्यक्ष जी, मैं अभी हरेक को जवाब नहीं दे पाऊंगा, लिखित रूप में जवाब जरूर दूंगा। खासकर जो सांसदों की डिमाण्ड आती है कि उनके क्षेत्र में स्टेडियम चाहिए, खेलने की सामग्री चाहिए, साधन चाहिए या वहां बुनियादी सुविधाएं बनानी हैं, इस तरह की डिमाण्ड्स आती रहती हैं, इसके लिए मैं यह कहना चाहूंगा कि हमारे संविधान के तहत खेल राज्य का विषय है। भारत सरकार वायबिल्टी गैप फण्डिंग

के रूप में, राज्य सरकार ने जो काम किया है, उसकी पूर्ति करने के लिए जो भी सहायता हो सकती है, करती है। अलग-अलग स्कीम्स बहुत हैं, जैसा मैंने कहा है कि मैं अभी पूरी चीजें नहीं बता सकता हूं, लेकिन हमारे पास फण्ड्स हैं। मैं हर राज्य को उनकी जरूरतों के हिसाब से, कोशिश करूंगा कि बिना किसी भेदभाव के, सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को, हमारे मंत्रालय के अधीन जितना बजट और फण्ड है, देने का प्रयास करेंगे। इसके अलावा, कई सांसदों ने भी इसका जिक्र किया है कि हमारे पास नेशनल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट फण्ड है। वह फण्ड अनलिमिटेड है। हम कॉरपोरेट सेक्टर से जितना फण्ड कलेक्ट कर सकते हैं, यह मैंडेटरी है कि फाइनेंस मिनिस्ट्री को उसके बराबर, 50 प्रतिशत मैचिंग ग्राण्ट देनी पड़ती है। मैंने भारत सरकार में अपने सभी साथी मंत्रिगण को पत्र लिखा है। आज मैं स्पीकर महोदय के माध्यम से फिर से अनुरोध करना चाहूंगा कि सारे मंत्रिगण, अपनी-अपनी पब्लिक सेक्टर यूनिट्स के एक या दो प्रतिशत पैसे हमारे कोष में जमा कर दें ताकि हम खिलाडियों के लिए और खेलों के लिए काम कर सकें। संसद का यह बजट सत्र खत्म होते ही, मैं कारपोरेट दुनिया की लीडरशिप के साथ एक बैठक करने वाला हूं। हमारे पास कारपोरेट जगत के काफी लोग आ चुके हैं, वे उत्सुकता से आगे जाना चाहते हैं। हम यह कोशिश करेंगे कि अगले एक महीने के अंदर भारत की जो कारपोरेट लीडरशिप है, हम सबसे बातचीत करके, अपने खिलाड़ियों के लिए पैसे की कोई कमी नहीं होने देंगे।

(1740/RAJ/NKL)

हमारा यह प्रयास रहेगा। अभी कुछ सीनियर एमपीज ने कुछ बातों का जिक्र किया है। अभी हम इस मंत्रालय में आए हैं और प्रधान मंत्री जी ने मुझे जिम्मेदारी दी है। प्रधान मंत्री जी ने यह कहा है कि आपको खेल जगत एवं युवा मामले को अच्छी तरह से संभालते हुए, अच्छा काम करना है। हमें कुछ टास्क दिए गए हैं। मैं धीरे-धीरे जो-जो काम करूंगा, उसके बारे में संसद को बताता रहूंगा। हम बहुत बड़ा कार्यक्रम लॉंच करने के लिए सोच रहे हैं, जो स्पोर्ट्स डे है, ध्यानचंद का जन्म दिवस है, 29 अगस्त को हमारे देश में खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है, उस दिन हम अर्जुन अवार्ड, द्रोणाचार्य अवार्ड और खेल रत्न देते हैं। इसके अलावा, हम बड़ा कार्यक्रम करने की योजना बना रहे हैं। हम प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में सारा कुछ तैयार कर रहे हैं। हम प्रधान मंत्री जी के मार्गदर्शन एवं उनकी सोच से प्रेरणा ले कर काम कर रहे हैं। कुछ साल पहले प्रधान मंत्री जी ने कुछ बातें कहीं थी, मैं उसे सदन में आपके सामने रखना चाहता हूं। 'खेलो इंडिया' लॉंच करते समय बहुत लोगों ने सोचा था कि यह भी एक ऐसे ही सरकारी कार्यक्रम होगा, जो बहुत कामयाब नहीं होगा। लोगों ने ऐसी कुछ आशंकाएं व्यक्त की थी, लेकिन मैं बता सकता हूं कि 'खेलो इंडिया' के तहत आज हम चार हजार से ज्यादा टैलेंटेड खिलाड़ियों को पिक कर चुके हैं और हम उनको राष्ट्रीय स्तर पर ट्रेनिंग दे रहे हैं। उसी 'खेलो इंडिया' के लॉंच के दौरान प्रधान मंत्री जी ने कहा था कि

> "Khelo India is not only about winning medals. It is an effort to give strength to a mass movement for playing more. We want to focus on every aspect that would make sports more popular across the nation."

इसके साथ-साथ प्रधान मंत्री जी ने एक बात और कही थी। वह बात आपके सामने रखना बहुत जरूरी है। युवाओं के लिए प्रधान मंत्री जी के ये शब्द हैं –

"हमारे देश के युवा पीढ़ी खेल जगत में आगे आएं और आज कंप्यूटर के युग में, मैं आगाह भी करना चाहूंगा कि प्लेइंग फील्ड, प्लेइंग स्टेशन से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। कंप्यूटर पर फीफा खेलिए, लेकिन कभी बाहर मैदान में फुटबॉल के साथ करतब करके दिखाइए। कंप्यूटर पर क्रिकेट खेलते होंगे, लेकिन खुले मैदान में आसमान के नीचे क्रिकेट खेलने का आनंद कुछ और होता है।"

प्रधान मंत्री जी ने इस तरह की बातें कही है। बहुत सारे कोट्स हैं, उससे हमें प्रेरणा मिली है। इस सरकार को बने हुए अभी दो महीने भी पूरे नहीं हुए हैं।

अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहूंगा कि मुझे मंत्री बने हुए एक महीने और कुछ दिन हुए हैं। दिल्ली में जितने खेल संस्थाएं हैं, पटियाला से लेकर गांधीनगर, अहमदाबाद से लेकर मुंबई और पुणे, आर्मी स्पोर्ट्स इंस्टीट्यूट, कोलकाता, गुवाहाटी और अरूणाचलप्रदेश, मैं सभी का दौरा कर चुका हूं। मैं खिलाड़ियों, कोचों और टेक्निकल एक्सपर्ट्स से मिला, मैंने सभी से बात की है। मैंने पहले ही दिन सभी को यह क्लीयरली कह दिया कि हम सरकार में आए हैं, हम आपको नियंत्रण करने के लिए नहीं आए हैं, आपके खेल संघ को चलाने के लिए नहीं आिए हैं, बल्कि हम आपको सपोर्ट करने के लिए आए हैं और सहुलियत देने के लिए आए हैं।

आज किसी माननीय सांसद ने कहा है कि आज खेल में राजनीति भी है। हां, जरूर है, क्योंकि वह भी एक संघ है। खेल फेडरेशंस हैं तो वहां वोटिंग से ही प्रेसिडेंट और सेक्रेट्री बनते हैं तो जाहिर है कि वहां ग्रुपिज्म होता है, जिसकी वजह से आज के दिन में कुछ खेल संघ कुछ विपत्ति में पड़े हुए हैं। ऐसे में सरकार की ओर से नहीं चाहते हुए भी, हमें मजबूरी में इंटरवेंशन करना पड़ता है, क्योंकि वे दो ग्रुप्स में बंटे हुए हैं और खिलाड़ियों का नुकसान हो रहा है। हम यह संसद के माध्यम से कहना चाहते हैं कि जितने भी लोग स्पोर्ट फेडरेशंस चला रहे हैं, उनमें कुछ राजनीति के लोग हैं, लेकिन ज्यादातर राजनीति के लोग नहीं हैं। यह कहना कि जो लोग स्पोर्ट फेडरेशन चला रहे हैं, उन्होंने खेल को बर्बाद कर दिया, यह भी सही नहीं है, क्योंकि खेल संघ में ऐसे-ऐसे लोग हैं कि उन्होंने जिंदगी भर खेल क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए योगदान दिया है, ऐसे भी लोग खेल संघ में काम करते हैं।

(1745/IND/KKD)

यदि हम यह कहें कि फैड्रेशन वाले कुछ काम नहीं करते हैं, तो यह बात गलत है। आज हमारे दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी जी ने जिक्र किया कि हमारे जो पैरा-एथलीट्स हैं, दिव्यांगजनों को यहां के मुख्य मंत्री रिसीव करने नहीं आए। इस संबंध में मैं कहना चाहता हूं कि मैंने पिछले डेढ़ महीने के अंदर जितने भी भारतीय खिलाड़ी, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रदर्शन करके चाहे मेडल जीता हो या न भी जीता हो, सभी को मैंने खेल मंत्री होने के नाते पर्सनली रिसीव किया। मैं उन सबके साथ बैठा, सबके साथ खाया और सबसे बात की। हमारे सामने एक भी कम्प्लेंट नहीं आई है।

अध्यक्ष जी, हमने कुछ छोटे-छोटे निर्णय किए हैं, लेकिन मैं मानता हूं कि इनका इम्पेक्ट बड़ा होगा। प्रधान मंत्री जी ने स्वच्छ भारत अभियान चलाया। इस अभियान के तहत हम चाहते हैं कि हमारे जितने भी स्टेडियम्स हैं, स्पोर्ट्स फैसेलिटीज हैं वे सभी साफ-सुथरे होने चाहिए। इसके लिए हमने निर्देश जारी किया कि हम हर छ: महीने में जितने भी स्टेडियम्स हैं, जितने भी ट्रेनिंग सैंटर्स हैं और स्पोर्ट्स फैसिलिटीज हैं, उन सभी का जायजा लेंगे कि वे शुद्ध रूप से क्लीन एंड ग्रीन होंगे, उसमें ज्यादा पेड़-पौधे भी होने चाहिए और साफ-सुथरे भी हों। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो उस सैंटर का जो अधिकारी है, उस पर कार्यवाही करेंगे। खाने-पीने का विषय भी खिलाड़ियों के लिए बहुत आवश्यक है। खिलाड़ियों के लिए फूड इनटेक, न्यूट्रिशियस फूड टेक्नीकली उनके कोच या एक्सपर्ट्स जो भी कहेंगे, वह दिया जाएगा। हमने फैसला किया है कि जूनियर या सीनियर खिलाड़ी के लिए 200, 400 या 600 रुपये की बात नहीं करेंगे, बल्कि खिलाड़ी जितना खाना चाहेगा, उसका पूरा पैसा सरकार की तरफ से दिया जाएगा। अभी हम पटियाला गए थे। मैंने वहां खिलाड़ियों के साथ खाना खाया। मैंने देखा कि वेट लिफ्टिंग करने वाले खिलाड़ी की चाहे 16 साल की उम्र हो या रेसलर की उम्र चाहे 15 साल की हो, उसका खाना एक शूटर से ज्यादा पौष्टिक होना चाहिए। जैसा कोच या नूट्रिशनिस्ट कहेंगे, खिलाड़ियों के लिए वह प्रावधान हमारे मंत्रालय की तरफ से होगा और यह निर्देश दिया जा चुका है।

महोदय, हमारी संस्था पूरे देश में फैली हुई है। स्पोर्ट्स आथोरिटी ऑफ इंडिया का सैंटर देश में फैला हुआ है और यदि इससे कोई रिजल्ट नहीं निकलेगा, तो कोई लाभ नहीं होगा इसलिए हमने सोचा है कि हमारी स्पोर्ट्स आथोरिटी ऑफ इंडिया के जितने भी सैंटर्स हैं, 12 रीजनल सैंटर्स और सब-सैंटर्स टोटल 282 सैंटर्स देशभर में हैं। हमारे सांसदों को शायद इसकी जानकारी नहीं होगी कि सैंटर्स के आस-पास भी छोटे-छोटे सैंटर्स होते हैं। स्पोर्ट्स सैंटर्स हैं, स्पेशल एरिया गेम्स सैंटर्स हैं, इसलिए इन सभी को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए हमने अभियान शुरू किया है कि हम पर्सनली एक-एक सैंटर को देखेंगे। जो सैंटर ठीक से काम नहीं कर रहा है, उस पर हम निगरानी करेंगे। मैं गृह मंत्रालय में रहा हूं, इसलिए मुझे जानकारी है कि हमारी जितनी भी आर्म्ड फोर्सेज हैं, उनके पास खेल का बहुत अच्छा कल्चर है चाहे इंडियन आर्मी हो या इंडियन पैरा मिलिट्री फोर्सेज हों। हम चाहते हैं कि हमारा मंत्रालय इंडियन आर्मी और जितनी भी सैंट्रल आर्म्ड छ: फोर्सेज हैं, उनके साथ ड्राइव करेंगे और उनके साथ तालमेल करके वर्ल्ड क्लास एथलीट्स बनाएंगे। इसके अलावा हमारे सामने कई बार सेंसिटिव मामले भी आते हैं जैसे कि वह देश के लिए खेला हुआ है और आज पता चलता है कि उसके पास खाने तक के लिए पैसा नहीं है। यदि वह बीमार है, तो उसके पास इलाज कराने के लिए भी पैसा नहीं है। हमने इस विषय में रिव्यू मीटिंग ली और स्पोर्ट्स आथॉरिटी ऑफ इंडिया के माध्यम से सारी संस्थाओं को बताया कि जो अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी जिन्होंने देश के लिए ओलम्पिक में मेडल जीता है या वर्ल्ड चैम्पियनशिप में या एशियन गेम्स, कॉमन वैल्थ गेम्स में, जो कैटेगरी हमने बनाई हुई है, उनके लिए पेंशन डबल कर दी है। उसके अलावा यदि वह बीमार होता है या उसे कुछ और भी कठिनाई होती है, तो उसे किसी चीज के लिए तड़पना न पड़े, इसके लिए हमने पूरा प्रावधान किया है। हम चाहते हैं कि खिलाड़ियों को सम्मान मिलना चाहिए। यदि देश में खिलाड़ियों को सम्मान नहीं मिलेगा, तो वे देश के लिए नहीं खेलेंगे। किसी जमाने में अपने राज्य का

प्रतिनिधित्व करके राष्ट्रीय खेलों में भी यदि किसी ने मेडल जीता है, उनके लिए भी हमने प्रावधान किया है कि जो खिलाड़ी मुश्किल जिंदगी जी रहा है, उसका हम ख्याल रखेंगे।

(1750/PC/RP)

अध्यक्ष महोदय, हमें इसमें यह ध्यान रखना होगा कि इसमें फ्रॉड नहीं होना चाहिए, नकली सर्टिफिकेट्स नहीं होने चाहिए। अगर कोई भारत के लिए नहीं खेला है, फिर भी वह बताएगा कि उसने खेला हुआ है और उसे पैसे दिए जाएं, या वह ट्विटर पर डालकर बोलेगा कि खेल मंत्रालय ने पैसे नहीं दिए, इस तरह के चैक एंड बैलेंस का हमने इसमें प्रावधान किया हुआ है, ताकि सही खिलाड़ी तक सही समय में हम मदद पहुंचा सकें।

अध्यक्ष महोदय, अगले साल ओलंपिक्स हैं। हमारे पास अभी लगभग दस मिनट हैं। मैं दस मिनट में ओलंपिक्स के बारे में कुछ बताना चाहूंगा। उसके बाद मैं युवा मामलों के बारे में पांच मिनट में निपटने की कोशिश करूंगा। अगले साल ओलंपिक्स हैं, किसी भी देश के लिए खेल के क्षेत्र में विश्व में अपने आप को उस स्थान पर, उस पायदान पर पहुंचाना है तो उसे ओलंपिक्स में सही प्रदर्शन करना पड़ेगा। ओलंपिक्स में जब अपने देश का झंडा फहराते समय, आपने देखा होगा कि खिलाड़ी रोते हैं, उनको इसमें कितनी खुशी मिलती है, हम सब उसे समझ सकते हैं। कोई कोई देश तो ऐसे हैं, आपने देखा होगा कि यूरोप, अमेरिका वगैरह में जब वह देश खेलते हैं, उस दिन वहां कोई मीटिंग्स नहीं होती हैं। विश्व के बड़े से बड़े देश भी अपनी मीटिंग्स कैंसिल कर देते हैं, क्योंकि आज मेरा देश खेल रहा है। खेल के प्रति लोगों की जो जागरूकता है, जो रुझान है, वह इस तरह से बढ़ रहा है, जो हमारे पूरे देश में हमें पिछले पांच सालों में देखने को मिला है।

अध्यक्ष महोदय, आज एक-एक खिलाड़ी आकर हमको बोलते हैं कि प्रधान मंत्री जी ने इंडीविज्युअली एक-एक एथलीट को, जो मैडल्स जीतते हैं, उनके लिए पर्सनली ट्वीट करते हैं और उनको बुलाकर उनसे मिलते भी हैं। आज तक ऐसा माहौल हमने इस देश में नहीं देखा है। खेल मंत्री होने के नाते मैंने चौबीस घंटे अपना दरवाजा खोलकर रखा हुआ है, कोई भी खिलाड़ी जब चाहे मुझे फोन कर सकता है, मुझे सोशल मीडिया के माध्यम से या मेरे मंत्रालय के माध्यम से या स्पोर्ट्स एथॉरिटी ऑफ इंडिया के माध्यम से मुझसे मिल सकता है, हमने ऐसा प्रावधान किया है। अगले साल टोक्यो 2020 के लिए हमने निर्णय किया है कि हम 'इंडिया हाउस' बनाएंगे। 'इंडिया हाउस' बनाने का मतलब यह है कि हमारे खिलाड़ी वहां जाकर भटकने नहीं चाहिए। खिलाड़ियों के लिए खाना-पीना बहुत महत्वपूर्ण होता है। जो खिलाड़ी खाना चाहेगा, वह खा सकेगा। भारतीय खिलाड़ियों को भारतीय खाना मिलना चाहिए। जब वे वहां पहुंचेंगे और उन्हें ठीक खाना नहीं मिलेगा तो वे बीमार भी हो सकते हैं, जिससे उनकी पर्फोर्मेंस पर असर पड़ सकता है। इसलिए हमने यह फैसला किया है। हमने 'इंडिया हाउस' बनाकर अभी एक साल पहले ही उसकी तैयारी शुरू कर दी है। जो खिलाड़ी टोक्यो 2020 ओलंपिक्स में जाएंगे, उनको भारतीय खाना, इंडियन फूड, जो उनको पसंद है, उनको हम वह एविलेबल कराएंगे। हमने टैक्निकल सपोर्ट के लिए एक कमेटी बनाने का निर्णय किया है, जिसके माध्यम से खिलाड़ियों को जो सहूलियत मिलनी चाहिए, उसकी तैयारी हम कर सकें। ओलंपिक ऐसा स्थान है, जिसमें हमें कितने मेडल्स मिलेंगे, यह तो मैं नहीं कह सकता हूं, क्योंकि मैं भविष्यवाणी नहीं कर सकता हूं, लेकिन मैं इस सदन को इतना आश्वासन ज़रूर देना चाहूंगा, जैसे प्रधान मंत्री जी ने खेल के क्षेत्र में जो ध्यान दिया है, मैं कह सकता हूं कि आने वाले ओलंपिक्स में हम पहले का रिकॉर्ड जरूर तोड़ेंगे। हम इस उम्मीद को लेकर, इस विश्वास के साथ ओलंपिक्स में जाने वाले हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं दो-तीन मिनट में युवा मामलों के कार्यक्रम के बारे में बताना चाहूंगा। हमारे पास काफी संगठन हैं, जो युवाओं को प्रोत्साहन देने के लिए कार्यक्रम चलाते हैं। सबसे बड़ा संगठन नेहरू युवा केन्द्र है। It

can be termed as the biggest social capital of our country. More than 60 lakh youth volunteers have registered under Nehru Yuva Kendra Sangathan. इसके माध्यम से हम बहुत काम कर सकते हैं। हमने एक इनोवेटिव तरीका यह सोचा है कि जितने भी युवा इस संगठन से जुड़े हुए हैं, उन्हें हम स्पेशल ट्रेनिंग देंगे। हमारे देश में डिज़ास्टर्स होते हैं, प्राकृतिक आपदाएं आती हैं। जितने भी युवा इस नेहरू युवा केन्द्र संगठन से जुड़े हुए हैं, और एनएसएस, नैशनल सर्विस स्कीम से जुड़े हुए हैं, उन सबको हम स्पेशल ट्रेनिंग देंगे। इसके लिए हमारी एनडीआरएफ है, स्टेट की एसडीआरएफ है, यूएन बॉडी भी है और राज्य सरकार के भी जितने ऑर्गन्स हैं, सब से तालमेल कर के हर डिस्ट्रिक्ट में हमारे जितने युवा, जितने वॉलेंटियर्स हैं, वे सब हर इमरजेंसी सिचुएशन में हमारी सेना के साथ, पुलिस के साथ और प्रशासन के साथ हमारे ये नेहरू युवा केन्द्र के लोग लोगों की सेवा के लिए खड़े होंगे। हमने ऐसे प्रशिक्षण की व्यवस्था तैयार कर दी है। इसके अलावा जैसा कि मैंने कहा कि कहने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन अभी गिलोटिन भी पास करना है, इसलिए मैं ज़्यादा समय नहीं ले सकता हूं।

(1755/SPS/RCP)

मैं इतना जरूर कहूंगा कि आज जितने माननीय सांसदों ने हमें सजेशन दिया है, उस सजेशन को मैं पॉजिटिव रूप से लूंगा और उनको अगले कार्यक्रम में समाहित करके, किस तरह से बेहतर तरीके से उनका इस्तेमाल कर सकता हूं, वह मैं करूंगा। जिन्होंने मांग की है, उस मांग के लिए मैं इतना कहना चाहूंगा कि राज्य सरकार के रिकमेंडेशंस के अलावा और भी प्राइवेट इंस्टीट्यूशंस हैं, जिनको हम फण्डिंग करते हैं, जैसे पी.टी. उषा का ट्रेनिंग सेंटर है, गोपीचंद की हैदराबाद में बैडमिंटन एकेडमी है। इसी तरह से मैरीकॉम की बॉक्सिंग एकेडमी है, उसमें छोटी उम्र के लोगों को ले रहे हैं। हम उनको भी फण्डिग कर रहे हैं। इसके अलावा स्टेट गवर्नमेंट से जो रिकमेण्डेशंस आती हैं, मैं सांसद महोदय को दरख्वास्त करूंगा कि आप डायरेकट आकर मुझे पत्र दे देते हैं, लेकिन हमें वह किसी जगह पर बनाना होता है, उसके लिए हम यहां से सीधे स्वीकृति नहीं कर सकते हैं। आप अपनी-अपनी राज्य सरकारों के मुख्य मंत्री से बातचीत करके खेल मंत्री के माध्यम से टारगेट करके जो भी ट्रेनिंग सेंटर या फैसिलिटी चाहिए, उसके लिए मैं जरूर मदद करूंगा। आपको यह काम राज्य सरकार को साथ में लेते हुए करना है। आप मुझे सीधे ही पत्र दे देते हैं कि इंडोर स्टेडियम बना दीजिए तो वह एक प्रक्रिया में नहीं आता है। मैं आपसे मिलता रहता हूं और मेरा ऑफिस आपके लिए खुला है। मैं आपसे अलग से भी बात करूंगा। जैसे मैंने शुरू में वादा किया है कि जितने लोगों ने इसमें भाग लिया है, उनको लिखित रूप से पॉइंटवाइज चार-पांच दिन के अंदर जवाब दे दूंगा, क्योंकि आज समय की कमी होने के कारण जवाब नहीं दे पाया हूं। मैं यह आश्वासन देता हूं कि पर्सनली एक-एक सांसद को पूरा जवाब उनके घर तक पहुंचाऊंगा। लोग कहते हैं कि पिछले पांच साल में माहौल कैसे बदला है? अध्यक्ष महोदय, मैं इसी लाईन के साथ अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहूंगा कि -

"नजरें बदलीं तो नजारे बदल गए,
कश्ती का रुख बदला तो किनारे बदल गए।"

(इति)

माननीय अध्यक्ष: युवा मामले और खेल मंत्रालय से संबंधित अनुदान की मांग पर श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन, श्री एम.के. विष्णु प्रसाद और श्री कोडीकुन्नील सुरेश द्वारा अनेक कटौती प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं। मैं अब सभी कटौती प्रस्ताव सभा के मतदान हेतु रखूंगा।

कटौती प्रस्ताव मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।

माननीय अध्यक्ष: अब मैं युवा मामले और खेल मंत्रालय से संबंधित अनुदान की मांग को सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है :

"कि अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 2 में युवा मामले और खेल मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 100 के सामने दर्शाये गए मांग शीर्ष के संबंध में 31 मार्च, 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष में संदाय के दौरान होने वाले खर्चों की अदायगी करने हेतु अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 4 में दर्शायी गयी राजस्व लेखा तथा पूंजी लेखा संबंधी राशियों से अनधिक संबंधित राशियां भारत की संचित निधि में से राष्ट्रपति को दी जाएं। "

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ

कटौती प्रस्तावों के संबंध में घोषणा

1759 बजे

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, अवशिष्ट अनुदानों की मांगों के संबंध में अनेक कटौती प्रस्ताव परिचालित किए गए हैं। समयाभाव के कारण मैं सभी कटौती प्रस्तावों को प्रस्तुत किया हुआ मान रहा हूं।

माननीय सदस्यगण, जैसी कि परम्परा रही है, अब मैं सभी कटौती प्रस्ताव एक साथ सभा के मतदान के लिए रखूंगा।

*TEXT OF CUT MOTIONS

* Please see supplement.

(1800/KDS/SMN)

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Sir, I have one suggestion. If the Cut Motions are not taken up for voting separately, then the Demands for Grants, which have been selected, only should be taken up. Otherwise, it need not be taken.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप अच्छे विचारक हैं। मैं विचार करूंगा।

अब मैं उन सभी अवशिष्ट अनुदानों की मांगों के संबंध में प्रस्तुत किए हुए माने गए सभी कटौती प्रस्तावों को सभा के सामने मतदान के लिए रखूंगा।

कटौती प्रस्ताव मतदान के लिए रखे गए तथा अस्वीकृत हुए।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय श्री सौगत राय जी, लिस्ट ऑफ बिजनेस में है। आप विद्वान प्रोफेसर हैं। लिस्ट ऑफ बिजनेस में लिखा हुआ है, जब गिलोटिन हो, तब टाइम एक्सटेंड करने की आवश्यकता नहीं है।

अवशिष्ट अनुदानों की मांगों को सभा के समक्ष मतदान के लिए प्रस्तुत करना

1801 बजे

माननीय अध्यक्ष : अब मैं मंत्रालयों/विभागों से संबंधित अवशिष्ट अनुदानों की मांगों को सभा के समक्ष मतदान के लिए रखता हूँ:

प्रश्न यह है :

"कि अनुदानों की मांगों की सूची के स्तम्भ 2 में उल्लिखित मांग शीर्षों के संबंध में 31 मार्च, 2020 को समाप्त होने वाले वर्ष में संदाय के दौरान होने वाले खर्चों की अदायगी हेतु अनुदान की मांगों की सूची के स्तम्भ 4 में दर्शायी गयी राजस्व लेखा तथा पूंजी लेखा संबंधी राशियों से अनधिक संबंधित राशियां भारत की संचित निधि में से राष्ट्रपति को दी जाएं:"

(1) परमाणु ऊर्जा विभाग से संबंधित मांग संख्या 3
(2) आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा तथा होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 4
(3) रसायन और उर्वरक मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 5 से 7
(4) नागर विमानन मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 8
(5) कोयला मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 9
(6) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 10 और 11
(7) संचार मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 12 और 13
(8) उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 14 और 15
(9) कारपोरेट कार्य मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 16
(10) संस्कृति मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 17
(11) रक्षा मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 18 से 21
(12) पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 22
(13) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 23
(14) इलैक्ट्रोनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 24
(15) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 25
(16) विदेश मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 26
(17) वित्त मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 27 से 34, 37 और 38
(18) मत्स्य पालन, पशुपालन और डेरी मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 39 और 40

(19) खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 41

(20) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 42 और 43

(21) भारी उद्योग और सरकारी उद्यम मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 44 और 45

(22) गृह मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 46 से 55

(23) आवास और शहरी कार्य मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 56

(1805/MM/MMN)

(24) मानव संसाधन विकास मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 57 और 58

(25) सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 59

(26) जल शक्ति मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 60 और 61

(27) श्रम और रोजगार मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 62

(28) विधि और न्याय मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 63 और 64

(29) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 66

(30) खान मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 67

(31) अल्पसंख्यक मामले मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 68

(32) नवीन तथा नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 69

(33) पंचायती राज मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 70

(34) संसदीय कार्य मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 71

(35) कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 72

(36) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 74

(37) योजना मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 75

(38) विद्युत मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 76

(39) लोक सभा से संबंधित मांग संख्या 78

(40) राज्य सभा से संबंधित मांग संख्या 79

(41) उप-राष्ट्रपति का सचिवालय से संबंधित मांग संख्या 80

(42) विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 86 से 88

(43) पोत परिवहन मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 89

(44) कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 90

(45) सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 91 और 92

(46) अंतरिक्ष विभाग से संबंधित मांग संख्या 93

(47) सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 94

(48) इस्पात मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 95

(49) कपड़ा मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 96

(50) पर्यटन मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 97

(51) जनजातीय कार्य मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 98

(52) महिला और बाल विकास मंत्रालय से संबंधित मांग संख्या 99

<u>प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।</u>

APPROPRIATION (NO.2) BILL

1808 hours

HON. SPEAKER: Now, Item No. 26, hon. Minister.

THE MINISTER OF FINANCE AND MINISTER OF CORPORATE AFFAIRS (SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN): I beg to move for leave to introduce a Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 2019-20.

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न यह है :

> "कि वित्तीय वर्ष 2019-20 की सेवाओं के लिए भारत की संचित निधि में से कतिपय राशियों के संदाय और विनियोग को प्राधिकृत करने के लिए विधेयक पुर:स्थापित करने की अनुमति दी जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: I introduce the Bill.

HON. SPEAKER: Now, Item No. 27, hon. Minister to move that the Bill be taken up for consideration.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: I beg to move:

> "That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 2019-20, be taken into consideration."

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न यह है :

> "कि वित्तीय वर्ष 2019-20 की सेवाओं के लिए भारत की संचित निधि में से कतिपय राशियों के संदाय और विनियोग को प्राधिकृत करने के लिए विधेयक पर विचार किया जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

(1810/SJN/VR)

माननीय अध्यक्ष : अब सभा विधेयक पर खंडवार विचार करेगी।

खंड 2 से 4

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न यह है :

"कि खंड 2 से 4 विधेयक का अंग बने।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।
खंड 2 से 4 विधेयक में जोड़ दिए गए।
अनुसूची 1 को विधेयक में जोड़ा गया।
खण्ड 1, अधिनियमन सूत्र और नाम विधेयक में जोड़ दिए गए।

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी प्रस्ताव करें कि विधेयक को पारित किया जाए।

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: Sir, I beg to move:

"That the Bill be passed."

माननीय अध्यक्ष : प्रश्न यह है :

"कि विधेयक को पारित किया जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

माननीय अध्यक्ष : सभा की कार्यवाही गुरुवार, दिनांक 18 जुलाई, 2019 को सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

1811 बजे

तत्पश्चात लोक सभा गुरुवार, 18 जुलाई, 2019 / 27 आषाढ़,1941 (शक) के
ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।